

पल्लवी प्रकाशन

जेतए ने जाए कवि
ओतए जाए अनुभवी

Compilation by

डॉ. उमेश मण्डल

जेतए ने जाए कवि ओतए जाए अनुभवी : डॉ. उमेश मण्डल

पल्लवी प्रकाशन

जेतए ने जाए कवि ओतए जाए अनुभवी

(जगदीश प्रसाद मण्डलक विचारोत्तेजक गद्यांश)

जेतए ने जाए कवि ओतए जाए अनुभवी

(जगदीश प्रसाद मण्डलक विचारोत्तेजक गद्यांश)

सङ्कलन एवम् सम्पादन

डॉ. उमेश मण्डल



पल्लवी प्रकाशन

बेरमा/निर्मली

JATAY NE JAAY KAVI OTAY JAAY ANUBHAVEE

Compilation by Dr. Umesh Mandal of Select Thoughtful passage of Shri. Jagdish Prasad Mandal
This edition is being published by Pallavi Parkashan

पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल. नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 6200635563; 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल) बिहार : 847452
फोण्ट सोर्स : https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts

दाम : 200/- (भा.रू.)

पहिल संस्करण : 2022

ISBN : 978-93-93135-26-1

पोथीक मादे

प्रकृतिक लीला अद्भुत अछि। जेतेक पेड़-पौधा, जीव-जन्तु, कीट-पतंग इत्यादि प्रकृति प्रदत्त जे अछि, ओकरा जखन धियानसँ देखै छी तँ अद्भुत बुझिये पड़ैए। सबहक अपन-अपन जीवन, अपन-अपन क्रिया, अपन-अपन गुण, अपन-अपन सोभाव अछि। चाहे ओ पेड़-पौधा हुअए कि जीव-जन्तु आकि कीट-पतंग आदि-इत्यादि। मनुक्ख सेहो ओहीमे सँ एक अछि। मनुक्खो एक प्राणी छी। जे सभसँ भिन्न अछि। मनुक्ख विवेकशील प्राणी अछि। मनुक्खेमे ओ गुण अछि जे सबहक माने सभकथुक अध्ययन आ मनन सेहो करैत रहल अछि। मनुक्खमे सेहो रंग-बिरंगक चालि-प्रकृति देखल जाइत अछि। आ से ओहिना जहिना पेड़-पौधाक बीच अछि। प्राय: पेड़-पौधा जे फड़ैए ओ पहिने फुलाइए। माने फूलक पछाइत फल लगैए। मुदा एहनो पौधा तँ अछिए जे पहिने फड़बे करैए पछाइत फुलाइए, जेना मकइ। आ ओहनो अछिए जे फड़बे करैए आ फुलाइत अछिए ने कहियो। जेना गुल्लैड़। तहिना कटहरक गाछमे फूल-फड़क बीच कोनो मिलाने ने देखबै, माने फूल (मोछी) केतौ आ फल केतौ। तैसंग बहुतो एहेन पौधा अछि जे पहिने फुलाकऽ फुलहैर जाइए पछाइत फड़ैए। फड़ैयोमे विविधता अछि। बहुतो चीज मात्र एक सिजिन भरि फड़ैए, बाँकी समय ओहिना रहैए। आ बहुतो पौधा सालो भरि फड़ैए, माने नियमित (निरन्तर) फुलेबो करैए आ फड़बो करैए। जेकरा बरहमसिया कहै छिऐ।

मनुक्खक आन क्रियामे जेहेन एकरूपता बुझि पड़ए मुदा साहित्य सृजन कार्यमे से किन्नहु नहि देखबामे अबैत अछि। खासकऽ लेखनमे निरन्तरताक अभाव प्राय: रचनाकारमे देखाइत अछि। हमरा सबहक बीच ओहनो रचनाकार भेला जे जहियासँ साहित्य लिखब शुरू केलैन आ जहिया धरि लिखि सकला

आकि लिखि रहला अछि, तैबीच हुनक लेखनी नित्य-नियमित आ निरन्तर चलैत रहलैन अछि। मुदा ओ अत्यल्प अछि। हँ, ओहन रचनाकार खूब छैथ जनिक लेखनी दूइए-चारि सालमे टाल लगा देलकैन, सङ्कलित-सम्पादित लगाकऽ, आ दू साल, चारि सालसँ लऽ कऽ दस-दस, बीस-बीस साल धरि एक्को पृष्ठ नहि लिखि सकलैन। लिखबाक क्षमता आ लेखनीमे निरन्तरता, दुनू दू चीज अछि। मैथिली साहित्य लेखन क्षेत्रमे ओहन-ओहन रचनाकारक चरचा अछि जे भरि दिनमे 80 पृष्ठ लिखि लइ छला। हम ई नहि कहै छी जे जखन एक दिनमे अस्सी पृष्ठ लिखि लइ छला, तखन साले भरिमे जेतेक भेल, ओइ हिसाबे बीस-बीस, चालीस-चालीस सालक जे लेखन अवधि रहलैन, ओ केते भेल? आ जेते भेल ओ की भेल? मानि लेलौं जे बड़का भुमकम आकि सतासीक बाढ़िमे भाँसि गेल। मुदा आब तँ ओहन बाढ़ियो नहियेँ अबैए आ जँ भविष्यमे ऐबो करत तँ ऐ आकासी समयमे लिखलाहाकेँ मेटाइयो नहियेँ सकत। केतेको आदरणीय रचनाकारक विषयमे बाजएकालमे लोक बाजि दइ छै जे फल्लाँ साते दिनमे उपन्यास लिखि लैत रहैथ। ई भेल लेखन क्षमता। जखन आदरणीय केर लेखन अवधिकेँ आ हुनक रचना-संसारकेँ देखब तँ सहजे बुझबामे आबि जाएत जे क्षमताक हिसाबे हुनकामे निरन्तरताक अभाव रहैन। निरन्तर लिखब बेस दूरुह कार्य अछि। आ से ओहिना जहिना सिजिन भरि फड़ैबला आ बरहमसिया फड़ैबला पेड़-पौधामे जे अन्तर होइत अछि।

आबक ओ समय अछि जे किनकहु क्रिया, कृति झाँपल नहि रहि सकैए। सबहक सोझमे आसानीसँ आबिए जाएत। ‘आबि जाएत’ माने जँ आनए चाहता तखन। ओना, आनब-आनबमे सेहो अन्तर अछि। विज्ञापनक दृष्टिसँ सेहो आनल जाइए आ अपन कार्य-कृतिक परिचयक खियालसँ सेहो आनल जाइए। तैसंग आब ईहो भेबे कएल अछि जे लोक हिसाब जोड़ि अपनो दिससँ बुझि जाइए, माने खाली सुनलेहेटा केँ नहि मानैए, अपनो दिससँ सोचैए, विचारैए। सोचब, विचारब आ विचारिकऽ बाजबक प्रवृतिक लेल समय अनुकूल भेल अछि। पूर्वमे औझुका जकाँ खुलापन नहि रहने केतेको तरहक समस्या छल। तेतबे नहि, आब जहिना काजकेँ तहिना काज करैबलाकेँ सेहो फरिछाकऽ बुझब आ बुझिकऽ अपन विचार अधिक-सँ-अधिक लोक लग पहुँचाएब सहज

भेल अछि। “वनगमनक अवधिमे राम सीता (पत्नी) लेल बिरहेवेटा नहि केलाह जे रावणक लंकाकेँ सेहो मेटा देलैन, मुदा लक्ष्मण स्वेच्छासँ पत्नीसँ अलग रहि वनयात्रा केलैन। तँए दुनूक भावनामे अन्तर नइ छेलैन, सेहो केना नहि कहल जाएत।”[1] अर्थात् कार्य-भावनाकेँ सेहो लोक फरिछाकऽ बुझिकऽ विचारए लगला अछि। खाएर जे से...।

‘जेतए ने जाए कवि ओतए जाए अनुभवी’ शीर्षक मध्य प्रस्तुत गद्यांश संग्रह अपनेक हाथमे दैत प्रसन्नता स्वभाविक अछि। प्रसन्नता अहू-दुआरे जे उक्त विधामे ई अपन पाँचिम सङ्कलन भेल। पहिल- ‘हेण्डबुकसँ फेसबुक धरि’, दोसर- ‘समस्यासँ समाधान धरि’, तेसर- ‘निर्विकल्प’, चारिम- ‘अभ्यन्तर’ आ पाँचिम जे ‘जेतए ने जाए कवि ओतए जाए अनुभवी’।

श्री जगदीश प्रसाद मण्डल 2000 इस्वीक पछाइत लेखन क्षेत्रमे एला। दू-तीन वर्ष अभ्यासोमे लागल हेतैन। प्राय: 2003 इस्वीक पछाइत हुनक लेखनी चलए लगलैन। जे कि आइ धरि निरन्तर चलि रहलैन अछि। केहेन निरन्तरता से हुनक रचना-संसारकेँ देखि बुझल जा सकैए। 2021 इस्वीमे हुनका ‘पंगु’ उपन्यास लेल साहित्य अकादेमी पुरस्कार देल गेलैन। जखन कि हुनक शताधिक पोथी प्रकाशित भऽ चुकल छेलैन। हम ई नहि कहै छी जे साहित्य अकादेमी पुरस्कार लेल साएसँ अधिक पोथी केर रचना करए पड़ैत अछि। जँ से रहैत तखन 24 भाषामे जे एक-एक रचनाकारकेँ देल जाइए, सबहक संग ओहिना होइत। वर्ष 2021क साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ पुरस्कृत कएल गेलैन जँ ओइ सूचीकेँ देखब ओहनो रचनाकारकेँ देखबे करबैन जनिक मात्र पाँच गोट पोथी प्रकाशित छैन। गणनाक हिसाबे बहुसंख्य रचनाकारक कृति एक-आध-दू दर्जनक मध्य छैन। असमियामे श्रीमती अनुराधा शर्मा पुजारीक 26 गोट पोथी छैन, नेपालीमे श्री छविलाल उपाध्यायक 30 गोट कृति छैन, कन्नड़मे श्री डि.एस. नागभूषणक 40, मलयालम्-मे श्री जोर्ज् केर 49 कृति प्रकाशित छैन आ मैथिलीमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक शताधिक पोथी प्रकाशित छैन।

सबहक रचना-संसारकेँ जँ निरन्तरताक खियालसँ देखब तँ श्री

---

[1] *नब बनक नब फल, कथा संग्रह,* <u>*जगदीश प्रसाद मण्डल, पृ- 73*</u>

मण्डलजीक लेखनीक निरन्तरता सभसँ फराक ओ श्रेष्ठ बुझना जाएत। हिनक पहिल रचना औपन्यासिक कृति 'मौलाइल गाछक फूल' छिऐन जे 2004 ईस्वीमे लिखला। 2008 इस्वी धरिक अवधिमे पाँच गोट उपन्यास, एक नाटक तथा किछु कथादि लिखि चुकल छला। मुदा कोनहुँ पत्र-पत्रिकादिमे एक्को गोट रचना प्रकाशित नहि भेल रहैन। तथापि हिनक कलम, लिखबाक क्रम जारी रहलैन- प्रस्तुत अछि ऐ प्रसंगमे हुनकहि लिखल बात- "मौलाइल गाछक फूल 2004 ईस्वीमे लिखल पहिल उपन्यास छी। अखन धरि पाँचटा उपन्यास आ किछु कथा, लघुकथा, नाटक सभ अछि। छपबैक जे मजबूरी बहुतो रचनाकारकेँ छैन से हमरो रहल। मुदा तइसँ लिखैक क्रम नै टुटल। 'भैंटक लावा' कथा सेहो दू-हजार चारिक पहिल कथा छी।"[2]

8 नवम्बर 2008 मे मिथिलाक प्रसिद्ध 'सगर राति दीप जरय'क 64म कथागोष्ठी डॉ. अशोक अविचलक संयोजकत्वमे हुनक गाम- रहुआ संग्राम (मधेपुर)मे आयोजित भेल छल जइमे जगदीश प्रसाद मण्डलजी उपस्थित भऽ 'भैंटक लावा' कथा केर पाठ केलैन। साहित्य क्षेत्रमे मण्डलजीक ओ पहिल मञ्च छेलैन। ओना, साहित्य लेखन क्षेत्रमे अबैसँ पूर्व माने 2000 इस्वीसँ मण्डलजीक क्रिया-कलाप एक समर्पित समाजसेवीक रहल छैन। तँए ओ केतेको बेर राजनीतिक मञ्चपर बाजि चुकल छला। पहिने बेरमा पंचायत आ रहुआ संग्राम, दुनू मधेपुर ब्लौकक अन्तर्गत पड़ै छल। जे कि जगदीश प्रसाद मण्डलजीक कर्म क्षेत्र रहल छैन। तँए, रहुआ गाममे सेहो मञ्च साझा कऽ चुकल छला।

2008 इस्वीसँ पूर्व जगदीश प्रसाद मण्डलजीक एक्को गोट रचना सार्वजनिक नहि भेल छेलैन। कोनहुँ पत्र-पत्रिकादिमे प्रकाशित नहि भेल छेलैन। पहिल रचना 'घर बाहर- पटना'सँ प्रकाशित भेलैन। जइ कथाक पाठ रहुआ संग्राममे केने छला, खूब प्रशंसा भेल छेलैन। ऐ प्रसंग मण्डलजीक वानगी निम्नांकित अछि-

"डॉ. रामानन्द झा 'रमण'जी ओ कथा मांगि लेलैन। किछुए मासक उपरान्त 'घर बाहर' पत्रिकामे प्रकाशित केलैन। सिद्ध पुरुषक स्थानमे प्रतिष्ठा

---

[2] *जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा वायोग्राफी, पल्लवी प्रकाशन, गजेन्द्र ठाकुर, पृ.- 09*

भेटल। डायरी-कलम भेटल। गमछा-पाग भेटल। लक्ष्मीनाथ गोसाँइक मुर्ति सेहो भेटल।”[3]

घर-बाहरमे एक आर रचना (कथा) प्रकाशित भेलैन। पछाइत ‘मिथिला दर्शन- कोलकाता’मे ‘चुनवाली’ नामक कथा प्रकाशित भेलैन। चुनवाली, भैंटक लावा आ बिसाँढ़, कथा प्रकाशित होइते ‘विदेह’क सम्पादक श्री गजेन्द्र ठाकुरजीसँ सम्पर्क भेलैन। तेकर बाद मण्डलजीक रचना सभ पुस्तकाकार रूपमे प्रकाशित हुअ लगलैन।

ऐ तरहेँ जगदीश प्रसाद मण्डलजीक आगमन मैथिली साहित्यक दुनियाँमे होइ छैन। बिनु पाइक अर्थात् बिनु खर्चेक पोथी प्रकाशन मैथिली साहित्यमे नव उदाहरण छल। जगदीश प्रसाद मण्डलजीक 27 गोट पोथी एकसंग श्रुति प्रकाशन, दिल्लीसँ प्रकाशित भेलैन। वर्तमानमे ओही तरहेँ पोथीसभक प्रकाशन पल्लवी प्रकाशन, निर्मलीसँ भऽ रहलैन अछि।

प्रस्तुत अछि मण्डलजीक रचना संसार- 1. इन्द्रधनुषी अकास, 2. राति-दिन, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता, 5. गीतांजलि, 6. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 7. सतबेध, 8. चुनौती, 9. रहसा चौरी, 10. कामधेनु, 11. मन मथन, 12. अकास गंगा - कविता संग्रह। 13. पंचवटी- एकांकी संचयन। 14. मिथिलाक बेटी, 15. कम्प्रोमाइज, 16. झमेलिया बिआह, 17. रत्नाकर डकैत, 18. स्वयंवर- नाटक। 19. मौलाइल गाछक फूल, 20. उत्थान-पतन, 21. जिनगीक जीत, 22. जीवन-मरण, 23. जीवन संघर्ष, 24. नै धाड़ैए, 25. बड़की बहिन, 26. भादवक आठ अन्हार, 27. सधवा-विधवा, 28. ठूठ गाछ, 29. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 30. लहसन, 31. पंगु, 32. आमक गाछी, 33. सुचिता, 34. मोड़पर, 35. संकल्प, 36. अन्तिम क्षण, 37. कुण्ठा- उपन्यास। 38. पयस्विनी- प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना। 39. कल्याणी, 40. सतमाए, 41. समझौता, 42. तामक तमघैल, 43. बीरांगना- एकांकी। 44. तरेगन, 45. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 46. शंभुदास, 47. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 48. गामक जिनगी, 49. अर्द्धांगिनी, 50.

---

[3] *मौलाइल गाछक फूल, जगदीश प्रसाद मण्डल, पल्लवी प्रकाशन, पृ.- 10*

सतभैंया पोखैर, 51. गामक शकल-सूरत, 52. अपन मन अपन धन, 53. समरथाइक भूत, 54. अप्पन-बीरान, 55. बाल गोपाल, 56. भकमोड़, 57. उलबा चाउर, 58. पतझाड़, 59. गढ़ैनगर हाथ, 60. लजबिजी, 61. उकड़ू समय, 62. मधुमाछी, 63. पसेनाक धरम, 64. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 65. फलहार, 66. खसैत गाछ, 67. एगच्छा आमक गाछ, 68. शुभचिन्तक, 69. गाछपर सँ खसला, 70. डभियाएल गाम, 71. गुलेती दास, 72. मुड़ियाएल घर, 73. बीरांगना, 74. स्मृति शेष, 75. बेटीक पैरुख, 76. क्रान्तियोग, 77. त्रिकालदर्शी, 78. पैंतीस साल पछुआ गेलौं, 79. दोहरी हाक, 80. सुभिमानी जिनगी, 81. देखल दिन, 82. गपक पियाहुल लोक, 83. दिवालीक दीप, 84. अप्पन गाम, 85. खिलतोड़ भूमि, 86. चितवनक शिकार, 87. चौरस खेतक चौरस उपज, 88. समयसँ पहिने चेत किसान, 89. भौक, 90. गामक आशा टुटि गेल, 91. पसेनाक मोल, 92. कृषियोग, 93. हारल चेहरा जीतल रूप, 94. रहै जोकर परिवार, 95. कर्ताक रंग कर्मक संग, 96. गामक सूरत बदैल गेल, 97. अन्तिम परीक्षा, 98. घरक खर्च, 99. नीक ठकान ठकेलौं, 100. जीवनक कर्म जीवनक मर्म, 101. संचरण, 102. भरि मन काज, 103. आएल आशा चलि गेल, 104. जीवन दान 105. अप्पन साती, 106. साहित्यकारक विवेक लघु कथा संग्रह।

श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक निरन्तर लेखनसँ बहुतो ओहन मान्यता अछि जे स्वत: निरस्त भेल जा रहल अछि। मनुक्खक जीवनमे होइत निरन्तर-परिवर्तनकेँ मण्डलजी सिद्धहस्त अनुभवी जकाँ रेखाङ्कित करैत रहला अछि। नीक-बेजाकेँ बिलगेबाक लेल ओ सदैव सुन्दर प्रयासमे लागल रहै छैथ। हुनक प्रत्येक रचनामे ई खास गुण रहैत अछि जइमे पाठक सहजतासँ बान्हा जाइ छैथ। व्यक्तिगत जीवनक बीच नीक-बेजाएक दर्शन करबैत सहजतासँ अपन पाठककेँ ओइठाम लऽ कऽ चलि जाइ छैथ जैठाम मनुक्ख रहैत तँ अछि सदिखन मुदा अनभिज्ञ जकाँ। अपन लगक चीजकेँ नहि देखि पबैत अछि। समाजमे एहेन बहुत व्यवहार अछि जे रूढ़ रहितो नीक जकाँ चलि रहल अछि। जेकर परिचय ओ दर्शन अपन रचनामे मण्डलजी साकारात्मक ढंगसँ पूर्ण मानवीयताक संग इमानदारीसँ निरन्तर करबैत रहला अछि। 'जहाँ न जाए रवि

वहाँ जाए कवि' हम एतबए सुनैत रही, मुदा जगदीश प्रसाद मण्डल कहै छैथ- 'जेतए नइ जाए रवि ओतए जाए कवि आ जेतए ने जाए कवि ओतए जाए अनुभवी।' यएह ओ स्थान छी जैठामसँ हम प्रस्तुत सङ्कलनक नामकरण 'जेतए ने जाए कवि ओतए जाए अनुभवी' राखल।

प्रस्तुत पोथीक लोकार्पण 31 दिसम्बर 2022क शनि दिन होबए जा रहल अछि। 'सगर राति दीप जरय'क आगामी कथा गोष्ठी, रहुआ संग्राम (मधेपुर)मे डॉ. अशोक कुमार झा 'अविचल'जीक संयोजकत्वमे होबए जा रहल अछि। जैठाम अनेको पोथीक लोकार्पण होएत। अपन जे कोनो रचना लोकार्पित भेल ओ प्राय: 'सगर राति दीप जरय'क मञ्चपर।

'रहुआ गाम' आ 'सगर राति दीप जरय कथा गोष्ठी', ई दुनू हमरा लेल बेस महत्व रखैत अछि। 'सगर राति दीप जरय'क 64म आयोजन रहुआ गाममे 8 नवम्बर 2008 इस्वीक शनि दिन डॉ. अशोक कुमार झा 'अविचल'जीक संयोजकत्वमे आयोजित छल। कोनो साहित्यिक मञ्चपर ओ हमर पहिल उपस्थिति छल। 'अविचल'जीक संयोजकत्वमे डॉ. शिवशंकर 'श्रीनिवास' ओ डॉ. रामानन्द झा 'रमण'जीक अध्यक्षतामे ओ गोष्ठी ओयोजित छल जेकर उद्धघाटन केने छला प्रसिद्ध रचनाकार स्व. उग्रनारायण मिश्र 'कनक', बहुत पैघ-पैघ विद्वज्जन, रचनाकार सभकेँ ओइठाम एकसंग देखने रहिऐन। ओतए पाग-दोपटाक संग लक्ष्मीनाथ गोसाँइ केर एकगोट दिव्य मूर्ति सेहो प्राप्त भेल छल। सगर राति दीप जरय तँ अपने-आपमे अद्भुत मञ्च अछिए। ओइ दिनसँ आइ धरिक प्रत्येक सगर राति दीप जरय- कथागोष्ठीमे भाग लैत रहलौं अछि। साइते कोनो आयोजन छुटल होएत। ओना, उक्त गोष्ठीक कएक खेपक संयोजन करबाक अवसरि सेहो अपना प्राप्त भेल अछि। संयोगसँ 2008 इस्वीक बाद आगामी आयोजन पुन: ओहीठाम माने रहुआ संग्राम (मधेपुर)मे होबए जा रहल अछि।

'सगर राति दीप जरय' एक ओहन मञ्च अछि जे सर्वहारा साहित्यिक-मञ्चक रूपमे प्रसिद्ध अछि। 'सगर राति दीप जरय' भरि राति चलैबला कथा गोष्ठीक नाओं छी। प्रसिद्ध साहित्यकार स्व. प्रभाष कुमार चौधरीक संयोजकत्व आ स्व. रमानन्द रेणुक अध्यक्षतामे ऐ मञ्चपर पहिल गोष्ठीक आयोजन,

1990 इस्वीमे 21 जनवरीक शनि दिन मुजफ्फरपुरमे भेल छल।

'सगर राति दीप जरय' कथा-साहित्य गोष्ठीक आयोजन प्रत्येक तीन मासपर होइत आबि रहल अछि। भरि राति चलैबला ऐ गोष्ठीक आरम्भ पोथी लोकार्पणसँ होइत अछि। पछाइत कथा पाठ आ समीक्षाक सत्र चलैत रहैत अछि। रचनाकार अपन नूतन कथाक पाठ करै छैथ आ तैपर समीक्षक लोकैन त्वरित टिप्पणी करै छथिन। जइसँ अनेको चीज लेखक-सँ-पाठक धरिक नजैरपर अबै छैन। एकसंग केतेको रंगक कथा माने केतेको विषय-वस्तुक संग आकार-प्रकारक रचना सभक सोझसँ गुजरैत अछि। तैपर विश्लेषण करबाक अवसरि सेहो भेटैत अछि। सभसँ बेसी लाभ कथाकारकेँ होइ छैन। नीक-बेजाक अनेको चीजसँ भेँट होइ छैन जइसँ हुनका कथा लिखैमे काज दइ छैन। तेतबे नहि, ऐ बहन्ने कथाकारकेँ नियमित रूपेँ कथा सेहो लिखा जाइ छैन। एकर अलाबे आरो केतेको लाभ एक-दोसरकेँ होइत अछि। मैथिली साहित्यमे यएह ओ मञ्च अछि जैपर अनेको श्रोता/पाठक लोकनिक बीच कथाकार ओ समीक्षक आमने-सामने होइ छैथ। तेतबे नहि, श्रोता/पाठककेँ सेहो टिप्पणी करबाक अवसरि देल जाइ छैन। जे पठित कथाक संग भेल समीक्षापर सेहो बाजि सकै छैथ। ऐ तरहक प्रतिआलोचनाक अवसरि भरिसक आन कोनो भाषा-साहित्यक बीच तँ नहि कहब, मुदा मैथिली साहित्यमे ई अद्वितीय मञ्च अछिए। देखबामे नहि औत। कथाकारक लेल ऐ मञ्चकेँ वर्कशॉप सेहो कहल जाइत अछि।

राति भरिक ऐ आयोजनसँ केतेको नवांकुर कथाकार सभ धीरे-धीरे नीक-सँ-नीक कथा लिखए लगै छैथ। परिणामत: ओ नीक कथाकारक रूपमे जानल-मानल जाइ छैथ। ऐठाम एक बात महत्वपूर्ण अछि। ओ ई जे नीक कथाकारक माने प्रिय कथाकार मात्र नहि, सर्वजनप्रिय विषय-वस्तुक संग सरोकार रखनिहार कथाकारसँ अछि। मुदा ऐ लेल मनसा वाचा कर्मणामे एक-सहतपनक खगता होइत अछि। जइसँ व्यक्तिमे नियमितता अबैत अछि। सगर राति दीप जरय नामक ऐ कथा गोष्ठीमे नियमित सहभागिता लेल ई अनिवार्य भऽ जाइत अछि।

भिनसरमे ऐगला आयोजनक निर्धारण सेहो भऽ जाइत अछि। अर्थात्

ऐगला कथागोष्ठी केतए होएत, माने किनक संयोजकत्वमे, से सर्वसम्मतिसँ ओहीठाम निर्धारित भऽ जाइत अछि।

'जेतए ने जाए कवि ओतए जाए अनुभवी' अर्थात् श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक रचित रचना संसारसँ विचारोत्तेजक गद्यांशक सङ्कलन।

जगदीश प्रसाद मण्डलजीक लेखनी 'आजुक जीवन आजुक साहित्य'केँ प्रमाणित करैत समयक संग धाराप्रवाह चलैत जा रहल छैन, बढ़ैत जा रहल छैन। जनिका सम्बन्धमे स्थापित ओ वरीय साहित्यकार श्री मन्त्रेश्वर झा (आई.ए.एस.) लिखने छैथ- "जइ गाम घरक कथा सभ मण्डलजी उठाए ओकरा परिणति तक पहुँचओने छथि तइ गाम घरक एतेक सूक्ष्म आ विस्तृत विवरण मैथिली साहित्यमे एहिसँ पूर्व कमे भेल अछि।"

क्रमश: जगदीश प्रसाद मण्डलजीक विषयमे हिनक 'जिनगीक जीत' उपन्यासक आमुखमे मैथिलीक सुप्रसिद्ध आलोचक डॉ. तारानंद 'वियोगी' लिखलैन- "जगदीश प्रसाद मण्डलजीक साहित्यमे मिथिलाक ग्रामीण समाजक अद्भुत चित्र आएल अछि। मैथिलीमे एहि वस्तुक खगता सभ दिनसँ रहल अछि। हमरा लोकनि अक्सरहां चिन्तित होइत रहै छी जे गाम उजरि रहल अछि, गामक सम्बन्धमे जतबे जे किछु लेखन भऽ रहल अछि से निगेटिभ फोर्ससँ भरल अछि, अधिकाधिक हताश करऽ बला अछि। हमरा लगैत अछि जे जीवनकेँ देखबाक जे दृष्टिकोण जगदीशजीक छनि से आम मैथिली साहित्यकारक दृष्टिकोणसँ फराक छनि तेँ ओ एहन चित्र रचि पबैत छथि जे सामान्यसँ हटि कऽ अछि।"

अहिना मैथिली साहित्यक प्रसिद्ध रचनाकार ओ आलोचक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र सेहो हिनका-दे माने श्री जगदीश प्रसाद मण्डल-दे लिखलैन अछि- "एहेन रचना अगर मैथिली साहित्यमे लगातार हो आ ऐ तरहक रचनाक प्रचार-प्रसार नीकसँ कुनो जाति-पाति, वर्ग, सम्प्रदाय, स्थानीयता आदिक दुर्भावनासँ दूर भऽ कएल जाए तँ मैथिली साहित्य महिमा-मण्डित भऽ एक गौरवशाली परम्पराकेँ प्रारम्भ कऽ सकैत अछि।"

कोनो रचनाक मूल्याङ्कन समय करैत अछि। समयानुकूल रचना छी वा

नहि, ई समय आँकि बुझल जा सकैए। मुदा से आंकएबला सबहक काज छिऐन। अपने एकटा अदना आदमी छी, ई किनकोसँ छुपल अछि, सेहो बात नहियेँ अछि। हँ, तखन शोध कार्यसँ सम्बन्धित जे अपना ऊपर जिम्मा अछि तइमे जखन जेना जे कए पेबाक बल पबै छी ओ करबाक चेष्टा जरूर करैत रहल छी।

जगदीश प्रसाद मण्डलजी अपन रचनाकेँ अपना धारणानुकूल ओहन मूर्त्तरूपमे गढ़ए चाहि रहला अछि जे भूत, वर्तमान ओ भविष्य- तीनू समयमे अपन रूप बना ठाढ़ रहए। कोनौं समस्याक जड़ि वर्तमान रहितो ओ भूत बनि जाइए, तँए भूतोकेँ पकैड़ राखए पड़त, वर्तमान तँ सहजहि प्रत्यक्ष अछिए जे सामाजिक धारा शुद्ध-अशुद्ध करैत चलिते अछि, जैपर भविष्यक भवन ठाढ़ होइत अछि। ओना, मण्डलजीक सोच ईहो छैन जे जिनगी नम्हरो होइए माने महीनो-वर्षबला होइए आ एकदिना सेहो होइत अछि। एकदिना जिनगी भेल एक घटनाक जीवन। ओना, एहेन-एहेन घटना जिनगीक बीच चलिते रहैए, किएक तँ ओहन घटना फेर जीवनमे दोहरा कऽ अबितो अछि आ नहियोँ अबैए। एहेन जे जीवन अछि ओहो ने जीवने भेल। मण्डलजी मूलत: जीवनक रचनाकार छैथ। ओ बेकतीगत जीवनसँ आगू बढ़ि सामाजिक जीवनकेँ विशेष महत्व दैत रहला अछि, तँए हिनक सभ रचना सामाजिक रूप धारण केने रहै छैन।

उपरोक्त सन्दर्भमे ‘विदेह’ प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिकाक सम्पादक ओ प्रसिद्ध साहित्यकार श्री गजेन्द्र ठाकुरक कहब सेहो विचारणीय ओ युक्तिसंगत बुझि पड़त जे निम्नवत अछि-

“जगदीश प्रसाद मण्डलक कथ्यमे नोकरी आ पलायनक विरूद्ध पारम्परिक आजीविकाक गौरव महिमा मण्डित भेटैत अछि। आ से प्रभावकारी होइत अछि हिनकर कथ्य आ कर्मक प्रति समान दृष्टिकोणक कारणसँ आ से अछि हिनकर बेकतीगत आ सामाजिक जीवनक श्रेष्ठताक कारणसँ। जे सोचै छी, जे करै छी; सएह लिखै छी तइ कारणसँ।”

श्री गजेन्द्र ठाकुर 2012 इस्वीमे जगदीश प्रसाद मण्डलजीक

वायोग्राफी लिखि चुकल छैथ। अत: ओ जहिना मण्डलजीक जीवन-शिल्प उपरोक्त वानगीमे प्रस्तुत केलैन तहिना हुनक रचना-शिल्पक सम्बन्धमे कहलैन अछि-

"यात्री आ धूमकेतु सन उपन्यासकार आ कुमार पवन आ धूमकेतु सन कथा-शिल्पीक अछैत मैथिली भाषा जनसामान्यसँ दूर रहल। मैथिली भाषाक आरोह-अवरोह मिथिलाक बाहरक लोककेँ सेहो आकर्षित करैत रहल आ ओइ भाषाक आरोह-अवरोहमे समाज-संस्कृति-भाषासँ देखौल जगदीशजीक सरोकारी साहित्य मिथिलाक सामाजिके क्षेत्रटामे नहि वरन आर्थिक क्षेत्रमे सेहो क्रान्ति आनत।"

ओना तँ बहुत विद्वान-मनीषी लोकनिक कलम मण्डलजीपर चलल छैन, सम्प्रति सबहक जिक्र लेल यथोचित अवकाश नहि। तथापि जहिना प्रसिद्धि पाओल विद्वज्जन छैथ तहिना एकान्तवासमे संघर्षरत रचनाकार मण्डलजी नहि छैथ सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। अत: एकैसम शताब्दीक पहिल दशकक श्रेष्ठ कविक रूपमे चर्चित श्री राजदेव मण्डल जे कि एकांकी, नाटक, कविता, कथा, पटकथा, उपन्यासादि साहित्यक सभ मौलिक विधामे हिनक कलम चलैत रहलैन अछि, जगदीश प्रसाद मण्डलक 'उत्थान-पतन' उपन्यासक आमुख लिखबाक क्रममे लिखलैन अछि- "केहनो अकर्मण्य बेकती जँ पूर्ण मनोयोगक संग आर्थिक उन्नतिमे दत्तचित भऽ जाए तँ हुनक प्रगति होएब निश्चित भऽ जाइत अछि। ऐ दर्शनकेँ देखेबाक प्रयत्न लेखक (जगदीश प्रसाद मण्डल) पात्र श्यामानन्द द्वारा केलैन अछि। परिवर्तनशीलता संसारक निअम छी। सामन्तवादसँ पूँजीवाद आ पूँजीवादक गर्भेसँ समाजवादक जन्म सेहो होइत अछि। ई अलग बात जे पूँजीवादसँ साम्राज्यवाद सेहो पनपैत अछि।"

उपरोक्त वानगी सदृश एक आर वानगी जज साहैबक उद्धृत करब आवश्यक बुझै छी। जज साहैबक माने श्री रबीन्द्र नारायण मिश्र, जे मैथिली साहित्यमे अपन बेछप स्थान बना चुकल छैथ। कथा, कविता, उपन्यास, संस्मरण, यात्रा वृतान्त, शोध आलेख आदि अनेको विधामे नियमित लिखएबला साहित्यकार छैथ। ओ अपन ब्लॉग 'भोरसँ साँझ धरि'मे जगदीश प्रसाद मण्डलजीक 'लहसन' उपन्यासक समीक्षा करैत लिखने छैथ- "श्री

जगदीश प्रसाद मण्डलक 'लहसन' उपन्यासकेँ पढ़लासँ पाठक थोड़बे कालमे समाजक निम्नतम पौदानपर ठाढ़ लोकक जिनगीक बारेमे बहुत किछु बुझि सकैत छथि। किछु एहन करबाक प्रेरणा प्राप्त कए सकैत छथि जाहिसँ मेवालाल सन-सन गरीब लोकसभकेँ गाम छोड़ि कलकत्ता सन महानगर पलायन नहि करय पड़नि। एहिसँ प्रेरणा लए समाजक समृद्ध लोकनि किछु करथि जाहिसँ गाम-घरसँ पलायन बन्द होअए आ गाम एकबेर फेर पल्लवित-पुष्पित भए जाए।"

प्रत्येक मनुक्खक अपन-अपन स्थिति-परिस्थिति होइते अछि। अपनो किछु तेनाहे सन अछि जइ कारणेँ भरि दिन पानिमे रहैत नहाइक सोभाग्यसँ बञ्चित रहए पड़ैए। मुदा जँ अन्तिमो समयमे, माने पानिसँ निकलैयोकाल अर्थात् जहिना मलाह भरि दिनक काजसँ निचेन भऽ, पोखैरसँ निकैल जखन अपन घर जाइ छैथ, तखनो जँ मनमे आबि जानि- जा.! नहेलौं कहाँ.? आ नहाइक जएह सुविधा-साधन, स्थिति-परिस्थिति रहए, जँ तहूमे नहा ली तँ कोन अधला। यएह चीज मनमे आएल आ लागि गेलौं काजमे। समयक आँट-पेटकेँ देखैत पुन: विचारोत्तेजक गद्यांश सङ्कलनकेँ प्रकाशित करबैक विचार तँइ केलौं। सोशल मिडियापर माने फेसबुकपर सम्बन्धित काज प्राय: नित्य-नूतन किछु-ने-किछु करिते रहै छी, ओही सभकेँ समेटि एकटा सङ्कलित रूपमे 'जेतए ने जाए कवि ओतए जाए अनुभवी' लऽ कऽ उपस्थित भेलौं अछि। बिसवास अछि प्रोत्साहित करबे करब। संगहि सुधि पाठकीय प्रतिक्रियाक आशमे 'इतिश्री'क उच्चारण करैत सम्बन्धित गद्यकारक प्रति सादर आभार व्यक्त करैत अपन बातमे विराम लगा रहल छी। धन्यवाद.! प्रणाम.!!

जय मैथिली.! जय साहित्य.!! आजुक जीवन आजुक साहित्य!!

- उमेश मण्डल

तुलसी भवन, निर्मली (सुपौल)

19 दिसम्बर 2022

परिचय : उमेश मण्डल

जन्म : 31 दिसम्बर 1980, बेरमा, जिला- मधुबनी (बिहार), माता-पिता : श्रीमती रामसखी देवी, श्री जगदीश प्रसाद मण्डल, पत्नी : श्रीमती पूनम मण्डल, सन्तान: पल्लवी मण्डल, तुलसी कुमारी, मानव अनीश मण्डल, शिक्षा : प्रारम्भिक शिक्षा ग्रामीण माहौलमे। बी.ए. (प्रतिष्ठा) 2001 इस्वीमे, एल. एन. जनता कॉलेज- झंझारपुर (मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा) सँ, एम.ए. 2012 इस्वीमे आ राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (NET) 2015 इस्वीमे तथा शोध–पीएच.डी.–'मैथिली साहित्यमे जगदीश प्रसाद मण्डलक रचनामे परिवर्तनक स्वर', 2021 इस्वीमे, बी.आर. अम्बेदकर बिहार विश्व विद्यालय- मुजफ्फरपुरसँ।

प्रकाशित कृति : (1) निश्तुकी (पद्य संग्रह, 2009), (2) संस्कार गीत (मिथिलाक सभ जाति-धर्मक लोकमे प्रयुक्त मैथिली लोकगीतक सङ्कलन, 2010)। (3) 'मिथिलाक जीव-जन्तु', (4) 'मिथिलाक वनस्पति' आ (5) 'मिथिलाक जिनगी' (डिजिटल सचित्र ऑनलाइन संस्करण, 2011)। (6) विदेह मैथिली लघुकथा संग्रह, (7) विदेह मैथिली बीहनि कथा संग्रह, (8) विदेह मैथिली पद्य संग्रह, (9) विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध समालोचना, (10) विदेह मैथिली नाट्य उत्सव तथा (11) विदेह मैथिली शिशु उत्सव (संग सम्पादन कार्य, 2012 इस्वीमे)। (12) टुटैत मनक जुड़ाव (कथा संग्रह, 2018), (13) पंचदेव (100 खण्ड-ग्रन्थ, श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक बीछल कथाक सङ्कलन, 2018), (14) भारतीय मुसलमान आ भारतीयता (हिन्दीसँ मैथिलीमे अनुवाद, 2018, मूल लेखक- श्री गीतेश शर्मा), (15) दुध-पानि फराक-फराक (कथा-पाण्डुलिपि-छाया-संस्करण, 2018), (16) देवाश्रम (35 खण्ड-ग्रन्थ, विचारोत्तेजक पाम्फलेट सङ्कलन, 2019), (17) मुक्तपुरुष (शोध आलेखक संग्रह, 2021)। (18) हेन्डबुक सँ फेसबुक धरि, (19) समस्या

सँ समाधान धरि, (20) निर्विकल्प, (21) अभ्यन्तर आ (22) जेतए ने जाए कवि ओतए जाए अनुभवी (विचारोत्तेजक गद्यांश सङ्कलन, क्रमश: 2021-2022 इस्वी), (23) जगदीश प्रसाद मण्डलक काव्य संसार (अनुसन्धान विश्लेषण, 2022)।

संस्थापक : पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल), योगदान : प्रसिद्ध साहित्यकार श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक 09 दर्जन पोथीक मुद्रण एवम प्रकाशनक अलावे अनेको अन्य रचनाकारक सात दर्जनसँ ऊपर ग्रन्थक अक्षर संयोजन अवैतनिक। 'सगर राति दीप जरय'क 80म, 88म, 100म (शतांक) आ 107म गोष्ठीक संयोजनक अलावे दर्जनो परिचर्चा-संगोष्ठीक आयोजन। ठाम-ठाम दर्जनो मैथिली पोथी-प्रदर्शनी।

सम्मान/पुरस्कार : (1) विदेह युवा पुरस्कार (2013 इस्वीमे, निश्तुकी पद्य संग्रह लेल), (2) सहयोग पुरस्कार (2021 इस्वीमे, शकुन्तला-भुवनेश्वरी मैथिली-संस्कृत सम्वर्द्धन न्यास- हैदरावादसँ) तथा (3) लोकचिन्तन विशिष्ठ सेवा सम्मान- 2022

स्थायी पता : ग्राम+पोस्ट- बेरमा, वार्ड नं.: 03,भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी, बिहार- 847410, सम्प्रति: तुलसी भवन, जे. एल. नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल, बिहार- 847452

प्रकृतिसँ मनुक्ख एहनो तँ बनियेँ सकै छैथ
आ बनबो केबे कएल छैथ आ बनियोँ तँ रहले छैथ
जे अप्पन देहक प्रकृति मनकेँ सारथी बना सार्थ भऽ
रथपर सवार भऽ जीवनक रणभूमिमे आगू बढ़ै छैथ।
एते तँ मानि बुझि लिअ पड़त ने जे धरतीपर सभसँ
श्रेष्ठ ब्रह्माक वरदान कहियौ कि परसाद,
अपने सभ छिऐ। छिऐ।

स्पष्ट रूपेँ देखै छी जे मासक शुरूआत पूर्णिमासँ माने ओहन चन्द्रसँ होइए जे पूर्णरूपेँण अन्हारकेँ पकैड़ अपन प्रकाशसँ प्रकाशित केने रहैए आ दोसर दिनसँ माने पूर्णिमाक अन्त भेला पछातियेसँ माने सूर्योदय होइते, चन्द्रप्रभा प्रकाश अनहारे जकाँ अन्हारमे विलीन हुअ लगैए आ किछु समयक पछाइत अप्पन रेह तक मेटा अन्हार भऽ जाइए। शरीरक प्रकृति अंश रूपमे रहितो तेना विलीन भेल रहैए तँए ओकरा पकड़ैमे कनेक बाधा उपस्थित होइते अछि। खाएर जे अछि, एते तँ स्पष्ट अछिए जे जहिना रहीम कहने छैथ जे 'खैर, ख़ून, खाँसी, खुशी, बैर, प्रीति, मदपान। रहिमन दाबे ना दबैं, जानत सकल जहान॥' कहलैन तँ ठीके मुदा पूर्ण आ अंशमे अन्तर रहने अन्तर तँ हेबे करत। मनुक्खक प्रकृतिक सम्बन्धमे रहीम कहलैन, मुदा शरीरक भीतर जे मन अछि, ओकरामे तँ एहेन गुण छइहे जे बाजत किछु आ करत किछु। ओना, एहनो गुण तँ अछिए जे ओहनो शरीरक मन अछि जे विचारक लगाम पकैड़ सारथी बनि रणभूमिमे कुदैत अछि।

महाभारतक पात्रमे माने योद्धामे जहिना कृष्ण ज्ञान रूपमे अछि, अज्ञान रूपमे अर्जुन अछि तहिना दुख रूपमे दुर्योधन सेहो अछिए। ऐठाम एकटा प्रश्न अछि जे 'ओ योद्धा के अछि?' धरतीपर जेतेक देहधारी जीव अछि ओ सभ योद्धा अछि। जँ से नहि तँ जीवन जेतबे टा रहौ, मुदा योद्धा बनि जँ लड़ैत नहि चलैत तखन ओतबो दिन जीवित केना रहैत। एकर माने ई नइ बुझब जे खाइत-पीबैत सुतैत-

उठैत जे जीवन बीतल ओ फूसि-फासिमे चलि गेल आ जे संघर्षक संग चलल माने युद्ध करैत चलल ओ योद्धा भेल।

धरतीपर, जहिना आन-आन जीव-जन्तु प्रकृतिमे पलल अबैए तहिना मनुक्खो अबैए। जे मासक अनहरिया पक्ष जकाँ आन्हार रहैए, मुदा देहधारी जीवक शक्ति नेने तँ अबिते अछि, जे आन-आन जीवमे नइ अछि वा अछियो तँ थोड़-थाड़ रूपमे अछि। जखन कि ओ मनुक्खमे विराट शक्तिक अंश रूपमे रहैए। जहिना अमावसिया सन घोर अन्हार जे काजरोसँ बेसी कारी होइए, तहूमे पातर-छीतर रेगहा जकाँ परीवक चान तँ अपन रूप स्पष्ट देखैबते अछि। अन्हारसँ दाबल भलेँ किए ने रहैए मुदा परीव (शुक्ल पक्षक) सँ दुतिया, तृतीया होइत ओ पूर्णिमाक चान तँ बनियेँ जाइए। भलेँ जहिना अन्हारसँ इजोत बनि चान पुन: अन्हारक बाट पकैड़ परीव, दुतिया, तृतीया होइत कोयला सन कारी अमावसियाक अन्हार सेहो भइये जाइए।

मनुक्ख आ प्रकृतिमे ऐठाम अन्तर अछि। अन्तर ई अछि जे, जे गुणवान-शीलवान मनुक्ख बनि गेला ओ जँ अप्पन संकल्प शक्तिकेँ भावशक्तिसँ जोड़ि दृढ़शक्ति बना लैथ तँ जीवनक अन्त भलेँ भऽ जाइन मुदा जानक संग प्राण ताधैर रहतैन जाधैर पृथ्वी आ एक पैरपर ठाढ़ भेल ध्रुव अछियो आ रहबो करत।

प्रकृतिसँ मनुक्ख एहनो तँ बनियेँ सकै छैथ आ बनबो केबे कएल छैथ आ बनियोँ तँ रहले छैथ जे अप्पन देहक प्रकृति मनकेँ सारथी बना सार्थ भऽ रथपर सवार भऽ जीवनक रणभूमिमे आगू बढ़ै छैथ। एते तँ मानि बुझि लिअ पड़त ने जे धरतीपर सभसँ श्रेष्ठ ब्रह्माक वरदान कहियौ कि परसाद, अपने सभ छिऐ।

❑ साभार: अनहरिया, जगदीश प्रसाद मण्डल, 12 दिसम्बर 2022

उचित-अनुचितक विचार बेकता-बेकती सेहो नीक-अधला अछिए जे बहुत किछु समाजक लेल उपयोगियो अछिए मुदा सत्तासँ जुड़ल समाजक बीच बेवधान भइये जाइए। कारणोँ अछि। कारण अछि जे बोल-भरोससँ माने गप-सप्पक क्रममे तँ सत्ता सबहक छीहे। मुदा सत्ता आ समाजक बीच जे सम्बन्ध अछि ओ पूर्ण नहि, खण्डित अछि।

पचहत्तैर-अस्सी बर्खक अवस्थाक बीचमे, अधमलाल आ सधमलालकेँ हृदयक मिलान माने छाती लगा मिलब, सार्वजनिक स्थानपर समाजक बीच भेल। दुनूक अपनो नेत्र-नजैर देखलकैन आ समाजक सेहो।

बीसम शताब्दीक सातम दशकमे दुनूक पहिल भेँट भेल छेलैन। अप्पन गताती-ऐठामसँ अधमलाल अपना गाम पएरे जाइ छला। रस्ताक बगलेमे सधमलालक दरबज्जा छैन। दरबज्जेक आगूमे सधमलाल बाँसक फट्ठाक मचान बैसै-उठैले बनौने छैथ। संयोग बनल सधमलाल मचानेपर बैसल रहैथ कि तहीकाल अधमलाल रस्तासँ गुजरैत रहैथ कि दुनू आमने-सामने भेला। जइसँ मनक दबाएल विचार एकाएक प्रस्फुटित भऽ गेलैन। एक-दोसर मुस्कुराइत, जीवनक पहिल आशाक रूपमे, कुशल-क्षेम केलैन। एकठाम बैस करीब आधा घन्टा धरि जीवनक गप-सप्प दुनूक बीचमे भेल। दुनू कौलेजक विद्यार्थी।

अखन तक जे सामाजिक परिवेश छल, ओ आजुक अपेक्षा दोसर तरहक छल। आजादीक आन्दोलनमे देशक जन-गण, स्वतंत्र जिनगीक कामना करैत अप्पन जान-प्राण न्योछावर करैले तैयार भेला, बहुत करबो केलैन, ई सोचि कऽ जे ऐगला पीढ़ी स्वतंत्र जिनगीक साँस लेत, स्वतंत्र जीवन व्यतीत करत। 1967 इस्वीक पछाइत, माने देश स्वतंत्र भेला पछाइत, अप्पन देश बुझि सभ अप्पन-अप्पन जीवनकेँ स्वतंत्र रूपमे क्रियान्वित केलैन। ओना, देशक बीच देशसँ बँटल दोसर देशक झगड़ा देशमे लधाइये गेल मुदा ओ जनमानसक जवाबदेहीक नहि जनमानसक विचारसँ चुनल सत्ताक जवाबदेहीक छलो आ अछियो। गाम-गाममे गोटि-पङरा समाजक सेवा करैबला लोक छैथ। तैबीच सइयो रंगक रस्तो आ

विचारधारो पसरले अछि। विचारधाराक माने भेल जे गाममे अखनो जँ साँप कटैए, तँ तंत्र-मंत्रक नाओंपर झाड़-फूक करैत लोकक जान लइये रहल अछि। ओना, चौथाइ प्रतिशत लोक झाड़-फूकसँ हटि डॉक्टरी इलाज दिस सेहो बढ़िये रहला अछि आ झाड़-फूक केनिहार सेहो अपना विचारमे संशोधन कइये लेलैन अछि जे सँपकटियाकेँ कहै छैथ- ‘झाड़ो-फूक कराबह आ एकबेर डॉक्टरोसँ देखा लएह।’ यएह तँ छी समाजक जाल।

शिक्षाक क्षेत्रमे ओहन परिवेश छेलैहे जे किछु जातिमे, अखन तक जे जाति-विभाजित समाज अछि तइ अनुकूल, पढ़ल-लिखल लोकक संख्या बेसी छल आ बेसी जाति ओहने छल जइमे थोड़-थाड़ शिक्षाक अलख जगल छल आ अधिकांश अन्हारेमे छला। जाति-जातिक बीच जे पढ़ल-लिखल सभ छला ओ अपनामे एहेन हिसाब जरूर जोड़ै छला जे अपना जातिमे फल्लाँ गाममे एकटा इंजीनियर भेला अछि ते फल्लाँ गाममे एकटा डॉक्टर।

सत्तासँ जुड़ल लोकक बीच जातीय उन्माद छेलैन्हे। जइसँ अराजक स्थिति समाजमे छेलैहे। जातिक संगठनक बलेँ एम.एल.ए.-ए.पी.क हार-जीत भेने जातिक दब-दबा सत्तासँ समाज धरि छेलैहे। 1967 इस्वीक चुनावमे सत्ता दलक संग विरोधी दलक सामूहिक संगठनक बीच राजनीतिक दलक पहचान बनल। मुदा सामाजिक रूपमे कोनो तेहेन बदलावक रूप नइ निखरल। हँ, एते सत्ता परिवर्तन जरूर भेल जे अधिकांश जातिक एम.एल.ए; एम.पी. सेहो भेला। बिहारमे संयुक्त सरकार बनल। संयुक्त सरकारमे तैंतीस सूत्री कार्यक्रम तय भेल आ ओकर प्रभाव जीवनक हर क्षेत्रपर पड़ल।

अधमलाल आ सधमलालक गामक दूरी करीब पच्चीस किलोमीटरक छैन। गप-सप्पक क्रममे दुनूक बीच सम्बन्ध बनल रहबे केलैन मुदा बेवहारिक सम्बन्ध नहि बनि पेलैन। ऐठाम एकटा आरो प्रश्न अछि। ओ अछि गप-सप्पक सम्बन्ध आ विचारक सम्बन्ध। विचारक सम्बन्ध विचारधारासँ जुड़ल रहैए आ गप-सप्पक सम्बन्ध से नइ छी। ओना, उचित-अनुचितक विचार बेकता-बेकती सेहो नीक-अधला अछिए जे बहुत किछु समाजक लेल उपयोगियो अछिए मुदा सत्तासँ जुड़ल समाजक बीच बेवधान भइये जाइए। कारणोँ अछि। कारण अछि जे बोल-भरोससँ माने गप-सप्पक क्रममे तँ सत्ता सबहक छीहे। मुदा सत्ता आ समाजक बीच जे सम्बन्ध अछि ओ पूर्ण नहि, खण्डित अछि।

❑ साभार: अन्तिम भेँट, जगदीश प्रसाद मण्डल, 08 दिसम्बर 2022

जीवनक मझधारमे दुनूक बीच, माने अधमोलालक परिवारक आ सधमोलालक परिवारक बीच, पारिवारिक सम्बन्ध सेहो स्थापित भेल। मुदा दुनू परिवारक बीच जे वैचारिक धारा अछि तेकर विपरीत पारिवारिक सम्बन्ध स्थापित भेल। ओना, अप्पन समाजक जे धारा अछि ओइ अनुकूल तँ लोक बन्हाएले अछि जे बेटा-बेटीक बिआह आ माए-बापक श्राद्धक भोज जातिये समाजमे चलैए।

कौलेज छोड़ला पछाइत अधमलाल कौलेजक शिक्षक भेला आ सधमलाल समाजसँ प्रभावित भेने अप्पन स्वतंत्र जिनगीक निर्माणक दिशामे बढ़ला। ओना, ऊपरसँ माने हल्लुक नजरिये देखब तँ दुनू जीवनेक निर्माण छी, मुदा दुनूमे ओहन अन्तर अछिए जेहेन गीताक अध्ययनसँ प्राप्त होइए। माने ई जे गीता पढ़ैसँ पहिने ई देखि लिअ पड़त जे गीताक ज्ञान कृष्ण अर्जुनकेँ कखन देलैन। ओ देलैन जीवनक रणभूमिमे। तँए अपनाकेँ जखन ओइ भूमिपर ठाढ़ करब, तखन गीताक जे ज्ञानक वास्तविक रस अछि से भेटत। मुदा जँ दुपहर वा रातिमे सुतैकाल नीन नइ अबैत हुअए तखन जँ नीन आनैले गीताक पन्ना उनटाएब तइ ज्ञानक बीच अन्तर नइ होइए सेहो केना नइ कहल जाएत। खाएर ई तँ भेल गीताक विचारधारा बुझब, मुदा जीवनोक तँ अप्पन-अप्पन गीता सबहक अछिए, तइ अनुकूल कहै छी।

जीवनक मझधारमे दुनूक बीच, माने अधमोलालक परिवारक आ सधमोलालक परिवारक बीच, पारिवारिक सम्बन्ध सेहो स्थापित भेल। मुदा दुनू परिवारक बीच जे वैचारिक धारा अछि तेकर विपरीत पारिवारिक सम्बन्ध स्थापित भेल। ओना, अप्पन समाजक जे धारा अछि ओइ अनुकूल तँ लोक बन्हाएले अछि जे बेटा-बेटीक बिआह आ माए-बापक श्राद्धक भोज जातिये समाजमे चलैए।

अधमलाल आ सधमलालक परिवारक बीच सम्बन्ध स्थापित भेलो पछाइत, जीवन दर्शनक सम्बन्धमे कमी रहबे कएल, जइसँ जीवनक जे मधुर रस भेटक चाही, से नहि भेटि सकलैन। ओना, दुनू एक्के विषयक विद्यार्थी छैथ, ओ थिक साहित्य, मुदा जीवनमे साहित्य केतए नुकाएल अछि, तइमे दुनूक दृष्टिमे अन्तर अछिए। अखन तक अधमलाल साहित्यक शिक्षक कौलेज स्तर तकक रूपमे मानल जाइये रहल छैथ, आ सधमलालक किसानी जीवन साहित्यकेँ झाँपि देलकैन। जइसँ सामान्यजन सँ विशिष्ठजन धरि किसानेक रूपमे सधमलालकेँ जानियोँ रहला अछि आ देखबो तँ करिते छैथ।

जीवनक उत्तरार्द्धमे सधमलाल जीवन दर्शनकेँ अप्पन साहित्यक आधार बना रचना (साहित्य सृजन) दिस उन्मुख भेला। जहिना ज्वालामुखी पहाड़ तीन अवस्थामे, सुषुप्ति, जागृत आ मृत्यु–सुतल, जागल आ मरल–अवस्थामे रहैए, मुदा सुषुप्ति जखन जगैए तखन सुषुप्ति नहि जागृत भऽ जाइए, तहिना सधमलालकेँ सेहो भेलैन। अखन तकक साहित्यिक दर्शन जे सधमलालक छेलैन ओ रचनाक माध्यमसँ प्रवाहित हुअ लगलैन, तइसँ समाजक जीवनमे उथल-पुथल शुरू भइये गेल अछि। ..जेना-जेना साहित्य आ समाजक नव भावक संग विचारक आवाहन सधमलालकेँ भऽ रहलैन अछि, तेना-तेना तही अनुपातमे विरोधो भऽ रहलैन अछि आ समर्थनो तँ भइये रहलैन अछि।

जहिना नीलाकाशमे लाखो रंगक ज्योतिपुंज उल्का, ग्रह आदि सेहो गतिशील देखि पड़ैत अछि तहिना अधमलालकेँ नीलवर्गीय आकाशमे प्रवाहित होइत भवधारक ज्योतिपुंज सेहो गतिशील भइये रहल छैन। ओना, अखनो सधमलालक मनमे अधमलाल वएह छला जेना विश्वामित्रक संगमे राम-लक्ष्मण रहैथ। एकर माने ई नइ बुझब जे वनगमनक अवधिमे राम सीता (पत्नी) लेल बिरहेवेटा नहि केलाह जे रावणक लंकाकेँ सेहो मेटा देलैन, मुदा लक्ष्मण स्वेच्छासँ पत्नीसँ अलग रहि वनयात्रा केलैन। तँए दुनूक भावनामे अन्तर नइ छेलैन, सेहो केना नहि कहल जाएत।

❑ **साभार: अन्तिम भेँट, जगदीश प्रसाद मण्डल, 08 दिसम्बर 2022**

जेना-जेना जीवनक जड़ि खोधैक बोध होइत जाइए तेना-तेना विधि-बेवहार सेहो सुधरैत-बदलैत बनैत जाइए आ समयानुसार विधि वैदिक पद्धति बनि जाइए।

अखन तक, विचारे मनमे उठि रहल छल जे अपन जे विभव अछि तइ अनुकूल सेवा जरूर करब। जइसँ मनक विचार ऐ निर्णयपर पहुँचल जे जाड़ मासक जे संकट अछि तेकर निवारणक जे उपाय अछि से करब। गाममे सभसँ ऊपर उमेरक सुधीर काका छैथ तँए ओम्हरेसँ विचारक कर्मकेँ हाथ लगबैक मन मानलक। मनोनुकूल सुधीर काका ऐठाम विदा भेलौं।

किछु दूर गेला पछाइत जखन आँखि आगू दिस तकलक कि बुझि पड़ल जे जहिना वृद्धक लेल जाड़ महाकाल छी तहिना तँ बच्चोक लेल छीहे। मुदा दुनूमे अकास-पतालक भेद अछिए। सुर्जक गरमी पेब जेते जल्दी बच्चा टनकैए तेते जल्दी वृद्ध थोड़े टनकै छैथ। तेकर कारण अछि जे वृद्ध शरीरक हाड़मे आन्तरिक बदलाउ आबि जाइए। जइसँ वृद्धक हाड़मे जाड़ गड़ैत-गड़ैत गड़बो करै छैन आ टनकैत-टनकैत टनकबो करै छैन, मुदा बच्चामे से नहि अछि, बच्चाक हाड़मे लगले गड़बो करैए आ टनकबो करैए। तैबीच अपने दरबज्जापर पहुँच देखलौं जे सुधीर काका चौकीपर बैसल किछु सोचि रहल छैथ। अपना विचारे सुधीर काका जे सोचैत होथि मुदा अपना बुझि पड़ल जे भरिसक अबैत जाड़ैक विषयमे सुधीर काका सोचि रहला अछि। मनमे ओहने धारा प्रवाहित भेल जेहेन पातरो-छीतर प्रवाहित होइत एक धारामे, दोसर पातरो धारा मिलि मोटगर वा गम्भीर बनैए। जइसँ मन हलैस उठल। कनी, फरिक्केसँ बजलौं- “गोड़ लगै छी काका, अपने बहुत दिन जीब।”

ऐठाम ‘बहुत दिन जीब’क माने असीरवाद नहि, शुभकामना बुझब। अपना ऐठाम ज्ञानी-अज्ञानी वृद्धोजन असीरवाद स्वरूप कहिते छैथ जे भगवान अहाँकेँ हजार बर्खक औरुदा दैथ।

ओना, बुझि पड़ल जे सुधीर कक्काक अप्पन मन कहि रहलैन अछि जँ अनके असीरवादे होइत तँ बच्चाकेँ छठियारे दिन दाइयो-माइ आ भड़ो-भाँट

असीरवाद दइते छैथ जे बच्चा महाज्ञानी बनत। मुदा आँखि उठा जखन देखै छिऐ तखन की बुझि पड़ैए, से तँ अपने बुझब। मुदा सुधीर काका अपन विचारकैँ अनुकूल बनबैत बजला- “देवन, इच्छा तँ अपनो सएह अछि मुदा दुनियाँ जीबए देत तखन ने।”

सुधीर कक्काक विचार सुनिते जहिना परीक्षा काल पहिल प्रश्नक उत्तर मनमे उठिते दोसर-तेसर प्रश्न पतरा जाइए, तहिना भेल। बजलौं- “काका, दुनियाँ अप्पन कर्मक मालिक छी, हम अपन कर्मक मालिक छी। जँ कियो रोकत तँ ओकरो रोकबे करब। जहिना दुनियाँ केकरो बन्हौट नइ मानैए तहिना ने हमहूँ-अहाँ छी।”

हमर विचार जेना सुधीर कक्काक मनमे धँसलैन तहिना गम्भीर होइत बजला- “देवन, अखन तक जीवनमे यएह ने बुझि पेलौं हेन जे केहेन सालक केहेन सामना हेबा चाही आ अपना केते सामना करैक साधन अछि।”

गड़ भेटल, बजलौं- “काका, गिनतीमे जेतेक सालक जाड़क अनुभव अहाँकैँ अछि, ओते हमरा थोड़े अछि?”

सुधीर काका बुझि गेला जे देवन दुखक जड़ि खोधि रहल अछि। जेना-जेना जीवनक जड़ि खोधैक बोध होइत जाइए तेना-तेना विधि-बेवहार सेहो सुधरैत-बदलैत बनैत जाइए आ समयानुसार विधि वैदिक पद्धति बनि जाइए। माने भेल जे कोनो काजक अन्तिम कलाकैँ पकैड़ लेब। जखन अन्तिम कला पकड़मे अबैए तखन जीवन फुलोसँ हल्लुक आ सुगन्धित सेहो बनिते अछि। सुधीर काका अपन सभ विचारकैँ मनमे सेरियाकऽ तहियबैत बजला- “केमहर-केमहर चललह, देवन?”

ऐठाम केमहर-केमहरक माने कोन काजे।

बजलौं- “काका, मनमे भेल जे जहिना दीन-हीनक सेवा अदौसँ धर्मक विचारमे प्रवाहित होइत आएल अछि, जे धर्मसँ ऊपर परम धर्म छीहे, तहिना अपनो किछु करी।”

❑ **साभार: जड़ौर, जगदीश प्रसाद मण्डल, 15 नवम्बर 2022**

मिथिला-भूमि अखनो वएह भूमि अछि जे परिवार नियोजन सन सरकारक योजनाकेँ कोनो मोजरे ने दइए, आ अप्पन जनसंख्याक बढ़वारिकेँ बे-लगाम घोड़ा जकाँ छोड़ि देने अछि।

जहिना दिन-राति संग मिलि बारहो घन्टा संग रहि चौबीसो घन्टाक बारहो मौसमक बीच बसन्त गीत गबैत अछि तहिना अस्सी बर्खक रूपचन काका रूपौली गाममे, जे मध्य मिथिलाक बीचक गाम छी दिन-रातिक समय बितबै छैथ। बाढ़ि-रौदी, सुखार-दुखार आइये नहि, सभ दिनसँ अजन्मा सन आने गाम जकाँ रूपौलीमे सेहो रहबे कएल अछि। भुमकम, ठनका ई तँ कहियोकाल होइए, तँए बिसरबो नीक नहियेँ हएत मुदा अनिवार्य रूपमे नहियोँ मानल जा सकैए। 1934 इस्वीक जनवरी मासक तिलासकराँइतसँ एक दिन पूर्व, ओइ समयमे तँ भुमकमक नाप-नूप नहि छल, मुदा नोकसानक पैमाना तँ कएले जा सकैए। नेपालक काठमाण्डू, जे पहाड़क ऊपर बसल शहर छी, तेकरो छाती हिलेबे नइ तोड़बो केलक। तैसंग नेपालक तराईसँ लऽ कऽ बिहारक मुंगेर जिला तकक धरतीकेँ सेहो तेना हिलेलक जे घर-दुआर, गाछ-बिरीछ, जीव-जन्तु सभक अवघात भेल। ओहिना दोसर बेर भुमकम भेल 1988 इस्वीमे। ताधैर भुमकमक नाप-जोख आबि गेल छल। मुदा जहिना चौंतीस इस्वीक भुमकम तहिना अट्ठासी इस्वीक भुमकम जँ मानि लइ छी तँ औसतन पचास बर्खपर ओहन भुमकम हएब मानि लिअ। से मानि लिअ बितलाहा, माने भेलहामे, ऐगलाक कोनो गारंटी बेपारीक खलिया डिब्बा जकाँ नहियेँ देल जा सकैए। ई तँ भेल एक नम्बर भुमकक, तइसँ निच्चाँ नअ नम्बरक संख्या अछि। एक नम्बरसँ दोसर नम्बरक आक्रमण तीस हजार गुनाक अछि। खाएर, ओना ई भेल अपना ऐठामक भुमकमक घटना। एहेन-एहेन आफद-आसमानीकेँ मैथिल आ मैथिलानी मोजर कहिया देलैन जे अखनो देता कि देती।

अपना गतिये जहिना प्रकृति चलैए तहिना रूपौली गामो चलैए आ रूपौली गामक रूपचन काका सेहो चलिते छैथ। बाढ़िक इलाका छीहे। कहब जे धारे-धार बाढ़ि अबैए आ चलि जाइए से नहि, मिथिलांचलकेँ पहियाकऽ उत्तरसँ शुरू करैए आ दच्छिनमे गंगामे जा ठेका दइए। वएह गंगा ने जीवनक वैतरणी सेहो पार करै

छैथ। बुझले बात अछि जे सतासीक बाढ़िमे गंगासँ उत्तर झंझारपुर तकक पानिक एक लेभेल भऽ गेल रहइ। माने एकरंग जलो-दीप छल। ई तँ भेल बाढ़िक गति, मुदा तैसंग झाँट-बिहाड़ि सेहो अछिए। मौसमक हिसाबसँ भरि गरमी माने मार्चसँ नवम्बर तक दू रूपमे झाँट-बिहाड़ि अबैए। सुखारक समयमे सेहो आ बरसातक समयमे सेहो अबिते अछि। अप्पन रूपक ठेकान एकरो ने अछि, माने केते विराट रूपमे औत आकि साधारण रूपमे।

तँए कहब जे मैथिल ऐ सभसँ डेरा जेता से बात नहि अछि। मिथिला-भूमि अखनो वएह भूमि अछि जे परिवार नियोजन सन सरकारक योजनाकेँ कोनो मोजरे ने दइए, आ अप्पन जनसंख्याक बढ़वारिकेँ बे-लगाम घोड़ा जकाँ छोड़ि देने अछि। एकर माने ई नइ बुझब जे मिथिलांचल मनुक्खेक उपजा टाक भूमि छी। मिथिलाक भूमि जीवनक विचारक संग जीवन-निर्माणक भूमि सेहो छीहे। बुझल बात अछिए जे जेते मन बढ़त तेते ओझरी जिनगीमे सेहो बढ़बे करत।

खाएर जे अछि, अपना ऐठाम झाँट-बिहाड़ि मात्र समुद्रेटा सँ नहि, धरतीसँ सेहो पैदा लइए। चैत-बैशाखक सूर्जक तापसँ तपित भऽ धरती बिर्ड़ो-बिहाड़िक सृजन सेहो करैए। जेकर फलाफल मिथिलांचलकेँ ई भेटैत रहल जे गामक-गाम चैत-बैशाख आ जेठक आगिमे स्वाहा भऽ जाइ छल आ लोक गाछ-बिरीछक संग-रौद-तापमे मासो-मास जीवन-यापन करै छला। तहिना वरसातक समयमे सेहो झाँट-बिहाड़िक प्रकोप होइए, तइले सभकेँ बुझले अछि जे हथियाक झाँट केहेन होइत आबि रहल अछि, गाम-गामक घर-दुआर खसि पड़ै छल आ लोक झाँट-बिहाड़िमे खुलल असमानक बीच मासो-मास दिन गुदस करै छला, अखनो करै छैथ। यएह छी मिथिलाक साधना भूमि जे दुनियाँमे केतौ ने अछि। ने मिथिलांचल जकाँ उपजाऊ भूमि अछि आ ने मौसम। अन्नसँ लऽ कऽ तीमन-तरकारी, फल-फलहरीक जे बढ़वारि मिथिलांचलमे अछि ओ आनठाम नइ अछि। अपना ऐठाम जहिना अन्नक खेती बारहो मास होइए, तहिना तीमन-तरकारी, फल-फलहरीक सेहो अछि। बरहमसिया जहिना फल अछि तहिना फूल सेहो अछिए।

❑ **साभार: बुलन्दी, जगदीश प्रसाद मण्डल, 19 अगस्त 2022**

“गाममे रंग-रंगक वैष्णवजन छैथ, एक-दोसर लग ने बैस कऽ खेता आ ने बनौल खेता, तखन केना हेतइ?” कमला काकीक बात सुनि सुवल काका मने-मन विचारए लगला। विचारए ई लगला जे समाजमे एहेन प्रश्न तँ अछिए। मुदा लगले मनमे उठलैन जे जँ एहेन अछि तँ एहनो तँ ऐछे जे एक सामूहिक रूपमे आ दोसर खण्ड रूपमे बेकतीगत सेहो अछिए।

“बौआ, गाममे दू रंगक लोक अछि। भनडाराकेँ लोक वैष्णव भोजन मानैए। बिल्कुल शाकाहारी। तँए समाजमे जेते वैष्णव छैथ ओतेककेँ भनडारा कऽ लैह। आ पुतोहुजनीक जे मन छैन जे अपन लूरिक परीक्षा दिऐ, तँ शाकाहारीसँ मांशाहारी धरिक भोज परसू कऽ लेब।”

कमला काकीक विचारकेँ मणिका दहलाइत देखि बजली-

“माए, पानिमे माँछ आ नअ-नअ कुटिया बखरा, अनेरे करै छैथ। आइ जइ काजक दिन छी पहिने तेकरा सम्हारि लोथु। अखन औझुका काजक ने विचार करती।”

मणिकाक विचारसँ कमला काकीक मनमे मिसियो भरि दुख नै भेलैन। बजली-

“देखहक, एक पंथक लोक दोसर पंथक ने छुबल खाइए आ ने एक पाँतिमे बैस बातो-विचार करैए, तँए असथिरसँ विचार करए पड़तह जे एको गोरे गाममे छुटैथ नहि।”

कमला काकीक विचार सुनि चारू गोरे, दुनू भैंयाँ आ दुनू दियादनियाँ अकबका गेल। अकबका ई गेल जे जखन सभ वैष्णवे भेला तखन एक-दोसरमे बारा-बारी किए अछि? मुदा प्रश्न ई तँ नै जे किए अछि, प्रश्न तँ ई भेल जे समाजमे एहेन अछिए। जहिना लोक जाति-पाँतिमे बँटल अछि, तहिना ने पंथो-पंथाइ तँ बँटले अछि। तखन की करब? ने कमला काकीकेँ जवाब फुरैन जे काजकेँ सुतिया

आगू बढ़ौती आ ने दुनू भैंयेकेँ।

ओना, किशोर दुनू परानी वेपारसँ जुड़ल अछि, गाम-समाजक बेवहारक बात नै जनैए तँए कोनो बात नहि। ओना, अछि दुनू परानी पढ़ल-लिखल मुदा जिनगीक काज बदलने जीवनोक किछु काज तँ छुटबे करै छै, से भेल। मुदा तइसँ कियो समाजक किरिया-कलाप वा रीति-नीतिसँ छुटकारा पाबि जाएत सेहो नहियेँ अछि। खाएर जे अछि, मुदा भैयारियोमे आ मतो-पिताक आगू तँ बच्चे भेल...।

पाँचो गोरेक बीच गुमा-गुमी पसैर गेल। गुमा-गुमी देखि किशोर नवीनकेँ कहलक-

“भैया, अहाँ शिक्षक छी पढ़ौनीक काज करै छी, तखन किए चुप छी?”

किशोरक बात सुनि नवीनकेँ तामस नै उठल। मने-मन किशोरक विचारकेँ गौर करए लगल। मुदा कोनो विचारकेँ निर्णय तक पहुँचबैमे दोहरी कारक अछि, पहिल बुझल आ दोसर बिनु बुझल। नवीनकेँ ने बुझल आ ने बुझैक दिशा-बोध, जइसँ किछु अनुमानो करैत। जहिना दिशा बोधबला दिशा पकैड़ डेग आगू बढ़बैत जाइए, मुदा बिनु दिशा बोधबला केमहर डेग बढ़ौत से बोधे ने रहै छै, जइसँ बेसी भोतियेबेक डर रहै छइ। नवीनोक मनमे सएह भेल, तँए परिवारमे दोखी बनैक डरसँ मोटा पटैक बाजल-

“जखन घरमे श्रेष्ठजन छैथ तखन कोनो नव काज करैसँ पहिने विचारि लेब नीक हएत। तँए बाबूकेँ पुछि लेब नीक हएत।”

पिताक नाओं सुनि कमला काकीक मनमे अपन बड़प्पनक बोध भेलैन, जइसँ ललौन गुलाब जकाँ चेहराक रंग बदललैन। मुदा बजली किछु ने। पतिक विचारकेँ पाछूसँ ठेलैत मणिका सासुकेँ कहलैन-

“एना मुँह चोरौने हेतैन? जाबे काजक विचार नीक जकाँ नै कऽ लेती, ताबे काजमे हाथ लगतैन?”

दू-दिसिया सोंगर जहिना घरकेँ सोझ करैए तहिना कमला काकीक मन सेहो सोझ भऽ गेलैन। बजली-

“ओहो, की कियो आन छैथ जे पुछैमे धरी-धोखा हएत, हमहीं बाजब मुदा सबहक रहब बेसी नीक हेतह।”

सुवल काकाकेँ कमला काकी पुछलखिन-

“गाममे रंग-रंगक वैष्णवजन छैथ, एक-दोसर लग ने बैस कऽ खेता आ ने बनौल खेता, तखन केना हेतइ?”

कमला काकीक बात सुनि सुवल काका मने-मन विचारए लगला। विचारए ई लगला जे समाजमे एहेन प्रश्न तँ अछिए। मुदा लगले मनमे उठलैन जे जँ एहेन अछि तँ एहनो तँ ऐछे जे एक सामूहिक रूपमे आ दोसर खण्ड रूपमे बेकतीगत सेहो अछिए। बेकतीगत रूपमे ई जे, एक मुरते, दू मुरते फुटा कऽ सेहो होइते अछि। पंथाइक झगड़ा जेतए छै तेतए रहौ, मुदा ऐठाम से तँ नै छी। घरवास छी, पथ-पथिक होथु आकि हेराएल-वौआएल बटोही होथु, सबहक आश्रयक आश्रम छी। तैसंग ईहो तँ छीहे जे समाजक बीच रहने समाजक सेहो छीहे। सोझराएल विचार मनमे ऐबते, बजला-

“दूध-माछक बाँतरक झगड़ा हौउ आकि सजमैन-कदीमाक भैंसुर-भावोक, हमरा ओइसँ कोन मतलब अछि। अपनेसँ जा कऽ सभकेँ दल दऽ अबियनु।”

❑ **साभार: घरवास, जगदीश प्रसाद मण्डल, 26 सितम्बर 2014**

मनमे भेल जे आगू नहि बढ़ि, हिरणीए दादीकेँ पुछिऐन जे भोरे-भोर सुतिकऽ उठि लोक भगवानक नाओं लइए आ अहाँ किए, मरै-उमेरमे आफन तोड़ै छी?

मुदा फेर अपने मन कहलक जे जँ घुमिकऽ जा किछु पुछिऐन आ खिशियाएल परक जवाब दैथ जे तोरा पंच मानै छियौ? अप्पन परिवारक बात छी, बुझा कऽ आकि बिगैड़-तमसाकऽ अपने ने सम्हारब।

तखन तँ अप्पन सन मुँह हेबे करत किने। मन तत्-मत् करिते छल जइसँ डेगो छोटे होइ छल। तैबीच तीन-चारि परिवारक घरसँ आगू बढ़ि गेल छेलौं। मनमे ईहो उठि रहल छल जे गाम-समाजमे अहिना लोक भरि दिन हल्ले-फसादमे समय बितबैए। फुसियो गपमे सात पुरुखाकेँ इनार-पोखैर जकाँ उराहि दइए। परिवारक गति-विधि की अछि तइ दिस नजैर जाइते ने छइ। ..असमनजसमे विचार केलौं जे जइ काजे निकलल छी से पहिने पुरा ली, पछाइत हिरणी दादीसँ भेँट करबैन। भेँट की करबैन, कहबैन जे दादी भोरे-भोर लोक भगवानक नाओं लइए, वृद्धजन दिनक पहिल पहरक काज बच्चा सभ लगसँ शुरू करै छैथ, आ अहाँ जँ पुतोहुकेँ गाड़िये-फज्झैतसँ जीवन यात्रा शुरू करबैन तखन तँ भरि दिनक यात्रा अनोने-बिसनोनमे चलि जेतैन, तखन ओ पुतोहु बनि सेवा कखन करती। जहिना कोनो प्रश्नक उत्तर विद्यार्थीकेँ परीक्षा भवनमे नहि भेटै छैन, जइसँ मन मसैक कऽ मर्माहत होइ छैन तहिना अपनो मनमे भेल। मर्माहत होइत गाम दिस तकलौं तँ बुझि पड़ल जे ठीके पूर्वजन कहने छैथ जे 'ऊपर चढ़ि-चढ़ि देखा, सभ घर एक्के लेखा।' हिरणीए दादी टाक पुतोहु एहेन बोलकहल छैन आकि आनो-आनक?

मने-मन सोचिये-विचारि रहल रही कि अपने सीमापर पहुँच गेलौं। सीमापर पहुँचब भेल जे जैठाम तक भोरे टहलैले जाइ छी। घुमलौं कि डेग नमहर हुअ लगल। माने ई जे जेबाकाल जेना रसे-रसे गेलौं तइ हिसाबसँ घुमतीकाल डेग नमहर भऽ गेल। मनक जिज्ञासाक प्रबलता दुआरे डेग नमहर हुअ लगल आकि समयक कटौती पुरबै दुआरे, से नहि बुझि पेलौं। होइतो अहिना छै जे जाबे मनमे

संकल्प नहि उठैए ताबे ओकर विकल्प की हएत। बुझिये ने पेब सकलौं जे केतेक समयमे घुमि कऽ हिरणी दादीक ऐठाम पहुँच गेलौं। जहिना कोनो तीर्थ-व्रत वा धामक डोरी मनमे लगैए जे ओइठाम पहुँचला पछातिये मनसँ उतरैए, तहिना भेल। मुख्य रस्तासँ सटले हिरणी दादीक आँगनक रस्ता छैन, जा कऽ डेढ़िया परक टाटक भूर देने आँगना दिस देखलौं तँ हिरणी दादीकैं पुतोहु लग बैस चाह पीबैत देखलयैन। मन भेल जे दरबज्जेपर सँ शोर पाड़िऐन, मुदा अपने मन रोकलक जे जँ शोर पाड़बैन आ कहैथ जे चाह पीबै छी, तोहुँ अँगने आबह, आ बनल चाह जँ नहि होनि तखन हमरे दुआरे ने हुनका दोहरा कऽ परेशानी बढ़तैन। तइसँ नीक ने जे जेते कालमे लोक चाह पीबैए तेते काल रस्तापर टहलिये-बुलि लेब नीक हएत। सएह केलौं। चाह पीब हिरणी दादी आँगनसँ निकैल जखने दरबज्जापर एली कि बजलौं-

“दादी, अहींसँ एकटा गप्पक काज अछि।”

गप्पक काज भेल वैचारिक। काज तँ दुनियाँमे बहुत अछि, मुदा गप्पोक काजक तँ अपन महत्व अछिए। जहिना सभसँ हल्लुक गप्पक काज अछि तहिना सभसँ भारियो तँ अछिए। आन काज जकाँ नहि ने अछि जे कनी-मनी भारियो रहल आ कनी-मनी हल्लुको रहल। ई तँ सोल्होअना हल्लुकसँ भारी बनैए आ भारीसँ हल्लुक। ..चाह पीलाक पछाइत जहिना सभक मन शान्त होइ छैन तहिना हिरणी दादीक मन सेहो शान्त रहबे करैन। बजली- “बौआ, आब हम कोन जोकरक रहलौं जे तोहर काज सम्हारि देबह.!”

हिरणी दादीक विचार कोनो भाँजेपर ने चढ़ल जे दादी बिनु कहनौं की बुझि गेली। कम कि बेसी सभ मनुक्ख आगमी होइते छैथ। कियो बेसी रहला तँ दुनियाँकैं बेसी देखलैन आ कियो कम रहला तँ कम देखलैन। भँजियबैत बजलौं-

“दादी, अहाँकैं तँ हम जहिना सभ दिन मानलौं तहिना अखनो मानै छी, तखन अहाँ किए एना बजलौं.?”

बजैक क्रममे बाजि गेलौं, मुदा अपने आगमी मन विचार देलक जे भऽ सकैए जे भोरुका तामसक जलन नीक जकाँ नहि मेटाएल होइन।

❑ साभार: अलोपित, जगदीश प्रसाद मण्डल, 18 नवम्बर 2022

कहल गेल अछि जे पशुनां समज:, मुनुष्याणां समाज:। जखन मनुक्ख-मनुक्खक बीचक जीवन विधि-बेवहारसँ चलए लगैए तखन समाजक रूप-रेखा नीक रूप बनबैत आगू दिस बढ़ैए। मुदा जैठाम साढ़े तीन हाथक मनुक्खेटा अछि मुदा ओकर कोनो सम्बन्ध दोसरसँ नहि छै तँ ओ समाज नहि 'समज'क रूप-रेखा भेल।

जहिना समाज गामक जनगणक मनमे पसरल रहैए तहिना सुधीर भाय सेहो जनगणक जीवनक अधिकांश क्षेत्रमे वौधिक रूपमे पसरल छैथ। सुधीर भाय समाजक अधिकांश लोककेँ मात्र जीवन-पथ देखौनिहारे नहि अपन चलल बाटपर चलैले प्रेरित केनिहार सेहो छैथ। जइसँ अगुआ पथिक मानि समाजक लोक हुनका 'भाय' कहै छैन। अपनो 'भाय' कहैक यएह आधार अछि। ओना, जीवनक कठिन समस्या समाधानक ओहन सूत्र सुधीर भाय सुतिआइये देलैन जइसँ कौलेज-जीवन टपैमे आसान सेहो भेबे कएल।

हाइ-स्कूल तक माने मैट्रिक तक खेलाइते-धुपाइते थर्ड डिवीजनसँ टपि गेलौं। मुदा जखन कौलेजमे गेलौं तखन कौलेजक नीक रिजल्टक भान भेल। ऐठाम किए ने कहि दी जे नीक रिजल्ट केना होइए, से भान नहि भेल। भान ई भेल जे नीक रिजल्ट भेने नोकरीमे आसान होइए। ऐठाम हम ई नहि कहए चाहै छी जे आजुक शिक्षा नोकरीन्मुख भऽ गेल अछि श्रमान्मुख वा जीवनोन्मुख नहि अछि। ओना, नोकरीन्मुखीकेँ सेहो जीवनोन्मुखी कहले जा सकैए मुदा ओ स्वावलम्बी जीवनक सीमासँ फराक अछि। स्वावलम्बी जीवन ओ भेल जेकरा वैदिक सूत्र-मंसा, वाचा, कर्मणा कहल गेल अछि, जइसँ स्वावलम्बी जीवन प्राप्त होइए।

जखन हाइ स्कूल टपि, माने मैट्रिक पास केलाक पछाइत कौलेजमे नाओं लिखेलौं आ पढ़ाइक नीक बाट पकैड़ नीक फलक आशामे, माने नीक रिजल्टक आशामे दुनियाँक चक्कर लगबए लगलौं तखन सुधीर भायकेँ दुनियाँक बीचमे असगरे ठाढ़ देखलयैन।

सुधीर भायकेँ असगर ठाढ़ देखि अपना मनमे आशाक हिलोर उमड़ल। माने

ई जे एकसँ अधिक लोकक‍ेँ एकठाम रहने मन अपन बात बजैले धकमकाइते अछि जे एहेन बात बाजब तँ लोक बोकियाएत, मुदा असगरमे से बात नहि होइए। बोकियबैयोबला विचारक रूप बदैल नीक-बेजाए-क सीमामे आबि जाइए। जइसँ विचारे-विमर्शटा नहि, नीक-बेजाएकेँ बेरबैत चूक-अचूकक सुझाव सेहो भेटते अछि। जइसँ अनुपयोगी जीवन कहियौ कि अनुपयोगी वस्तु, दुनू उपयोगी बनिते अछि। जखने जीवन वा वस्तु उपयोगी बनैए तखने ओकर मूल्य बनै छइ। मूल्य बननहि ने कोनो वस्तुए आकि जीवने मूल्यवान होइए। जे लिलसा सभ जीवनो आ वस्तुओकेँ अछिए। देखिते छी जे माटि केना लोहा बनि सुन्दर-सँ-सुन्दर इमारतमे सजि चमकैए। तखन मनुक्ख तँ सहजे मनुक्खे भेला। ऐठाम एकटा बात आरो अछि। ओ अछि समज आ समाज। कहब जे समजे संक्रमित होइत समाज बनल अछि तँए एकरा पूर्व रूप मानल जाए। मुदा तइमे भेदो अछि आ अभेदो अछि। कीट-पतंगसँ लऽ कऽ ओहन मनुक्ख धरिक समज होइत अछि जे मनुक्ख मनुक्खक विधि-बेवहारसँ दूर अछि। मुदा समाज मनुक्खेटा मे अछि। कहल गेल अछि जे पशुनां समजः, मुनुष्याणां समाजः। जखन मनुक्ख-मनुक्खक बीचक जीवन विधि-बेवहारसँ चलए लगैए तखन समाजक रूप-रेखा नीक रूप बनबैत आगू दिस बढ़ैए। मुदा जैठाम साढ़े तीन हाथक मनुक्खेटा अछि मुदा ओकर कोनो सम्बन्ध दोसरसँ नहि छै तँ ओ समाज नहि 'समज'क रूप-रेखा भेल। आन-आन पशु-पक्षी तँ सहजे जीव रहितो विधि-बेहवारसँ दूर अछिए। तँए ओ समाजक विचारसँ लाखो कोस दूर अछिए।

ओना, जखन कौलेजक परीक्षामे नीक रिजल्ट आनैक विचार मनमे उठल तँ अपन पुस्तैनी बाबासँ सुझाव लेब जरूरी बुझिये पड़ल। मनमे अनेको रंगक तर्क-वितर्क उठए लगल जे अपन बाबासँ सुझाव लेब नीक हएत कि सुधीर भायसँ? अपना लेल दुनू अपन-अपन जगहपर जगह पकड़नहि छैथ।

❑ **साभार: जिनगीसँ प्रेम, जगदीश प्रसाद मण्डल, 14 जनवरी 2022**

"काका, आब केकरा ले एते करै छी। बुढ़ भेलौं, कहीं किछु भइये जाए। दरबज्जापर बैस आरामसँ रहब से नहि।" अपना जनैत प्रशंसनीय ढंगसँ बजलौं। मुदा तइसँ मनसुखलाल कक्काक मनमे कोनो कम्पन्न नइ उठलैन। शान्तचित भऽ बजला- "काजे काजक आराम सेहो दइए, तँए अरामेसँ छी।"

केते दिनसँ जीयालालक विचार सोझो आ परोक्षो रूपेँ कानसँ सुनियोँ रहल छेलौं आ अनका मुहेँ आबियो रहल छल, मुदा मनकेँ ई बुझा बौसि लइ छेलौं जे जँ केकरो नीक बोल नहि सुनबै छिऐन तँ अधले बोल किए सुनेबैन। मुदा कानो तँ कान छी, सुनैत-सुनैत आजीज भइये गेल। प्रकृतियोक तँ अप्पन प्रकृति अछिए। सुनल विचार माने जीयालालक विचार, हृदयक हार जकाँ मनमे बनियेँ गेल अछि। कानसँ सुनल कौल्हुका विचार उफैन गेल। उफनैत विचारकेँ देखि अपन मन विचार देलक जे जीयालालक विचार मनसुखलाल काकाकेँ जरूर कानमे देबैन। तइसँ एते तँ हेबे करत किने जे अपन मनक भार कमि जाएत। उठिकऽ विदा भेलौं।

मनसुखलाल काकाकेँ अपन क्रिया-कलापक हिसाबे काजमे जुटल देखि मनमे भेल जे अखन घुमिये जाएब नीक हएत। दोसर घड़ी आबिकऽ कहबैन। समयक महत्व अपने थोड़बे बुझै छी जे एक्के काजमे दोबर समय लगने समैयक बर्बादी छी। आदमी तँ वएह ने भेला जे घूसो-पेंच लैत-दैत अपन काज तेज गतिसँ चलबै छैथ। फेर अपने मन विचारैत कहलक जे अपन काजमे मनसुखलाल काका लगले छैथ आ हमहूँ तँ हुनके काजे आएल छी, तखन घुमि जाएब बुड़िबकपना हएत। मन सक्कत भऽ गेल। आगू बढ़ि बजलौं- "काका, आब केकरा ले एते करै छी। बुढ़ भेलौं, कहीं किछु भइये जाए। दरबज्जापर बैस आरामसँ रहब से नहि।"

अपना जनैत प्रशंसनीय ढंगसँ बजलौं। मुदा तइसँ मनसुखलाल कक्काक मनमे कोनो कम्पन्न नइ उठलैन। शान्तचित भऽ बजला- "काजे काजक आराम सेहो दइए, तँए अरामेसँ छी।"

मनसुखलाल काका अपना विचारे की कहलैन तैपर मन नइ पहुँचल। किए तँ मनमे अपन धुन कबीरदास जकाँ धुनिया धुनि रहल छल। बजलौं-

"काका, बजैक साहस तँ नहि होइए, माने मुँहपर अधला विचार, मुदा तैयो कहै छी- अहाँक मान-सम्मानसँ बहुत लोक अपशब्दक वाण फेक रहला अछि।"

निरलोभ, निर्भीक मनसुखलाल काका बजला- "कियो कुमहरक बतिया बुझि आँगुर बताएत से जुनि बुझह। ओ अपनाकेँ पहिने ठीक ढंगसँ परेखि लिअ।"

ओना, गाममे केते गोरेक मुहेँ, कहबीक रूपमे सुनिते आबि रहल छी जे जँ कुमहरक बतियाकेँ ओंगरी बतेबै तँ ओ सड़ि जाइए। तैठाम मनसुखलाल काका अपन उदाहरणमे बाजि रहला अछि.! जरूर किछु रहस्य छीपल अछि। रहस्य ऐ दुआरे जे मनसुखलाल काका साहित्य संसारक लोक छैथ। साहित्य जगत रहस्यपूर्ण जगत छीहे। रहस्यपूर्ण विचार दइते अछि। सोझे मुहेँ केना काकाकेँ कहितिऐन जे अहाँ रहस्यमयी छी, तँए कनी रहस्यकेँ फरिछा दियौ। मुदा मुँह टेँढ़ कऽ कऽ तँ नहि बाजि, शब्दकेँ टेँढ़ करैत बजलौं-

"की कहलिऐ जे अपनाकेँ ठीक ढंगसँ परेखि लिअ?"

अपना जनैत भारी-भरकम शब्दक प्रयोग तँ नइ केने छेलौं, मुदा बुझि पड़ल जे मनसुखलाल कक्काक गहन विचार गहींरमे पहुँच गेलैन। बजला-

"किसुन, अपनाकेँ परिखब भेल अपनाकेँ जानब। जखन कियो अपनाकेँ जानि जाइए, तखने ओकर बिसवास अपनापर बनि जाइ छै। जखने मनुक्खकेँ अपनापर बिसवास जमि जाइ छै तखने ओकर जीवन अस्त्र-शस्त्र नेने दुनियाँ दिस विदा होइत अपन जीवन ताकि लइए।"

❑ **साभार: कुमहरक बतिया, जगदीश प्रसाद मण्डल, 21 नवम्बर 2022**

मनसुखलाल काका बजला- “दुनू हाथ लड्डू अछि, जे खाइ। वेद जहिना वैदिक बनबैए तहिना अवैदिक नइ बनबैए, सेहो केना नइ कहल जाएत।”

“किसुन, जँ फरिछा कऽ बाजब तँ लोककेँ अमताइन, तिताइन, कसाइन आ बसियाइन सेहो लगतैन, मुदा से सभ अखन कथी ले।”

जेना भोजमे पेट भरलपर भरैत जाइए मुदा सुआदो तँ सुआद छी, जँ से नहि तखन चटनी आकि खटमिट्ठी दोहरा-तेहराकऽ मांगि-मांगि किए लोक खाइए। की ओइसँ पेट भरत। ओना बाजि किछु ने भेल मुदा कक्काक चेहराक रूप डेरौन जकाँ ओहिना बनि गेलैन जहिना कोनो मन्दिरमे राक्षसक सदृश रूप देखि गम्भीर विचारक लोक गम्भीरतासँ विचारिकऽ बुझै छैथ जे जहिना क्रोध अधला सोभाव अछि, मुदा ओइमे दैवी शक्ति नइ छै, से केना नइ मानब। तहिना जेते परहेजी सोभाव अछि ओ अपरहेजी सेहो अछिए। मुदा लगले अपने मन बच्चाक ओइ रूप पर चलि गेल जैठाम गणेशजी मूस आ बाघक नाङैर पकैड़ नचेबो करै छैथ आ राक्षसक रूप देखि हँसबो तँ करिते छैथ।

ततमताइत बजलौं- “काका, हमर दोसर प्रश्न अछि।”

जहिना समुद्रक नाप नपैबला इनार-पोखैरकेँ अन्दाजोसँ नापि लइ छैथ, तहिना मनसुखलाल काका नापिकऽ हँसैत बजला- “किसुन, भरिसक तोहर मन थकमका गेलह अछि तँए विचारमे ततमती आबि जाइ छह।”

बाढ़िक धारामे जहिना प्रवाहित होइत जल धारासँ हटि कोनो पोखैर-इनारमे प्रवेश करिते शान्तोमे शान्त, महाशान्त भऽ जाइए, तहिना अख्यिास करैत मनसुखलाल काका दोहरा कऽ बजला- “किसुन, जहिना कोनो गाम बनैक शुरूआतमे कम आवश्यकता रहितो श्रममे विद्रूपपन छेलै, तँए जीवन भारियो छल आ हल्लुको तँ छले। वएह जीवन संचरण होइत, माने बदलैत आजुक रूप लेलक अछि। तइ भौकमे तूँ भोथिया जाइ छह।”

जानक जेना उग्रास भेल। मन हल्लुक भेल। बजलौं- "काका, केकरो मान देखि कियो जरैत किए अछि।"

ठहाका मारि हँसैत मनसुखलाल काका बजला-

"बौआ किसुन, केकरो मान-सम्मान प्राप्त करैले जीवनक धारामे प्रवाहित हुअ पड़ै छै। माने ई जे कोनो मान-सम्मान अपन विशेष गुणक रूप मंगैए। ओइ विशिष्टता ले अप्पन विशिष्टता बनाएब अपन कर्तव्य छी। जखन ओइ अनुकूल अपनाकेँ बना लइ छी, तखन ओइ हथियारक प्रयोग करैक अधिकारी बनै छी। ओना, सामाजिक परिवेश एहेन बनियेँ गेल अछि जे पुलिसक बेटा डकैत आ पण्डितक बेटा पौकेटमार बनियेँ रहल अछि।"

ओना, धरमागती पुछी तँ मनसुखलाल कक्काक विचार नीक जकाँ नइ बुझलौं, मुदा 'पुलिसक बेटा डकैत आ पण्डितक बेटा पौकेटमार' सुनि हँसी लगि गेल तँए अपने मने हँसा गेल।

हमरा हँसीकेँ अपन हंसवंशमे रोपैत मनसुखलाल काका हँसैत बजला-

"किसुन, जीवन ठठ्ठा नइ छी, ओकरा पकड़ैले पीठ-पट्ठा बनए पड़ैए। जाबे पीठपट्ठा नइ बनब ताबे जीवन गुलामीक सीमा पार नहि करत।"

मनसुखलाल कक्काक पहिलुके पाँती सुनि मन ओहिना बोनिया गेल जहिना कुशल-वेत्ताक कोनो बेथा-कथा हुअए आकि बर-बेवस्था हुअए, ओ तँ अपने केने होइए। बजलौं-

"तखन?"

मनसुखलाल काका बजला- "दुनू हाथ लड्डू अछि, जे खाइ। वेद जहिना वैदिक बनबैए तहिना अवैदिक नइ बनबैए, सेहो केना नइ कहल जाएत।"

❑ साभार: कुमहरक बतिया, जगदीश प्रसाद मण्डल, 21 नवम्बर 2022

हमरा हँसीकेँ अपन हंसवंशमे रोपैत मनसुखलाल काका हँसैत बजला- “किसुन, जीवन ठठ्ठा नइ छी, ओकरा पकड़ैले पीठ-पट्ठा बनए पड़ैए। जाबे पीठपट्ठा नइ बनब ताबे जीवन गुलामीक सीमा पार नहि करत।”

“सबहक इच्छा माने नब पीढ़ीसँ पुरान पीढ़ी धरिक, यएह रहै छैन जे श्रम कम आ मुनाफा बेसी हुअए। माने भेल जे करी कम आ बोइन बेसी हुअए। से नइ भेने, ओना होइतो आबि रहल अछि, जेकर अनेको कारण अछि, से अखन नहि, अखन बस एतबे जे कम काजक बेसी मजुरी भेटए।”

मनसुखलाल कक्काक विचार अपना मनमे नीक जकाँ नइ गड़ल। बजलौं-

“काका, कनी फरिछा कऽ कहियौ।”

अपना जनैत नीक जकाँ विचार बुझए चाहै छेलौं मुदा मनसुखलाल काका मने-मन ई सोचि हँसि रहल छला जे एकरे कमी लोकमे अछि जे कोनो काज वा विचारकेँ बुझैसँ बेसी अपनाकेँ बुझनुक बुझै छैथ, जइसँ एको डेग आगू बढ़ब पहाड़ जकाँ बनि गेल छैन।

मनसुखलाल काका बजला- “किसुन, जँ फरिछा कऽ बाजब तँ लोककेँ अमताइन, तिताइन, कसाइन आ बसियाइन सेहो लगतैन, मुदा से सभ अखन कथी ले।”

जेना भोजमे पेट भरलपर भरैत जाइए मुदा सुआदो तँ सुआद छी, जँ से नहि तखन चटनी आकि खटमिट्ठी दोहरा-तेहराकऽ मांगि-मांगि किए लोक खाइए। की ओइसँ पेट भरत। ओना बाजि किछु ने भेल मुदा कक्काक चेहराक रूप डेरौन जकाँ ओहिना बनि गेलैन जहिना कोनो मन्दिरमे राक्षसक सदृश रूप देखि गम्भीर विचारक लोक गम्भीरतासँ विचारिकऽ बुझै छैथ जे जहिना क्रोध अधला सोभाव अछि, मुदा ओइमे दैवी शक्ति नइ छै, से केना नइ मानब। तहिना जेते परहेजी सोभाव अछि ओ अपरहेजी सेहो अछिए। मुदा लगले अपने मन बच्चाक ओइ रूप पर चलि गेल जैठाम गणेशजी मूस आ बाघक नाङैर पकैड़ नचेबो करै छैथ आ राक्षसक रूप देखि हँसबो तँ करिते छैथ।

ततमताइत बजलौं- “काका, हमर दोसर प्रश्न अछि।”

जहिना समुद्रक नाप नपैबला इनार-पोखैरकेँ अन्दाजोसँ नापि लइ छैथ, तहिना मनसुखलाल काका नापिकऽ हँसैत बजला- “किसुन, भरिसक तोहर मन थकमका गेलह अछि तँए विचारमे ततमती आबि जाइ छह।”

बाढ़िक धारामे जहिना प्रवाहित होइत जल धारासँ हटि कोनो पोखैर-इनारमे प्रवेश करिते शान्तोमे शान्त, महाशान्त भऽ जाइए, तहिना अख्यिास करैत मनसुखलाल काका दोहरा कऽ बजला- “किसुन, जहिना कोनो गाम बनैक शुरूआतमे कम आवश्यकता रहितो श्रममे विद्रूपपन छेलै, तँए जीवन भारियो छल आ हल्लुको तँ छले। वएह जीवन संचरण होइत, माने बदलैत आजुक रूप लेलक अछि। तइ भौकमे तूँ भोथिया जाइ छह।”

जानक जेना उग्रास भेल। मन हल्लुक भेल। बजलौं- “काका, केकरो मान देखि कियो जरैत किए अछि।”

ठहाका मारि हँसैत मनसुखलाल काका बजला- “बौआ किसुन, केकरो मान-सम्मान प्राप्त करैले जीवनक धारामे प्रवाहित हुअ पड़ै छै। माने ई जे कोनो मान-सम्मान अपन विशेष गुणक रूप मंगैए। ओइ विशिष्टता ले अप्पन विशिष्टता बनाएब अपन कर्तव्य छी। जखन ओइ अनुकूल अपनाकेँ बना लइ छी, तखन ओइ हथियारक प्रयोग करैक अधिकारी बनै छी। ओना, सामाजिक परिवेश एहेन बनियेँ गेल अछि जे पुलिसक बेटा डकैत आ पण्डितक बेटा पौकेटमार बनियेँ रहल अछि।”

ओना, धरमागती पुछी तँ मनसुखलाल कक्काक विचार नीक जकाँ नइ बुझलौं, मुदा ‘पुलिसक बेटा डकैत आ पण्डितक बेटा पौकेटमार’ सुनि हँसी लगि गेल तँए अपने मने हँसा गेल।

हमरा हँसीकेँ अपन हंसवंशमे रोपैत मनसुखलाल काका हँसैत बजला-

“किसुन, जीवन ठठ्ठा नइ छी, ओकरा पकड़ैले पीठ-पट्ठा बनए पड़ैए। जाबे पीठपट्ठा नइ बनब ताबे जीवन गुलामीक सीमा पार नहि करत।”

❑ **साभार: कुमहरक बतिया, जगदीश प्रसाद मण्डल, 21 नवम्बर 2022**

भऽ गेल स्वर्ग-नर्कक खेल। उड़ि गेल वैदिक विचार आ वैदिक कर्म। एहने तँ खेल चलि रहल अछि। अही स्वर्ग जाइक खातिर राजा हरिश्चन्द्र सपनामे देखलैन जे अप्पन राज-पाट दान कऽ देलिऐ, बड़ बढ़िया केलैन। मुदा बुझबे ने केलैन जे बैंकक जमा-पूंजीमे खर्च भेने कमैत जाएत, जे एक दिन सठि जाएत। तखन तँ यएह ने हएत जे ठोँठियाकऽ जहिना बैंकसँ निकालल जाइए तहिना स्वर्गसँ निकालि नर्कमे धकेल देत।

जहिना मनुक्खक जीवनक शुरूआत बच्चासँ होइत अछि तहिना बनवृक्षक शुरूआत सेहो परपौधसँ होइत अछि। समुद्रक जल स्वरूप मानव जहिना माइक ओद्रमे जलसँ थलमे संचरित होइत शीशु रूपमे धरतीपर अबैत अछि तहिना प्रकृतिक गर्भमे, माने जल-थल-हवा-रौदादिक बीच, अंकुरैत परपौध धरतीक ऊपर बनवृक्षक रूपमे ठाढ़ होइत अछि। ओना, दुनूक जीवन-यापनमे अन्तर अछिए। जैठाम मनुक्खकेँ माता-पिता अप्पन आत्मा बुझि अपन आत्म-सम्मानक रक्षार्थ अप्पन कर्तव्य पूर्ण करै छैथ तेना बनवृक्षकेँ नइ होइए। ओ अप्पन जीवन अपने सजि-सम्हारि हजारो बर्खक औरुदा प्राप्त कऽ लइए। ओना, प्रकृतिक अनुपम रूप सेहो अछि। एकठाम ओ रौद-हवा-पानि इत्यादि रूपमे देखि पड़ैए तँ दोसरठाम मनुक्खक प्रकृति मनक भीतर समाएल रहैए। जेकर जेहेन प्रकृति तेकर तेहेन विचारो आ काजो। तइसँ रंग-बिरंगक विचारो आ काजो भइये जाइए.!

विचारक दौड़मे मन उबिया लगल। उबियाइक दोसरो कारण भेल, दोसर कारण भेल जे मने-मन जाधैर विचारैत रहलौं ताधैर एकचलिया डेगमे चलैत रहलौं मुदा जखन आँखि उठा गाम-समाज दिस तकलौं तखन भकइजोत जकाँ हुअ लगल। भकइजोत जकाँ ई भेल जे एक दिस देखी जे समाजमे, आन समाजक बात नइ कहै छी, हम अप्पन गाम-समाजक कहै छी, माने मोतीपुर गाम-समाजक। जैठाम स्वर्ग आ नर्क अदौसँ बनल आबिए रहल अछि जे अखनो अछिए। जइ लोभे

लोक अपन धन-सम्पैत, माने शरीरक संग अर्थक न्योछावर धड़ल्लेसँ कइये रहला अछि। धड़ल्लेक माने भेल एकरंगा वस्त्र धारण कऽ लिअ, सौंसे चानि चानन लगा लिअ, स्वर्ग जाइक एकटा कोनो पाथरे वा लकड़ीए लऽ लिअ, कोनो दरबज्जापर जा या तँ लकड़ा सूँघा जड़ी वा पाथर सूँघा जड़ी परसए लागू आ एकसाए एकावनसँ पान साए एकावन तकक दछिना समेटि लिअ। भरि मन दारू आ मांसक प्रसाद चढ़ा लिअ, भऽ गेल स्वर्ग-नर्कक खेल। उड़ि गेल वैदिक विचार आ वैदिक कर्म। एहने तँ खेल चलि रहल अछि। अही स्वर्ग जाइक खातिर राजा हरिश्चन्द्र सपनामे देखलैन जे अप्पन राज-पाट दान कऽ देलिऐ, बड़ बढ़िया केलैन। मुदा बुझबे ने केलैन जे बैंकक जमा-पूंजीमे खर्च भेने कमैत जाएत, जे एक दिन सठि जाएत। तखन तँ यएह ने हएत जे ठोँठियाकऽ जहिना बैंकसँ निकालल जाइए तहिना स्वर्गसँ निकालि नर्कमे धकेल देत। पहिने तँ ई ने फरिछा लेब जे सपना फूसि छी की सत्। ई कहलौं सतयुगक विचार। त्रेताक आब कहै छी, रामकेँ राजगद्दी हेतैन, बड़बढ़िया, राजगद्दी पिताक पछाइत बेटाकेँ होइते अछि। मुदा रामक राजगद्दीक इरखा कैकेईकेँ भेबे ने केलैन आ भऽ गेलइ मंथरा सन नौड़ी-खवासिनी-केँ। जँ मंथरामे राज-चेतना रहैत तँ ओ राज्यक मंत्री वा मंत्रिणी बनैत आकि नौड़ीक जीवन धारण केने रहैत? यएह तँ छी जादूगरक जादू।

❑ साभार: नब बनक नब फल, जगदीश प्रसाद मण्डल, 30 नवम्बर 2022

“एक-एक बेकतीक जीवन अछि, जीवनमे किछु-ने-किछु नवीन ओहन समस्या अबिते अछि जे नवपनकेँ गढ़ैक शक्ति रखैए, तँए एक-एक बेकतीसँ सम्बन्ध स्थापित करैत चलए पड़तह।”

“बाबा, आब हम ऐ गाममे नइ रहब। सएह अहाँसँ पुछए एलौं हेन जे काशी जाएब नीक हएत आकि अयोध्या?”

कुसुमलाल बाबा बकर-बकर मुँह दिस देखैथ मुदा बाजैथ किछु नहि। ओना, ओ अखन तकक जीवन देखि चिन्है जरूर छैथ, मुदा जइ स्थितिमे पड़ि गेल छी, तइक जानकारी नहियेँ छैन। तँए, अपना दिस कुसुमलाल बाबाकेँ टुकुर-टुकुर तकैत देखि मुहसँ खसि पड़ल- “बाबा, सभकेँ बेइज्जत करए, अन्न-पानि-लकड़ी.!”

कुसुमलाल बाबा बजला- “गुलटेन, बजलह तँ जीवनक मार्मिक बात मुदा कनी मन असथिर करि कऽ बाजह।”

कुसुमलाल बाबाक बात सुनि मन थीर भेल। जहिना तामस जखन उठए लगए तँ एक गिलास पानि पीब नेने तामस कमि जाइए, तहिना आकि की, कुसुमलाल बाबा बजला- “गुलटेन, ओना अखन हमर शरीरक श्रम करैक समय अछि, तँए बैसारी काज, माने मनक काज करैक समय छी नहि, मुदा तोहर परेशानी देखि, सभ काजकेँ अपना जगहपर रोकै छिअ।”

जहिना करोनाक उफानकालमे गाड़ी-सवारी जहाँ-तहाँ रूकि गेल, तहिना अपन मनक सभ विचार जे जेतए छल से तेतए रूकि गेल। ओना, मनक लहैरिक विषविषी, बिच्छूक डंक जकाँ छेलए-हे। कुसुमलाल बाबाक निर्णय, माने अपना मनमे छल जे कोनो नव रस्ताक विचार देता, मुदा से भेल नहि। उनटे पुछलैन- “गुलटेन, असथिरसँ सवाल उठाबह।”

बजलौं- “बाबा, ओना अहाँ एकउमेरिये जकाँ छी, मुदा ओहन ठकहरबा बाबा तँ नहियेँ छी जे दस-बारह सालक छौड़ा एकरंगा पहीर सात जन्मक खिस्सा सुना ठकैए।”

बिच्चेमे कुसुमलाल बाबा बजला- “गुलटेन, एते भूमिका बन्हैक कोन खगता छह। समय छल जखन पोथीसँ भूमिका भारी होइ छल। आब तँ ओहन समय आबि गेल अछि, जे अखन अछि ओ साँझमे रहत कि बदैल जाएत तेकर कोनो ठेकान नहि। तँए, तोहर अप्पन जे तामसक पन्ना (पोना) छह, तैठामसँ विचार उठाबह।”

बजलौं- “बाबा, एकेठाम देखै छी जे अहाँक जेहेन समटल परिवार अछि आ अपन जे उड़ियाएल परिवार अछि, तइमे अकास-पतालक अन्तर तँ अछिए किने।”

जे बात बाबाक मनमे बुझैक छेलैन, से अपने बजैक विचारे ने छल, तँए विचारकेँ घुरिया-फिरिया बजलौं।

कुसुमललाल बाबा बजला- “गुलटेन, कौए ‘कागभुसुण्डी’ होइए आ कागभुसुण्डियो ‘कौए’ होइए। बारह बर्खकेँ तमाशा गढ़ि बनौआ बाबा ज्ञानसँ जेते आगू बढ़ि जाए, मुदा जीवनक बेवहारिक पक्षकेँ कहियो ने बुझि पौत।”

घरमागती पुछी तँ कुसुमलाल बाबाक विचार नीक जकाँ नहि बुझि पेलौं। मुदा समस्याक समाधान केने बिना तँ परिवार समस्याग्रस्त रहबे करत। बजलौं-

“बाबा, परिवारक लोकक जे किरदानी बनि गेल अछि, तइसँ मन कानि रहल अछि, से कोनो उपाय बता दिअ।”

अपनो परिवारकेँ हियासि आ हमरो परिवारकेँ हियासि कुसुमलाल बाबा पुछलैन- “तोहर परिवार नमहर छह आकि हमर?”

सत्य बात किए ने बाजब, बजलौं- “अहाँक चौथाइयोसँ कम अपन परिवार अछि।”

कुसुमलाल बाबा बजला- “एक-एक बेकतीक जीवन अछि, जीवनमे किछु-ने-किछु नवीन ओहन समस्या अबिते अछि जे नवपनकेँ गढ़ैक शक्ति रखैए, तँए एक-एक बेकतीसँ सम्बन्ध स्थापित करैत चलए पड़तह।”

❑ साभार : परिवारक योग, जगदीश प्रसाद मण्डल, 19 सितम्बर 2022

“भाय, दोहरी मारिमे फँसि गेलौं हेन। तँए, होइए जे घरसँ पड़ा जंगल चलि जाइ वा एक चुरूक पानिमे अपन जान गमा ली।”

परसुका कार्यक्रममे माने साहित्यिक संगोष्ठीमे सभकेँ-सभ पहुँचल छला, जइसँ कार्यक्रमक रौनक कार्यक्रम शुरू होइसँ पहिनहि चमकदार भऽ गेल छल। रंग-रंगक साहित्यकार पहुँचले छला, तइमे जखन भ्रमरजी, कमलजी लग बैस सरोवरजीकेँ कहि देलखिन-

“रतिचरजीक चकचकी देखियनु.!”

तैबीच दिग्दर्शन भाय आ हरहू भाय सेहो पहुँचला। आगूमे बैसैक जगह भरल देखि हरहू भाय दोसर सत्तैरमे दिग्दर्शन भाइक संग बैसला। दुनू गोरेकेँ एकठाम बैसल देखि अपनो सहैट कऽ ओहीठाम बैसलौं। हरहू भाय टुटल मने दिग्दर्शन भायकेँ कहलैन-

“भाय, अन्तिमे भेँट छी। आगूसँ हमर उपस्थिति नहि रहत।”

हरहू भाइक बात सुनि, दिग्दर्शन भायकेँ जे भेल होनि, मुदा अपना मनमे झनाक-दे लागल जइसँ मन झनझना गेल। झनझनाएल मनमे विचार उठल जे एकटा प्रेमी आदमी घटने जहिना जीवन धर्मक एकटा डारि टुटैए तहिना बढ़ने तँ एकटा डारि पनैपते अछि। अपने विचारक ततमतीमे पड़ल रही कि तैबीच दिग्दर्शन भाय हरहू भायकेँ कहलैन-

“अन्तिमे भेँट किए, अपना सभक भेँट अहीठाम टा किए स्वर्गो-नर्कोमे हेबे करत।”

ओना, दिग्दर्शन भाय हरहू भायकेँ जीवनक मचकीमे झूला जकाँ आस लगा बाजल रहैथ, मुदा हरहू भाइक टुटल मन हड़हराएले रहि गेलैन। जइसँ मुँहक उदासीक संग मुँहक फुफरी सेहो देखिये पड़ि रहल छेलैन। जे, अपन आस लगौला पछातियो दिग्दर्शन भायकेँ सेहो नजैर पड़लैन। माने, हरहू भाइक मनक दर्द दिग्दर्शन भायकेँ मिसियो भरि कम नहि बुझि पड़लैन। मुँह बिजकबैत हरहू भायकेँ

देखि दिग्दर्शन भायकेँ अपनो मनमे दुख भइये रहल छेलैन, मुदा दुखो-दुखोक सीमा अछि। पैरमे आँकर-पाथर चुभने आकि ब्लेड-पत्तीसँ जितहा नह कटेने सेहो दुख होइए मुदा ओहन दुखकेँ लोक दुख नइ बुझैए। जँ कोनो गहींरगर दुख रहल तँ ओ मनकेँ बिचलिते नहि, बताहो बनाइये दइए.! हरहू भाय बजला-

“भाय, दोहरी मारिमे फँसि गेलौं हेन। तँए, होइए जे घरसँ पड़ा जंगल चलि जाइ वा एक चुरूक पानिमे अपन जान गमा ली।”

हरहू भाइक विचार सुनि दिग्दर्शन भायकेँ बुझैमे जे आएल होनि, मुदा अपना कोनो अरथे ने लगल जे हरहू भाय किछु बाजि रहल छैथ आकि बताह जकाँ बकि रहल छैथ। पुछलयैन-

“भाय, ऐना किए घोघ तानिकऽ बजै छी, मुँह उघारिकऽ बाजू।”

हमर बात सुनि आकि अपन मनक उपजसँ, हरहू भाय बजला-

“दोहरी मारि ई फँसि गेल अछि जे एकदिस पत्नी कहै छैथ, हमर कोनो मनोरथ एहेन पुरुखसँ नहि पूरल, आ दोसरदिस साहित्य-जगतक साहित्यकार सभ सेहो कहिते छैथ जे हरहू महादेवक गण छैथ, जिनकर देह तँ ठीक-ठाक छैन मुदा गरदैनसँ ऊपर मुहेँ ने छैन।”

ओना, दिग्दर्शन भाय चुप्पे रहला मुदा मनमे जनु घुरियेलैन जे, जे बात हरहू भाय अपन रचनामे करै छैथ सएह बातक चरचो कऽ रहला अछि। तखन किए मन खसल आ उदास छैन.? अप्पन विचारक बोनमे दिग्दर्शन भाय वौआ गेला।

❑ साभार: साहित्यकारक विवेक, जगदीश प्रसाद मण्डल, 28 सितम्बर 2022

“मनमोहन भाय, जहियेसँ कोसी नहर बनब शुरू भेल तहियेसँ पाइनिक खेल-बेल अपना इलाकामे शुरू भेल।”

एकैसम शताब्दीक वैज्ञानिक युग रहितो रोहितपुर दिनानुदिन पाश्यमुखिये भेल जा रहल अछि। कृषि प्रधान गाम रोहितपुर सात साए परिवारक गाममे चारि साए किसान परिवार अछि आ बाँकी तीन साए परिवार ओहन अछि, जइमे सँ किछु परिवार खेतमे मजूरी करै छैथ, जिनका खेत-मजदूर कहै छिऐन, किछु परिवार छोट-मोट कारोबार आ किछु परिवारक लोक नोकरी करै छैथ।

मिथिलांचलक मध्य रोहितपुर नव गाममे नहि, पुरान गामक गिनतीमे अछि। ओना, धार-धुरक क्षेत्र मिथिला रहने पुरान गामक उपटान आ नव गामक बसान सेहो होइते आबि रहल अछि से आइये नहि, सभ दिनसँ अछिए। अखनो अछि। रोहितपुरकेँ कृषि प्रधान गाम बनैक अनेको कारण अछि। एक तँ गंगा-ब्रह्मपुत्र मैदानक बीच रहने रोहितपुर चौरस गामो अछि आ उपजाऊ माटियो अछि, तैसंग कोसी-कमला सन उपद्रवी, माने कटाव करैबला, धार रोहितपुरमे नहि अछि। कृषि आधारित गाम रोहितपुर आइये नहि, हजारो बर्खसँ अछिए। ओना, रोहितपुरमे खेत-पथारक छीना-झपटी अनेको बेर भेल अछि मुदा साठि-सत्तैर बर्खसँ नहि भेने गाम असथिर भेल अछि। ऐठाम असथिरक माने खेत-पथारक छीना-झपटीसँ अछि। पैघ जमीन्दार तँ गाममे नहि छैथ, मुदा पचास-साठि बीघाबला दू परिवार, ओइसँ कम जमीनबला तीस-चालीस परिवार आ बाँकी जे किसान छैथ ओ पाँच कट्ठासँ चारि-बीघाबला धरि छैथ।

आने गाम जकाँ रोहितपुरमे सेहो सभ रंग, माने ऊँच-नीच, जमीन अछिए। गामक कुल जमीनक चौथाइ भाग ओहन अछि जे गहींर अछि, जेकरा ‘चौरी’ कहै छिऐ। बाँकी जमीन ऊँचरस भीठ आ मध्यम धनहर अछि, जइसँ बारहो विरहिणीक उपज गाममे होइते अछि।

एमहर चारि सालक बीच गाममे कोसीक शाखो नहरक खुनाइ भेल आ स्टेट बोरिंग सेहो गराएल अछि, तैसंग खेत जोतैबला ट्रेक्टरसँ लऽ कऽ दौन करैबला थ्रेसर सेहो आएल अछि। मुदा गामक खेती (कृषि कार्य) पछुआ गेल,

जइसँ कृषि आधारित परिवारकेँ, माने किसान परिवारकेँ, स्थिति बिगड़ने आन-आन रोजगारो आ नोकरियो करए पड़ि रहलैन अछि।

आइ चालीस बर्खसँ कुसुमलाल भाइक संग अपन सम्बन्ध रहल अछि। ओना, सम्बन्धो-सम्बन्धमे कमी-बेसी होइते अछि मुदा से नहि, जीवनक पूर्ण सम्बन्ध रहल अछि। जहिना एक रंग विचार अछि, कहब जे एकरंग विचार की भेल? जीवनक मूल तत्त्वक विचार, तहिना एकरंग जीवनधारो अछिए। आन जकाँ दुनू गोरेक बीच एहेन कहियो ने भेल जे लगले छाती भरि मिलान आ लगले हाथा-हाथी झगड़ा भेल। माने एकटा काजमे मिलान (दोस्ती) आ दोसर काजमे झगड़ा (दुश्मनी) भेल। ओना, समाजमे जे जाति-विभाजन अछि, तइ हिसाबे दुनू गोरे दू जाइतिक छी, मुदा जीवनक जे गति-विधि अछि, तइमे मिसियो भरि अन्तर नहि रहने, कोनो अन्तर सेहो नहियेँ अछि। जहिना बच्चा (छात्र) अपन नियमित जीवनक अनुकूल समयपर सभ काज करै छैथ, माने समयपर खा कऽ पढ़ए गेलौं, पढ़िकऽ एला पछाइत जे काज अछि से केलौं, तहिना कुसुमलाल भाइक संग अपन रहल अछि। ओना, पनरहे दिनक बीच दुनू गोरेक जन्म भेल अछि, जइसँ पढ़ाइ-लिखाइक संग अनेको काज संगे करिते आबि रहल छी। दुनू गोरेक जन्मक बीच जे कम-बेसी अछि, ओ अछि पैछला महीनाक इजोरिया अष्टमी दिन हुनकर जन्म भेलैन आ अपन ऐगला महीनाक अनहरिया अष्टमी दिन भेल अछि। जहिना हुनका माने कुसुमलालकेँ मानवीय चाह छैन तहिना अपनो अछिए, जखने चाह तखने राह भेटते अछि। दुनू गोरेक परिवारक स्तर सेहो एक्केरंग अछि। दुआर-दरबज्जासँ लऽ कऽ घर-आँगन सेहो एक्केरंग अछि। घर-आँगनक माने भेल ओढ़ब-पहिरबसँ लऽ कऽ खान-पान धरि, से आइये नहि, जहियासँ सम्बन्धक ठेकान अछि तहियेसँ दुनू गोरेक बीच परिवारोक आन-जान, एक-दोसर ठामक रहबे कएल अछि।

दुनू गोरेक बीच गप-सप्प करैक सेहो नियमित समय अछि। ओ अछि, सूर्यास्तक पछाइत- साँझू पहरमे। एक दिन कुसुमलाल भाय ऐठाम अपने बइसै छी, दोसर दिन अपना ऐठाम बैस गायत्री जकाँ भरि दिनक कएल काजक लेखा-जोखा कुसुमलाल भाइक संग करै छी।

लेखा-जोखाक माने एतबे नहि बुझब जे भरि दिनक केलहा काजक हिसाब

बुझि लेलौं आ आगूक कोनो विचारे नहि केलौं। औझुके काजपर काल्हि ठाढ़ हएत तँए औझुका काजक छीप पकैड़ कौल्हुका काजक जड़ि बना रोपबे ने जीवनक रोप छी जइसँ जीवन फड़ै-फुलाइए। ..ओना अपना दुनू गोरेक बीच, माने अपनो आ कुसुललालो भाइक, दरबज्जापर बैसार बेरा-बेरा होइए, माने एक दिन अपना ऐठाम दोसर दिन कुसुललाल भाइक ऐठाम, मुदा एहेन सम्बन्ध काँटी ठोकल कील जकाँ नहि, नट-भाल्टू जकाँ अछि। जइसँ जखन कुसुमलाल भाय ऐठाम कोनो विशेष नव काजक सूत्र-पात्र होइ छैन तखन हुनका ऐठाम आ जखन अपना ऐठाम होइए तखन अपना ऐठाम, सोल्होअना बैसार करिते छी। यएह ने भेल सामाजिकता जे सभ समाजक समान किरिया-कलाप अछि तेकरा सभ मिलि निमरजना करैत चलू, जइसँ कोनो बाधा-रूकावट जीवनमे नहि औत। जखने पैघत्वक विचार विचारमे पनपैए, कटुताक जन्म होइए। अपना ऐठाम बेंतक गाछक उदाहरण विचारकेँ देल गेल अछि।

ऐ बेरक, माने मई माससँ लऽ कऽ अखन सितम्बर धरिक, जे मौसम रहल अछि माने मासक गति-विधि, ओ किसान परिवारमे बेकारीक स्थिति पैदा कइये देने अछि। जखन सौंसे गामे पानिमे डुमल अछि तखन किसानक किसानी केतए चलतैन, तँए बेकारीक स्थिति बनिये गेल अछि। दिन झुकिते कुसुमलाल भाय ऐठाम विदा भेलौं। ओना, रस्तामे धकमकी ईहो उठैत रहए जे अपने कोनो काज नहि अछि मुदा जँ कुसुमलाल भाय कोनो काजमे लागल हेता तँ हुनकर काज तँ बिथुत हेबे करतैन। फेर लगले अपने मन कहलक जे जखन अपन निश्चिन्तियेक अवस्था अछि तखन किए ने कुसुमेलाल भाय ऐठाम होइत आगू टहैल जाएब। जँ कुसुललाल भाय कोनो काजमे लागल हेता तँ कहबैन- ‘भाय, कने चनौरागंज जाइ छी, ओमहरसँ घुरब तखन बैसब।’

मन मानि गेल जे सत्यक रस्ताक लग होइत चलैत रहने छोट-छीन बहाना समा जाइते अछि। कुसुमलाल भाय ऐठाम विदा भेलौं। जखन कुसुमलाल भाइक दरबज्जाक आगूक रस्तापर गेलौं कि देखलौं जे चारि-पाँच गोरे दरबज्जापर बैसल छैन, आ कुसुमलाल भाइक पोता लालजी चाह बाँटि रहल अछि। आगू ससरैत बजलौं- “कुसुमलाल भाय, अहाँकेँ अपन चाहक बचत कऽ देलौं। जएह अछि तेकरे काटि-कुटिकऽ बाँटि सभ पीब लिअ।”

ओना, आँखि-कान उठा कुसुमलाल भाय देखबो आ सुनबो केलाह, मुदा

बजला किछु ने। भरिसक दिव्य ज्ञान होइ छेलैन आकि की से तँ वएह जनता। दिव्य ज्ञान वएह ने भेल जखन कर्मेन्द्रिय निसक्रिय भऽ जाइए आ ज्ञान-ज्योति जागि जाइए। जहिना राशनक दोकानपर गप-सप्प करैत बैसनिहारकेँ राशन पाछू भेटैए आ ठाढ़ भेलकेँ पहिने, तहूमे महिलाकेँ आरो पहिने भेटैए तहिना अपनो भेल, ठाढ़े-ठाढ़ पहिने अपने चाह भेटल। जहिना ठाढ़े-ठाढ़मे चाह भेटल तहिना ठाढ़े-ठाढ़ पीब कपकेँ राखि, चौकीपर बैसलौं। अपना दिससँ जे कोनो औझुका हाल-चाल पुछितिऐन से तँ गपे-सप्प चलि रहल छल। तँए पुछैक गरे ने बुझि पड़ल।

एक तँ ओहुना कुसुमलाल भाइक जीवनक मुँह-मिलानीसँ अपनो जीवन ओहन रूप पकड़िये नेने अछि जेहेन कुसुमलाल भाइक छैन। एहेन नहि जे घोड़ा जकाँ मुँह-मिलानी करैत हिहिया लेब आ पाछू उनैट चौताल उठा सलामियो लेब। कुसुमलाल भाइक बीच थोड़बे एहेन अछि जेना पहिल पहिल दिन दू गोटाक बीच गप-सप्प करिते जीवनक धार पकड़ैए। दुनू गोरेक बीच असथिर जीवन धार बनि बहिये रहल अछि। कुसुमलाल भाइक लगमे नीक जकाँ बैसबो ने कएल रही कि सुवंशलाल बाजल- “भने मनमोहन भाय अहूँ आबिये गेलौं।”

सुवंशलालक बात सुनि मन ठनकल जे की बात छी जे अबिते पाकल जअमे पाथर जकाँ खसल..? ऐठाम ई नहि कहि रहल छी जे जहिना छिछलौआ पाथर होइए तहिना छिछलौआ जओ तँ सभदिनसँ बनल आबिये रहल अछि, तैठाम तँ समस्या गम्भीर भइये जाइए। बजलौं- “सुवंश, कोन लटारम्हमे लागल छह, जे बजैक एक मिनट समय अछि तइमे तेहेन शास्त्रीय संगीतक सम (भूमिका) बान्हि देलहक जे सभटा समय तहीमे चलि जाएत, तखन अनुशासनक पालन, माने समयक अनुशासन, करैत बइसै पड़त किने।”

जहिना अपने बजलौं तहिना सुवंशलाल सेहो बाजल- “मनमोहन भाय, जहियेसँ कोसी नहर बनब शुरू भेल तहियेसँ पाइनिक खेल-बेल अपना इलाकामे शुरू भेल।”

❑ साभार: बाड़ी भऽ गेल धनहर, जगदीश प्रसाद मण्डल, 04 सितम्बर 2021

गाम केतबो उजैर-उपैट किए ने गेल, मुदा गामक नाम लगले थोड़े उपटत। मुनेसर बाबू बजला- "मिथिलाक बीच मधुबनी जिलाक राघोपुर रहै छी, और अहाँ?"

गाम-गाममे उजाहि उठले अछि, लोक गाम छोड़ि पड़ाइये रहल छैथ। किए पड़ा रहल छैथ, से पुछनिहार कियो ने। जखन पुछनिहारहे नहि, तखन जवाबे किए भेटत.? ओना, ई बात सभकेँ बुझल छैन जे अपन वेद-सूत्र अछि- 'वसुधैव कुटुम्वकम्..।'

जखन दुनियाँक सभ मनुक्ख मनुक्खे भेलौं, तखन केतौ रही, किछु खाइ, मनुक्खेक बनल समाजक बीच भेल किने। ई भेल मनुक्खक एक सीमा, दोसर सीमा ओ भेल जैठाम एक-दोसरकेँ मनुक्खकेँ खून पीबैले तैयार अछि। एकरा फूसियो तँ नहियेँ कहबै जे बेकती-बेकतीमे, परिवार-समाज आ देश-दुनियाँमे सेहो पसरल अछि। खाएर जेतए जे अछि तइसँ सियालाल काकाकेँ कोन मतलब छैन।

दिल्ली शहरक बीच रामपुरक सियालाल काका आ राघोपुरक मुनेसर बाबू अपन बेटाक डेराक ओसारक कुरसीपर बैस दुनू गोरे अपन-अपन गामकेँ सुमैर रहल छला। जाबे तक सियालाल काका दिल्ली नइ देखने रहैथ, ताबे तक मनमे यएह होइत रहैन जे जहिना अपना सभक गाम-घर अछि तहिना दिल्लियोमे हएत, माने ओहूठामक बोली-वाणी, रहन-सहन गामे जकाँ हएत। ..गामक परिवेशमे रहनिहार श्रमिक परिवारक निरक्षर सियालाल काका छथिए। तहूमे देखो-देखी तँ चेतना जगिते अछि, गामेमे माने रामपुरेमे केते गोरेकेँ बेटाक संग दिल्लीमे रहैत सेहो देखबे-सुनबे करै छला। गामक किसानी जीवनक स्थिति सेहो दिनो-दिन बिगड़ले जा रहल अछि। तहूमे रामपुर गामक स्थिति तँ आरो बिगैड़ गेल अछि। दू साल पहिने कमला धारक छहर टुटल जे गामक बीचो-बीच, नासी जकाँ फोरि, गामकेँ बाउलसँ भरि उपटा देलक। गामक लोक कुटुम-परिवार ऐठामसँ लऽ कऽ बम्बई, बंगलोर, दिल्ली इत्यादि तक पहुँच अपन जान बँचौने छैथ।

दिल्ली पहुँचला पछाइत किछु दिन तँ सियालाल काका अपनाकेँ अनभुआर मानि दिल्लीकेँ देखै-सुनैमे लगौला। मुदा किछु दिनक पछाइत बुझि पड़ए लगलैन

जे जहलमे बन्न भेल छी। बेटा-पुतोहु सबेरे आठ बजेमे डेरासँ निकैल बाहर काज करैले जाइ छैन जे साँझमे घुमै छैन। भरि दिन असगरे सियालाल काका कछ-मछ करैत दिन बितबै छैथ।

किछु दिनक पछाइत, संयोग भेल, सियालाल काका डेरासँ निकैल सड़कपर ठाढ़ रहैथ कि एक ओहन बेकतीपर नजैर पड़लैन जनिक धोतीक ढट्ठासँ बुझि पड़लैन जे अपने मैथिल छैथ। ओ, माने मुनेसर बाबू, हाथमे झोरा नेने बाजार जाइत रहैथ।

महीना दिनसँ सियालाल कक्काक मुँह बान्हले रहैन। मुँहक बान्हब भेल, बाजब-भुकब बन्न हएब। अपना डेरामे जेतेकाल बेटा-पुतोहु रहै छैन तेतेकाल तँ मन बहला लइ छैथ, मुदा बेटा-पुतोहुकेँ डेरासँ निकलला पछाइत सोल्होअना मुँह बन्हा जाइते छैन। अपन गौंआँ-घरूआ बुझि सियालाल काका हुनका पुछलैन- "भाय, अपने मैथिल छी?"

गाम केतबो उजैर-उपैट किए ने गेल, मुदा गामक नाम लगले थोड़े उपटत। मुनेसर बाबू बजला- "मिथिलाक बीच मधुबनी जिलाक राघोपुर रहै छी, और अहाँ?"

जहिना कोनो जोगाकऽ राखल साजक आवाजमे मीठपन रहैए तहिना सियालाल काका बजला- "अपनो डेरा यएह छी, केतए जाइ छी, चलू कनीकाल बैस कऽ दुनू भाँइ मिथिलाक सुख-दुखक गप-सप्प करब।"

ओना, मुनेसरो बाबूकेँ बुझि पड़लैन जे जखन मिथिलाक गाम-घरक लोक भेटला अछि तखन कनीकाल बिलैम जाइ। मुदा लगले अपन दायित्व बोध भेलैन। दायित्व बोध ई भेलैन जे अखन परिवारक काजसँ माने दूध-तरकारी कीनैले निकललौं हेन, तैबीच केतौ अँटैक समय बिताएब उचित नहि। तहूमे शहर-बाजारक चट्टी-बट्टी जा रहल छी, कखन भरल रहत आ कखन खाली भऽ जाएत, तेकर कोनो ठेकान नहि। जखन कोनो काजे डेरासँ निकैल जा रहल छी, तखन पहिने ओकर निमरजना करबे ने भेल समयक संग चलब। ..लगले, मुनेसर बाबूक अपने मन कहलैन जे अखन सड़कपर ठाढ़ गप-सप्प करै छी, ई उचित नहि। सड़क चलैक छी, रूकने दोसरक चलब रूकत..!

❑ **साभार: भाषाक बेथा, जगदीश प्रसाद मण्डल, 01 अक्टूबर 2022**

एकाएक मुनेसर बाबूक मनमे उठि गेलैन जे किए ने सियालालकेँ भाषाक इतिहासे सुना दिऐन। जइसँ मनुक्ख आ भाषाक सम्बन्धक संग भाषा केना जन्म लइए, केना फड़ै-फुलाइए आ केना मरैए, एक संगे सभ बुझि जाइथ।

"भाय साहैब, चलू हमहूँ संगे चलै छी। रस्ते-रस्ते गपो-सप्प करब जइसँ काजो नइ रूकत।"

कोनो नव वस्तु भेटलासँ जेतेक खुशी होइए तइसँ कम कि ओकरा हेराइक डर मनमे नइ रहैए। बुझल बात अछिए जे कम धियानसँ कोनो शब्द वा कोनो सूत्र ग्रहण कएल, कखन बिसैर जाएब तेकर कोनो ठेकानो नहियेँ अछि। लगेमे तरकारी हाट आ दूधक हाट सेहो अछिए। मुनेसर बाबूक मनमे ठहकलैन। अपने सभ दिन गाममे रहलौं। गाम तँ गाम छी। सिरिफ नामेटा गामक नइ होइए। अथाह समुद्रोसँ गहींर गाम अछि। एकरंग जीवन गामक होइए। एक खान-पानक संग खेत-पथार पोखैर-इनारक संग गौंआँ-घरूआ वैज्ञानिक, डॉक्टर, इंजीनियर, वकील, प्रोफेसर सेहो ने गाममे रहै छैथ। ऐठाम हम ई नहि कहै छी जे जीवन-शैलीक चलैत गौंआँ रहितो गौंआँ जकाँ नहि छैथ।

मुनेसर बाबूक मनमे दू तरहक विचार ठहकलैन, पहिल ठहकलैन ई जे शहर-बाजार छी, सभ्य-सँ-सभ्यक रूप गढ़ि-गढ़ि लुच्चा-लम्पटसँ भरल अछि। के कखन जीवन खा लेत तेकर कोनो ठेकान नहि। दोसर ई ठहकलैन जे दुनियाँक कोनो कोणक मनुक्ख किए ने होथि, मुदा मनुक्ख तँ मनुक्ख छिआ। एक तत्त्वक बनल। तँए तात्त्विक गुण तँ एकरंगाह छैन्हे। ऐ संग ईहो नहि अछि जे दुनियाँक सात अरब मनुक्खमे एक-दोसरसँ किछु-ने-किछु विषमता सेहो अछिए। मुदा अपन विचारकेँ विचार भवनमे संजोगिकऽ राखि मुनेसर बाबू बजला-

"सियालाल, अहाँ कातमे ठाढ़ होउ, हम पाँतीमे लगि जाइ छी।"

दूध-तरकारी कीनि मुनेसर बाबू सियालाल काकासँ गप-सप्प करैत संगे-

संग अपना डेरापर पहुँचला।

ओसारक कुरसीपर सियालाल काकाकेँ बैसा भानसक कोठरी जा दूध-तरकारी रखि पहुँचला। मुनेसर बाबूक सेहो बेटा-पुतोहु काजपर सँ नहि घुमल छेलैन। ओना, मुनेसर बाबू परिवारमे रहितो अपन जीवनक आवश्यकताकेँ देखैत दिन भरिक माने 24 घन्टाक ओरियान अपन काबूमे रखने छैथ।

सियालाल काका लगक कुरसीपर बैस मुनेसर बाबू बजला-

"पहिने चाह पीब आकि पानि? अपने नियमित छी तँए चाह-जलखै कऽ नेने छी?"

मुनेसर बाबूक विचार सियालाल काका अदहे-छिदहे बुझलैन। अदहा-छिदहा बुझैक कारण भेलैन जे सियालाल कक्काक मन, गौंआँ-घरूआ पेब, तेना वौड़ा गेलैन जे अप्पन विचारक कोनो ठेकाने ने रहलैन।

सियालाल काका बजला- "भाय साहैब, अहाँकेँ देखि अपन गामक ओ बात मोन पड़ि गेल जे विद्यालयमे नेंगड़ा गुरुजी कहने रहैथ, वएह गाममे पढ़ै-लिखैक चहैट लोककेँ लगौलकैन।"

सियालाल कक्काक विचार सुनि मुनेसर बाबूक छाती दहैल उठलैन। बजला-

"सियालाल! जिनगी भरि गाममे रहलौं। गामेमे जन्म भेल, गामेमे पढ़लौं आ गामेक स्कूलमे नोकरी केलौं। तीन साल पहिने सेवा-निवृत्त भेलौं।"

सियालाल काका बजला- "केते दिनसँ ऐठीन छिऐ?"

'केते दिन' सुनि मुनेसर बाबूक मन भुमकम होइत कालक धरती जकाँ डोलए लगलैन। बजला-

"अपन मन तँ यएह छल जे जइ धरतीपर जन्म लेलौं, सेवा करैत ओही धरतीमे विलीन होइ, मुदा...।"

ओना, सियालाल काका बुधि-अकीलमे मुनेसर बाबूक पासंगो बरबैर नहि छैथ, मुदा जीवनो तँ समुद्र अछिए। विचारक प्रवाहमे प्रवाहित होइत सियालाल काका पुछि देलखिन- "से की कहलिऐ, भाय साहैब?"

हीय खोलि मुनेसर बाबू बजला- "सियालाल, अपना मात्र एकटा बेटा अछि, भैयारीमे असगरे छी। सेवा निवृत्त होइसँ दू साल पूर्व, पत्नी मरि गेली। मुदा

अपन सेवा-धर्मकेँ निमाहैत खेबा-पीबाक सभ बेवस्था अपने हाथे करए लगलौं। बेटा-पुतोहु बाहरे रहए लागल। अखन तक मनमे यएह छल जे अपन जीवन अपने हाथे निमाहि लेब, मुदा विचारमे मोड़ आएल, मोड़ आएल जे जहिना बालपनसँ उबड़ैले सहाराक जरूरत अछि तहिना वृद्धपनोक लेल अछिए। तँए ऐठाम आबि गेलौं।"

मुनेसर बाबूक विचारपर सियालाल कक्काक नजैर ओते नइ पड़लैन जेतेक अपन भाषापर पड़लैन, पड़बे नहि केलैन भाषेपर नजैर नाचि उठलैन। बजला- "अपना सबहक भाषा जकाँ मीठ, दुनियाँमे केतौक भाषा मीठ नहि अछि..!"

ओना, मुनेसर बाबूक मनमे ठहकलैन जे सियालाल ओहन बेकती अछि जे अपनो भाषाक जड़ि-पालो नइ बुझैए आ दुनियाँक भाषाक पनचैती करैए। मुदा एहेन जवाबो नइ देब जइसँ सियालालक मन मानि नइ लेत। मुनेसर बाबू बजला-

"सियालाल, सभक अपन-अपन भाषा जहिना मीठ लगै छैन तहिना ने अपनो सभक अछि।"

मुनेसर बाबूक विचार सुनि, हँसैत सियालाल काका उठिकऽ विदा होइत बजला- "अखन जाइ छी, काल्हि फेर आएब।"

एकाएक मुनेसर बाबूक मनमे उठि गेलैन जे किए ने सियालालकेँ भाषाक इतिहासे सुना दिऐन। जइसँ मनुक्ख आ भाषाक सम्बन्धक संग भाषा केना जन्म लइए, केना फड़ै-फुलाइए आ केना मरैए, एक संगे सभ बुझि जाइथ।

❑ **साभार: भाषाक बेथा, जगदीश प्रसाद मण्डल, 01 अक्टूबर 2022**

अखन तक मन यएह मानि रहल छल जे जे चोरी-डकैती करैए वा पौकेटमारी करैए, से सभ ने जेल जाइए। भेल तँ एतबे ने जे चोरी-डकैती-पौकेटमारीसँ अपनाकेँ परहेज कऽ ली, जेलक रस्ता बन्न रहत। मुदा अपना से नइ भेल, 'हो-हा'मे पड़ि गेलौं आ जेल चलि एलौं। कहब जे की 'हो-हा'मे पड़ि गेलौं?

सभकेँ बुझले अछि जे अपनो सभकेँ भाषो आ साहित्यो अछिए। मुदा अखन धरिक जे दुनू रहल माने भाषो आ साहित्यो, ओ बन्हेज रहल। बन्हेज ई जे जनमानसक बीच किछु सीमित सीमामे बन्ध रहल अछि। ओही बन्हेजकेँ बहुजन हिताय बहुजन सुखायक विचारसँ भाषा-साहित्य प्रेमी अपन उपस्थिति दर्ज करबैले आन्दोलन केलैन। अपने छह-पाँच बुझै नइ छी, समाजसँ जुड़ल सभ दिन रहलौं तँए समाजक काजकेँ अपन बुझि संग भऽ गेलौं। आन्दोलनीक नमहर जुलूस सड़कपर उतरल। गामक ब्रह्मस्थानमे गामक जुलूस एकत्रित होइक स्थान बनल। गामक ब्रह्मस्थान ई जे गामे-गामे अपन-अपन सभ गामक ब्रह्मस्थान अछिए अछि।

घरपर सँ जखन असगरे विदा भेलौं, तखन जहिना रविन्द्र बाबूक गीतांजलिक पाँती- 'एकला चलो रे..।' तहिना कबीर दासक पाँती, 'कबीर फिरा बजारमे..।' एकाएक सभ अपने-आप झक-झक मोन पड़ए लगल। किए ने मोन पड़ैत, अखन रणभूमिमे ने जा रहल छी, तब जँ करेज ओछ कऽ कए राखब तखन काज चलत। जहिना दुखसँ सुखक उदय होइए, मृतात्मासँ जीवात्माक उदय होइए, तहिना ने सत्ताविहीनसँ सत्तासीनक उदय सेहो होइते अछि, अही कारणेँ सत्तामे अपन उपस्थिति दर्ज करबैले जहल-पुलिसक डर मेटा जुलूसमे शामिल भेलौं।

गामसँ जुलूस निकैल थानापर पहुँचल। थाना देखि केते गोरेकेँ पियासे कण्ठ सुखए लगलैन जे पानि पीबै लाथे ससैर गेला, किछुकेँ रस्तेसँ पैखाना लागल रहैन ओ तँए ससैर गेला। किछु गोरे थानाक तड़की-भड़की देखि ससैर गेला, बँचैत-बँचैत गामक असगरे बँचि गेलौं। ओना, आन-आन गामक आन्दोलनी सभ डटल

रहला। अपना गामक असगरे बँचि गेल रही।

पचासक लगभग साहित्यकारक संग थानाक छहरदेवालीक बीच पहुँचल रही। बुझल बात अछिए जे दुर्गा सन माए सेहो बच्चाकेँ जहिना कना कऽ दूध पिअबै छैथ, तैठाम श्रमजीवीक माइक चरचे की। पचासो मिलि थानामे खूब हल्ला केलौं जे भूखे तबाह भऽ रहल छी, कियो खोज खबर लेनिहार नहि। एक्के तोड़क हल्लाक एते फल भेटल जे बदामक घुंघनी आ पानि अनलक। समय पाँच बजेक करीब सौंझुका भऽ गेल। बसमे बैस सभ जहल पहुँचलौं। पहिल गेट टपा बस घुमि गेल। तीन बेर गिनती भेल। माने दू बेर थानामे आ तेसर बेर जहलक गेटपर। गेटक भीतर, माने दोसर गेट टपला पछाइत सेहो सभक हुलिया भेल। हुलिया भेला पछाइत जखन भीतर गेलौं, तखन जेना भक टुटल। भक ई टुटल जे जिनकर मुख्य मुद्दा छिऐन, ओ पतनुकान नेने छैथ, आ हमरा सन लोक जहलमे छैथ, जिनकर सम्बन्ध भाषा-साहित्यसँ नहि छैन।

जहलक खेनाइ-पीनाइ जखन भऽ गेल, तखन वार्डमे पहुँचलौं। रौतुका खेनाइ बदामक घुघनीमे कटि गेल। जहलक तँ कम डर हुअए मुदा जे समाज उठिकऽ ठाढ़ भेला, माने साहित्यकारक समाज, हुनके ठेकान नइ छैन। खाएर जे छैन, मुदा अप्पन चिन्हार एकोटा ने रहैथ। मुदा अपना मनकेँ ईहो बुझबैत शान्त रहलौं जे गामो-समाजमे देखिते छी, जखन कियो पढ़ि-लिखि वा कमा-खटा जँ समाजक साम्य स्तर, स्तरक बदलावसँ उठैए, तखन हुनका आगू दुनू परिस्थिति बनैए। पहिल, समान्य समाजसँ सम्बन्ध विच्छेदन सेहो होइए आ दोसर समाज छेदन सेहो होइते अछि। खाइ-पीबैक हिस्सा तँ जहलमे कटि चुकल छल मुदा नव कैदी भेने ड्यूटी तँ बँचले छल।

❑ **साभार: बुझबे ने केलिऐ, जगदीश प्रसाद मण्डल, 05 अक्टूबर 2022**

गामसँ कोस भरिपर विद्यालय छैन।
तहूमे संस्कृत महाविद्यालय, जेकर की स्थिति
अछि से केकरोसँ छीपलो नहियेँ अछि। विद्यार्थीसँ बेसी
शिक्षके छैथ। जीवनलाल भाय अपन उपस्थिति बना,
एक-आध घन्टा संगी सभसँ गप-सप्प करै छैथ
आ घुमि कऽ अबै छैथ।

परसू वैज्ञानिक भाय मानसरोवरक यात्रापर निकलता। दूरक यात्रा, तँए एकटा संगीक खगता छैन्हे। ओना, अखन तक बहुतो यात्रा वैज्ञानिक भाय कऽ चुकल छैथ आ से देशक संग दुनियोँक, मुदा तइ सभ यात्रामे पत्नी संग दइ छेलैन। मुदा ऐ यात्रामे जीतनलाल भाय पत्नीकेँ संग नहि लऽ जाए चाहै छैथ। नइ लऽ जाइक विचारक पाछू कारण छैन जे एक तँ उमेरोक हिसाबसँ, दोसर अपन तँ फुहराम शरीरो छैन आ सभ दिन जे लोहा-लक्कड़क बीच काज केलैन तइसँ देहमे ताकतो छैन्हे। मुदा भौजी तँ भरि दिन डेरामे रहि खेबो-पीबो खूब करै छेली आ टी.बी., कम्प्यूटरक खेल देखैत-देखैत अथबलो भइये गेल छैथ, माने केतेको बिमारी सेहो पोसि नेने छैथ तँए वैज्ञानिक भाइक मनमे शंका छैन जे जँ पत्नीकेँ संग करब तँ अपन मदत कि हएत जे अपने भरि दिन हिनकर टहल-टिकारो करए पड़त, तँए नहियेँ लऽ जाएब नीक। हमरा, ओना हमर नाओंए सेवालाल छी मुदा आब ओते ऊहिये ने रहल जे मानसरोवर सन रस्ताकेँ पार करब। ओहन-ओहन रस्ताक ठेकाने रहत, आकि दिशांसे नइ लागत सेहो ठीक अछि। तँए, जाइने कऽ वैज्ञानिक भाय हमरा नहि कहलैन। हँ, मैझला भाय–जीवनलाल भाय जे गामेमे रहि विद्यालयमे नोकरी करै छैथ। माने गामसँ कोस भरिपर विद्यालय छैन। तहूमे संस्कृत महाविद्यालय, जेकर की स्थिति अछि से केकरोसँ छीपलो नहियेँ अछि। विद्यार्थीसँ बेसी शिक्षके छैथ। जीवनलाल भाय अपन उपस्थिति बना, एक-आध घन्टा संगी सभसँ गप-सप्प करै छैथ आ घुमि कऽ अबै छैथ। यएह हुनकर सभदिना रूटिंग छैन। प्रोफेसरक दरमाहा सेहो पबिते छैथ जइसँ परिवारोक भरण-पोषण नीक जकाँ

होइते छैन। तँए, जीवनलाल भाय बेसी उपयुक्त रहतैन। वैज्ञानिक भायकेँ सेहो जीवनलाल उपयुक्त संगी बुझि पड़लैन। जीवनलालकेँ लगमे बजा वैज्ञानिक जीतनलाल भाय कहलखिन- “बौआ, मानसरोवर जाइक विचार मनमे बहुत दिनसँ अछि मुदा समय नइ पबै छेलौं, तँए नहि गेल भेल। ऐबेर समय पेलौं हेन, जेबाक विचार भऽ गेल। दूरक यात्रा छी तँए जँ दुनू भाँइ संगे चलब तँ नीक रहत।”

मानसरोवरक जे आध्यात्मिक परिचय अछि ओ जीवनलाल भाय जनै छैथ, तँए जेबाक कोनो तेहेन जिज्ञासा मनमे नहि जगलैन। ओना, नवकबरिये उमेरमे माने तीसे-बत्तीस बर्खक अवस्थामे जीवनलाल भाय मानसरोवरक यात्रासँ भऽ आएल छैथ जइसँ रस्ताक दुर्गमता अखनो ओहिना मनमे नचै छैन। मुदा वैज्ञानिक भाइक मनमे किए एहेन विचार ऐ उमेरमे एलैन ओ मने-मन जीवनलाल भाय विचारए लगला। मानसरोवरक एहेन रस्ता अछि जैठाम जेबा-ले केतबो गाड़ी-सवारीक सुविधा किए ने भेल मुदा पएरे तँ ओहन रस्ता चलै पड़त जइमे माघो मासक शीतलहरीक जाड़सँ बेसी जाड़ अछि। तेतबे नहि, रस्तो तेहेन उभर-खाभर अछि जे केतए पिछैड़ कऽ खसब आकि ठेँस लागत तेकरो ठीक नहियेँ अछि। ओहन जगहपर जँ जीतनलाल भायकेँ जेबाके छेलैन तँ ओइ उमेरमे जइतैथ जइ उमेरमे सभ किछु बरदास करैक शक्ति देहमे छेलैन। आब जखन बुढ़ भेला हेन, साठि बर्खक उमेर भेलैन हेन तखन मानसरोवर जाइले तैयार भेला हेन। एकरा नेनमैत कहब की नहि? मरै बेरमे जँ बुधिक बखारीए माथमे घोंसिया जेतैन तँ ओकरा लइये कऽ की करता? जाबे नियार-भास करता तइ बिच्चेमे जँ बखारी टुटि कऽ खसि पड़तैन तखन? तहूमे रस्तेमे जँ केतौ मरि-हरि गेला तखन तँ सेहो ने पेब सकता जे पबैक विचार मनमे जोर मारने छैन! मुदा जेठ भाय होइक नाते की बाजब से तँ विचार जीवनलाल भाइक मनमे उठिये गेल छेलैन। ओना, मन निर्णित छेलैन जे कोनो हालतमे जेबाक नहि अछि। मुदा जेठ भाय तँ पिता तुल्य होइ छैथ, आदेशो नइ मानब सेहो केहेन हएत। तँए मुँह बन्न केने जीवनलाल भाय मने-मन विचारैत वैज्ञानिक भाइक आगूमे ठाढ़ छला। ..जीवनलाल भायकेँ गुम-सुम ठाढ़ भेल देखि वैज्ञानिक भाय दोहरबैत बजला- “बौआ, किछु हँ-हूँ नहि बजलह?”

❑ **साभार: मानसरोवर यात्रा, जगदीश प्रसाद मण्डल, 31 जुलाई 2018**

“अहाँ अपन तैयारी ठीक राखू संगी भेटबे करत। जखन चोरोकेँ संगी भेटै छै, झूठो बजनिहारकेँ संगी भेटै छै तखन सौधकेँ माने शुद्धकेँ, किए ने संगी भेटत।”

वैज्ञानिक भाइक मन मानि गेलैन जे अपने ने घर-दुआर, गाम-समाज छोड़ि बाहर रहलौं, मुदा जीवनलाल तँ सभ दिन गाममे रहि आर्थिको उपारजन केलक आ समाजक सेवो केलक। तँए, ओकरो अपन जीवनो छै आ जीवनक गतिविधियो तँ छइहे। वैज्ञानिक भाइक मनमे धाँइ-दे खसलैन- केकरो जीवनमे बाधा उत्पन्न करब सभसँ पैघ अपराध छी। तहूमे जँ ऐ सालक (माने जनवरीक पछातिक) काज रहैत तँ ओकरो आगूओ बढ़ाएल जा सकै छल, जेना लोक सराधक (श्राधक) भोजो आ किरियो-कर्म बरखी दिन-ले रखि लइए। मुदा ई तँ जीवन-मृत्युसँ जुड़ल अछि। ओना, जीवन-मृत्युसँ जुड़ल अनेको प्रश्न जुड़ल अछि। मुदा जीवनक प्रति लोकोक तँ अपन-अपन नजैर अछिए। जहिना करोड़ो-अरबो लोक अछि तहिना करोड़ो-अरबो नजैर सेहो अछिए। कियो पानिसँ हल्लुक हवाकेँ आ कियो माटिसँ हल्लुक पानिकेँ तँ कियो पाथरसँ हल्लुक माटिकेँ बुझैए। मुदा अपन-अपन जगहपर सभ भारियो अछि हल्लुको अछिए। पानिक जँ समुद्र छी, माने पानियेँ समुद्र छी तहिना पाथरेक पहाड़ो छी, माने पहाड़े पाथरो छीहे। तही बीच ने झंझटो अछि आ मिलान सेहो अछिए। अफ्रीकाक जंगल कहियौ कि सहाराक मरूभूमि कहियौ आकि रामवन कहियौ कि वृन्दावनक कृष्णवन, सबहक बीच तँ जीवन चलिये रहल अछि..! वैज्ञानिक भाय अपन विचारक अस्तित्वकेँ असथिर कइये ने पेब रहल छैथ। मनक ओजकेँ शरीरक ओजसँ मेल-मिलाप भइये ने रहल छैन। असोथकित होइत वैज्ञानिक भाय बजला- “बौआ, मनमे जखन रोपि नेने छी जे मानसरोवर जेबे करब तखन तँ भेल जे एकटा संगी रहने कने नीक होइ छइ।”

वैज्ञानिक भाइक सहमैत विचार देखि जीवनलाल भाय बजला-

“भाय साहैब, व्यक्तिगत हमर खगता नइ ने अछि, संगी चाही, तइले अहाँ

चिन्ता जुनि करू। अखने हम गाम दिस जाइ छी, मानसरोवर चलैक हरविर्ड़ो कऽ देबइ। पुरुख-पातर जँ संगी नहियोँ हेता तैयो दसटा जनीजाति संगी हेबे करती।"

ओना, जीवनलाल भाइक विचार सुनि वैज्ञानिक भाइक मन जुड़ेलैन, मुदा शंका ईहो भेलैन जे जँ दसटा जनीजाति संगी भऽ जाएत तखन दसोक हिसाब-बारी लगबैमे दस गुणा काज बढ़िये जाएत...।

सामंजस करैत वैज्ञानिक भाय बजला-

"जँ दसटा भऽ जाथि तखन तँ सर्वोत्तम भेल। नहि तँ एकोटा जँ भऽ जाथि तैयो एक मानसरोवर कि जे सइयो मानसरोवर जाएब असान भऽ जाएत किने।"

जीवनलाल भाय बजला-

"भाय साहैब, हम ते असगरे गेल रही, कहाँ केतौ भियौन लागल?"

'भियौन' सुनि वैज्ञानिक भाइक मन सुरखुरेलैन। सुरखुराइते मनमे उठलैन-नारदजीकेँ कोन संगी छेलैन जे चौदहो भुवन आ तीनू लोक घुमै छला..? नारदजीक घुमब मनमे अबिते वैज्ञानिक जीतन भाइक चेहरापर स्वीकारोक्तिक भाव झलकए लगलैन। जेकरा देखिते जीवनलाल भाय बजला-

"अहाँ अपन तैयारी ठीक राखू संगी भेटबे करत। जखन चोरोकेँ संगी भेटै छै, झूठो बजनिहारकेँ संगी भेटै छै तखन सौध (शुद्ध) केँ किए ने संगी भेटत।"

❑ साभार: मानसरोवर यात्रा, जगदीश प्रसाद मण्डल, 31 जुलाई 2018

अनेरे जे हम दुनियाँक इतिहास-भूगोल बुझैले जे दुनियाँ वौआएब ओ ओते नीक नहि, जेते अपन आ अपन गाम-घरक इतिहास-भूगोल जानब हएत।

काल्हि जखन दिनेश भाय साहित्यिक सम्मानसँ सम्मानित भेला, तखनसँ आइ चारि बजे तक बेचैनीक जिनगी कटैत साढ़े चारि बजे चैनक जिनगीमे पहुँचला अछि। साढ़े चारि बजेक समय जे दिन-रातिक बीचक हॉट लाइन, माने दू देशक बीचक सीमा-भूमि जकाँ अछिए। भिनसुरका समय रहैत तखन तँ पुरबा हवाक लहकी रहैत मुदा से तँ छी नहि, बेरुका समय छी जे पछिया हवाक पाड़क बीच अछिए। रौतुका पहिल पहर लगिचाएल रहै छै तँए हॉट लाइनिक हिस्सेदार मानल जाइए। ओना, हॉट लाइनिक अपन गुण-अवगुण अछि। माने, जहिना सीमाकातक खेतक मूल्य बेसी होइए, मुदा बेठेकानो तँ अछिए जे हॉट लाइनिक बगलमे पड़ैए, कखन कोन देश केमहर घुसकाएत तेकरो ठेकान नहियेँ अछि।

असगरे दरबज्जापर बैसल दिनेश भाय गायत्री मंत्रक जप जकाँ पहिल समीक्षा अपने-आपक शुरू केलैन। काल्हिसँ पूर्व धरि मन-मनुक भारसँ स्वतंत्र छेलौं जे स्वतंत्र जिनगी जीनिहार जनै छैथ। ओ नीक जकाँ जनै छैथ जे केना सेवा छिड़िया-छिड़िया बीतिया कऽ धरतीपर पसरैत गेल आ अपने सेवा विहीन रहलौं। मुदा आइ तँ से नहि छी।

जीवनक प्रभात बेलाक प्रथम रश्मिक गन्ध जकाँ दिनेश भाइक मनमे महकलैन। महकलैन ई जे अखनो साहित्य वएह गीत अलापि रहल अछि जइ अलापक बीच समाजक उजाड़ि भेल जे अपन कुदरूप चेहरा नेने समाजक बीच ठाढ़ अछि। जेकर फलाफल सभक सिरचढ़ अछि। मुदा तइ सिरकेँ सिरचढ़ रहितो धरतीमे रोपनहि छी.!

विचारधाराक बीच दिनेश भाइक मनमे प्रश्न उठलैन जे आइये नहि बहुत पहिनहिसँ निर्गुन धारा आ सगुन धारा बहैत आबि रहल अछि। एक मूर्त रूप भेल आ दोसर ज्ञान रूप भेल। मुदा दुनू छी की, माने ई जे मानि लिअ कुरसी अछि,

जेकर वस्तु-रूप ‘मूर्त रूप’ भेल आ शब्द रूप भेल जे ‘कुरसी अछि’। ..जे एकटा साधारण प्रश्न अछि तइ पाछू सभ बेहाल छी। की एक्कैसमी सदीक वैज्ञानिक युगक मनुक्खक यएह सोच अछि। एक-एक शब्दक खेल एहेन चलि रहल अछि जे सभक टीकेकेँ, गोनू झा जकाँ जाइठमे ओझरा देने अछि। एकटा धर्ममे शब्दक हजारो रूप आ हजारो व्याख्या अछिए।..एकाएक दिनेश भाइक मनमे उठलैन जे काल्हि तक जे दृष्टिकोण छल, ओइपर जखन दृष्टिपात कऽ लेब तखन ने पात्रक गढ़ैन हएत..।

दिनेश भाइक विचार आगू बढ़ि जखन पाछू दिस तकलकैन तखन समाजक बीच साहित्यिक परिचितिक पन्ना उनटलैन। पन्ना उनैटते देखलैन जे अखन तक जे समाज आ साहित्य रहल ओ अस्त-व्यस्त रूपमे रहल जइसँ दुनू अपन बेवस्थित रूप नहि बना सकल। ..अनायास दिनेश भाइक दृष्टिमे संचरण हुअ लगलैन। संचरित ई भेलैन जे अनेरे जे हम दुनियाँक इतिहास-भूगोल बुझैले जे दुनियाँ वौआएब ओ ओते नीक नहि, जेते अपन आ अपन गाम-घरक इतिहास-भूगोल जानब हएत।

इतिहासो-भूगोल कि कोनो हेराएल अछि, दुर्गा-भगवतीक प्रसादक विहित जानि लिअ, भोजनक विन्यासक परिचय भऽ जाएत। ऐठाम भगवतीक दू रूप-साकठो आ वैष्णवो छैन, अपन प्रसादक गुण गुना लिअ। जँ से नहि तँ कोनो तरकारीक विन्यास गुणि लिअ आ ओकर इतिहास देखि लियौ। केना तिलकोरक पात आगिमे पका कऽ चटनी बनल आ वएह पात केना धार पकैड़ आगू बढ़ैत तरूआ तरकारीक सिरचढ़ भऽ गेल। तहिना गाम-गामक बाधमे अन्न ओगरनिहार रखबार केना खोपड़ी बना शीत-रौद, झाँट-बरखाक चोट सहैत जिनगी जीबैत आबि रहल अछि आ तहिना तीन मंजिला मकान सेहो तँ अछिए। ..गामक भूगोल एतबे बुझू जे जइ गामसँ पाँच कोस धार हटल अछि, ओ चहटी भूमि भेल आ जे सटल अछि ओ कोसी-कमला-वागमती इत्यादिक नैहर भूमि भेल।

❑ **साभार: जीवनक सम्बन्ध, जगदीश प्रसाद मण्डल, 08 अक्टूबर 2022**

“ऐमे तोरा संगे विचारने काज नइ चलत। ई चलत पच्चीस हाथ ऊपर बनल आसनपर बैसल महंथजी आ एक्कैसम तल्लापर बैसल सेवन-जी इंजीनपर हिसाब जोड़बैत सट्टा-बजारी सभसँ। तँए, अनेरे कोन लपौड़ीमे पड़ै छह जे मुड़ीकट्टाकेँ लोक लतियौलक।”

केतबो दुनियाँक रंग-रूप अगुआएल-पछुआएल, मुदा अपन धारणाक रूप अखनो ओहिना अछि जे दरिद्र नारायण सभसँ पैघ भगवान छैथ। जिनका धक्का मारि आरो धकेलल जा रहल अछि। सभ गाँधीवादीए छी, देशक शासनो गाँधीवादीए विचारसँ चलि रहल अछि, मुदा दरिद्र नारायण भगवानक सेवक केते छैथ आकि नइ छैथ, ओ तँ दरिद्र नारायणक हृदयमे बैसल देखैत हेता।

चारि बजे बेरुका समय, अपन एहेन धारणा बनि गेल अछि जे कमसँ कम दू घन्टा समय अपनासँ बेसी उमरदारक संग रहि जीवनक लीलाकेँ देखै-सुनैमे लगाबी। जइसँ हुनकर अतीतोक जीवन गाथा सुनबो करै छी आ वर्तमानक की स्थिति छैन सेहो लगसँ देखै छिऐन। किए तँ बुझले अछि जे शिकारी औत, जाल बिछौत, दाना छीटत, लोभसँ ओइमे नइ फँसब आ फँसि जाइ छी सभ.! की तइसँ कम शिकारी अपने सभ छी, जे माए-बापकेँ भगवानोसँ ऊपर बुझै छिऐन, मानै केते छिऐन से नइ कहै छी मुदा देखै की छी? ..की आँखिक देखल फुसिया जाएत? मनमे जेना उदवेग जगि गेल, तँए विचार केलौं जे एहेन नइ करब जे चिन्हारकेँ अनचिन्हार डॉक्टर लग पहुँचा अनचिन्हारकेँ चिन्हार मानि ली। मनक जे उद्वेग छल तइ अनुकूल सूरतलाल काका छैथ। विदा भेलौं।

दरबज्जाक ओसारक चौकीपर असगरे बैसल देखि मनमे खुशी भेल जे भरि मन गप-सप्प करैक समय भेटल। कनी फरिक्केसँ दुनू हाथ जोड़ि बजलौं- “काका, गोड़ लगै छी।”

जहिना अपने दुनू हाथ जोड़ि गोड़ लगैक उपक्रम केलौं तहिना सूरतलाल काका सेहो दुनू हाथ जोड़ि मुड़ी झुका लेला। मुहसँ तँ किछु नहि बजला मुदा हाथक

इशारासँ लगेमे बइसैले कहलैन। लगमे बैसते मनमे उफनए लगल जे किए ने अपन प्रश्न उठाबी। मुदा नाङ्गट प्रश्नो उठाएब तँ नीक नहियेँ हएत, तँए सवस्त्र करैत बजलौं- “काकाजी, की कहब! तेहेन-तेहेन लीला सभ भऽ रहल अछि, जेकरा देखि तामसो उठैए आ हँसियो लगैए।”

जिज्ञासा करैत सूरतलाल काका बजला- “से की?”

‘से की’ सुनिते जेना मनक सभटा विचार हेरा गेल आ एक्केटा जीवित रहल, बजलौं- “काका, भूत आब बिला गेल.!”

ओना, अपने सेहो अपनाकेँ गमैया खेलाड़ी बुझिते छी, मुदा सूरतलाल काका नमहर खेलाड़ी छैथ, तँए महजाल जकाँ तत्काल तँ नहि बुझि पड़त जे जालमे फँसल छी, मुदा आगू तँ फँसले छी। एहेन विचारकर्ता सूरतलाल काका छैथ। सूरतलाल काका बजला- “भूत की कोनो आइये बिलाएल। ओ तँ तहिये बिला गेल जहिया बघाएलक मुँह बना घरपैसा शिकारी भेल।”

इमनदारीक बात जे अपना विचारे सूरतलाल काका बाजल छला मुदा अपने नीक जकाँ नहि बुझि पेलौं तँए पाशाकेँ फेड़-फाड़ करैत बजलौं- “काका, हमर बात दोसर अछि। हमर अछि जे आमक गाछीमे जे आम बीछैकाल ढकियामे सँ आम चोरा लइ छल, से भूत बिला गेल।”

अपन विचारकेँ जोरदार बनबैले आरो विचार सभ पेटेमे छल कि बिच्चेमे सूरतलाल काका कण्ठ टीपैत बजला- “भूत बिला गेल आकि गाछी-कलम उपटने भूतो उपैट गेल।”

आनठाम तँ बैसल नहि छेलौं, छेलौं तँ सूरतलाल काका लग बैसल, तँए उट-पटांग किछु बाजब अपन खिन्नता हएत। पाशामे मोड़ दैत बजलौं- “काका, अहाँ मोबाइल नइ ने देखै छी, मुदा अपने तँ पत्नीकेँ भार दऽ देने छिऐन जे अहाँ खेला-पीला पछाइत एतेकाल मोबाइल देखू जे सुनैत-सुनैत हम नीन पड़ि जाइ।”

मोबाइलिक नाम सुनि आकि एकैसमी सदीक मनुक्खक चेहरा देखि सूरतलाल काका ओहिना ठमकला जहिना गणेशजी महाभारतक सैयम श्लोकपर जा ठमकै छला। काकाकेँ ठमैकते अपना गड़ भेटल। बजलौं- “काका, अहाँ जमानामे आमक गाछीमे भूत आम चोरबै छल, अखुनका भूत बच्चा सभकेँ

चोरबैए।”

सूरतलाल काका जानिकऽ अनजान बनल रहला आकि वास्तविक अनजान से तँ सूरतलाल कक्काक मन जनतैन मुदा अनजान जकाँ बजला- “से की?”

सूरतलाल कक्काक जिज्ञासा देखि अपनो मनमे उत्साह जगल जे एकटा वीर पुरुष लग बाजि रहल छी। बुझल अछिए जे गैंची माछ जकाँ मनुक्खो आ समाजोक लोक गैंचियाह गति चलिते अछि। बजलौं- “काका, जुग बदैल रहल अछि आ अहाँ जेतए-के–तेतइ छी। लगैए तँए अहाँ ई सभ नइ देखि रहल छी, मुदा हम तँ से नइ छी, जुगक संग नइ चलब से नइ बनत। तँए पनरह हजारक मोबाइल पत्नीकेँ देने छिऐन। वएह साँझू पहरमे सभदिन किछु-ने-किछु सुनबै छैथ। वएह कहली जे एकटा एकरंगा बबाजीकेँ मुड़ीकट्टा कहि, गामक लोक खूब लतियौलक।”

बिच्चेमे सूरतलाल काका टोकलैन- “किए लतियौलक?”

जेतबे बुझल छल तेतबे ने बाजब। आकि अपना दिससँ जोड़ि-घटा देब। भाय, दर्शक छी! दर्शक जकाँ निष्पक्ष भऽ दुनियाँकेँ देखबो करब आ बजबो करब.! बजलौं- “काका, ऐसँ बेसी नइ बुझल अछि।”

मुदा तैयो सूरतलाल काका टिपीए देलैन- “राजा-रजबारक भूत ते ने मेटा रहल अछि आ कल-कारखानाक भूत चढ़ि-चढ़ि मोबाइलमे फड़िए रहल अछि किने।”

अपने की बजलौं आ सूरतलाल काका की बजला, से दुनू गोरे पेटे-पेट जनै छी, तैयो सूरतलाल काका बजला- “ऐमे तोरा संगे विचारने काज नइ चलत। ई चलत पच्चीस हाथ ऊपर बनल आसनपर बैसल महंथजी आ एक्कैसम तल्लापर बैसल सेवन-जी इंजीनपर हिसाब जोड़बैत सट्टा-बजारी सभसँ। तँए, अनेरे कोन लपौड़ीमे पड़ै छह जे मुड़ीकट्टाकेँ लोक लतियौलक।”

सूरतलाल कक्काक विचारक प्रवाहमे अपने भँसिया गेलौं, भँसियाएल लोक जकाँ बजा गेल- “ठीके किने, काका..!”

बिचरैत विचारक प्रवाहमे आकि अपन पिपाशु मनक पियासकेँ तृप्त करैत, सूरतलाल काका बजला- “बौआ सुनरलाल, अपन आयु अन्तिम सीमा लग पहुँच गेल अछि, तँए जँ अपनो जीवनक निमरजना, अपने सम्हाइर लइ छी, तँ यएह भेल

अपन वर्तमानकेँ देखि जीवनक रस्ता चलब।”

सूरतलाल कक्काक विचार नीक जकाँ, माने हुनक विचारानुकूल तँ नइ बुझलौं, मुदा किछु नहि बुझलौं सेहो बात नहियेँ अछि। उत्साहित भऽ कऽ भरोस दैत बजलौं- “ठीके किने, काका?”

हमर उत्साहसँ आकि अपन उत्साहित होइत जीवनक प्रवाहमे, सूरतलाल काका बजला- “बौआ सुनर, गाममे हम आ प्रभु लंगोटिया संगी छी।”

‘लंगोटिया’ शब्द नइ सुनने छेलौं, तँए खढ़िया जकाँ कान ठाढ़े रहल। कान ठाढ़ भेल देखि सूरतलाल काका बुझि गेला। शब्दकेँ सोझरबैत बजला-

“लंगोटिया शब्दक प्रयोग अपना ऐठाम दू जगह होइए। पहिल होइए जैठाम दू आकि तीन-चारि बच्चाक जन्म एक समयमे भेल आ ओ लंगोटा पहीरि एकठाम खेलाइए आ दोसर, लंगोटा पहलमानीक प्रतीक चिन्ह सेहो छी जे पहल करैक दिशा बुझि कटै-मरैले लंगोटा पहीरि लइए।”

पेटमे रूकल जेते साँस छल, से जेना सभ एक्केबेर निकैल गेल। जइसँ मन हल्लुक भेल। टोकलयैन- “काका, प्रभु ककाबला विचार छुटि गेल।”

सूरतलाल कक्काक मन प्रशान्त महासागरक जल जकाँ शान्त भऽ गेलैन। शान्त चित्तसँ बजला- “बौआ सुनर! अस्सी बर्खसँ दुनू गोरे, माने अपनो आ प्रभुओलाल, संगी छी, एक गोरेक मृत्यु दोसर गोरे देखबे करब। मुदा जे कलाकारी प्रभुलालमे छैन ओ अपनामे नइ रहने समाजसँ टुटबो करै छेलौं आ फेर जुड़ैमे अनेको बरख लगियो जाइ छल।”

सूरतलाल कक्काक तुलनात्मक विचार नीक जकाँ नइ बुझलौं। कलाकरी तँ हजारो रंगक अछिए, बजलौं- “काका, कने फेर दोहरा कऽ कहियौ।”

खरिआइर-खरिआइर पुछैक माने होइए ओइ शब्दक वस्तुकेँ जानैक लीलसा। सूरतलाल काका बजला- “सुनर, ऐगला विचार आगू दिन कहबह मुदा अखन एतबे बुझह जे वस्तुक बारीकी आ शब्दक लोच, प्रभुलालमे बेसी अछि, जे आब बुझलौं।”

❑ साभार : गैंचाह लोक, जगदीश प्रसाद मण्डल, 11 अक्टूबर 2022

“बौआ! खिस्सा-पिहानी जीवन नइ छी, मुदा छीहो, जखन जीवन खिस्सा बनि पिहानी बनैए तखन जीवन आ जीवन गाथा भेल, नइ तँ जुअनकी फूसि नहि, बुढ़िया फूसि भेल.! जे मनमे छह ओ खोलि कऽ बाजह।”

छठि पाबनिक प्रात, बुझल बात अछिए जे सभ पाबैनमे टटका-टटकी प्रसाद वितरण होइए आ छठि पाबैनमे परात भने। एकर माने ई नइ बुझब जे किसानी जीवनमे पहिने श्रम आ धनक क्षय होइए पछाइत फल भेटैए। कृत्यानन्द काका असगरे दरबज्जापर बैसल मने-मन सुमैर रहल छला जे चौथाइ जीवनक आशापर पानि फेरा गेल।

एक बीघा जमीनबला किसान कृत्यानन्द काका छैथ। आब तँ जीवनक अन्तिम चरणमे पहुँच गेल छैथ, मुदा अपन जीवनक खुशहालीसँ अखनो खुश छथिए। हाइ स्कूलसँ आगाँ स्कुली शिक्षा नहि पाबि सकला। किसान परिवारमे जन्म भेलैन तँए किसानी जिनगीक अतिरिक्त ने कोनो जिनगीक प्रभाव मनमे पहुँचल छेलैन आ ने कोनो दोसर जीवन-धारणक धारणा उपकल छेलैन।

भिनसुरका आठ बजेक समय, जेठ मासक आठ बजे भिनसरो तीख वा तीखर लगए लगैए मुदा कातिक मास तँ से नहि छी। तहूमे शरद ऋृतुक अन्तिम अवस्था सेहो छीहे, तँए समयमे ओहन मादक शक्तिक सृजन भइये रहल छल जे समयकेँ महमहौने अछिए।

पढ़ाइ छोड़ला पछाइत कृत्यानन्द काका अपन विचार व्यक्त करैत पिताकेँ कहलखिन- “बाबू, अहाँ सभक जे किसानी जीवनक जे ढर्ड़ा छल ओ पुरान पड़ि गेल। देखिते छी जे अल्हुआ-सुथनी खा-खा दाइ-माइ सभ पाबनिक फलहार करै छेली से आब मिसरीक बच्चा खा-खा फलहार करै छैथ।”

मिसरीक बच्चाक माने जागेसर बाबा नीक जकाँ बुझि गेला जे ठोस तँ भेल मुदा छोट-छोट टुकड़ीमे, बुझि-सुझिकऽ बजला- “बौआ! खिस्सा-पिहानी जीवन नइ छी, मुदा छीहो, जखन जीवन खिस्सा बनि पिहानी बनैए तखन जीवन आ

जीवन गाथा भेल, नइ तँ जुअनकी फूसि नहि, बुढ़िया फूसि भेल.! जे मनमे छह ओ खोलि कऽ बाजह।”

पिताक विचारकेँ आदेश मानि कृत्यानन्द काका बजला- “बाबू, आब हम जवान भेलौं तँए कोदारि पाड़ि खेतीक भार हमर रहल आ अहाँ ऐसँ हल्लुक काज गाय पोसब अछि, ओकर भार अपना जिम्मामे लिअ। जहिना राजा दिलीप गाइये पोसि दिलीप भेला, गाइयेक राजा खिरहरि भेला आ तहिना गाइये चरा कऽ कृष्णो भेला, अहूँ सएह करू।”

एक तँ समाजमे अदौसँ गाए- पोसाइत आबिये रहल अछि, तहूमे गाए एहेन पशुधन छीहे जे दूध सन अमृत फल पैदा करैए, तैसंग समाजक कोनो जाति वा सम्प्रदाय नहि छैथ, जिनका गाए पोसैक स्वतंत्रता नहि छैन। ई दीगर भेल जे एहनो लोक समाजमे छथिए जे भूमि छेदनकेँ प्रतवाए बुझै छैथ। ऐठाम ई नइ बुझब जे अपने हाथे जे पानियोँ कलपर सँ आनि नहि पीबै छैथ ओ केना गाए सम्हारि पौता। एहेन धारणा तँ दुनू बापूत माने जागेसर बाबा आ कृत्यानन्द कक्काक बनले छेलैन जे परिवार आगू बढ़ि खुशहाल हुअए। बिनु पढ़ल-लिखल रहितो जागेसर बाबाक मनमे ई उठबे केलैन जे खेतीक काज सम्हारैसँ गाइक सेवा धरि नमहर काज भइये जाइए जइसँ काजमे छिगरी-तान हएत। नव उत्साहसँ कृत्यानन्द कक्काक मन भरल रहैन, माने भेल जे जहिना देशक आजादीक दौड़मे राजनीतिक चेतनाक बाढ़ि आएल छल तहिना लाल बहादुर शास्त्रीजीक बहादुरीक आवाज किसानी जीवनपर पड़बे कएल। ओना, नमहर देश भारत अछिए। कहब जे दुनियाँक सभ देशसँ भारत देश नमहर अछि? नहि, भारतसँ नमहर-नमहर आरो सातटा देश अछि। मुदा भारतो ओहन देश अछिए जेकर आँट-पेट माने क्षेत्रफलो आ जनसंख्योक हिसाबे, पचासो देशक बरबैर सेहो अछिए। खाएर जे अछि ओ भौगोलिक बात भेल। ऐठाम कृत्यानन्द काका आ जागेसर बाबाक बीचक बात छी। अखन धरि जे परिवारक बीच विचारधारा अबैत रहल अछि ओ एहेन रहले अछि जे जहिना कोनो धार अपन उद्गम स्थानसँ निकैल आगू मुहेँ प्रवाहित होइत समाज रूपी समुद्रमे पहुँचैए तहिना प्रवाहित होइते आबि रहल अछि।

❑ **साभार: अन्तिम आशा, जगदीश प्रसाद मण्डल, 17 अक्टूबर 2022**

आस्थाक नामपर दूषितो अपने सभ करै छिऐ आ प्रदूषण-मुक्त आन्दोलन सेहो अपने सभ करबै, यएह तँ खेल छी। कोनो रोगक इलाजक तँ यएह ने नीक रस्ता हएत जे ओइ बीमारीकेँ रोकि ओकर जड़ि-उकनन करी। मुदा से देखि की रहल छिऐ?

प्रकृतियोकेँ अजीव लीला अछि। कोनो-कोनो साल मन असथिर केने धीर भेल तँ समयक संग अपनाकेँ जोड़ि एकउमेरिया बहिना जकाँ हँसैत-हँसैत चलैए आ कोनो-कोनो साल अपनो जान अवग्रहमे लइए आ लोकोक तँ लइते अछि। जेठ मासक आधा समय खपि गेलापर जहिना बाढ़ि चलि अबैए जइसँ जान-अनजान अनेको रंगक वस्तु-जात नष्ट होइते अछि, तहिना ऐबेर लछमीपुर गाममे दुर्गापूजाक यात्रा दिन भेल।

जेठ मासक बाढ़िसँ, माने सालक पहिल बाढ़ि ऐने, धारक पेटमे राखल वस्तु-जात, जे अनुमानित बाढ़िसँ पहिनहि सैंत लेल जाइए, मुदा अनुमानो तँ अनुमान छी, नीक-बेजाए दुनू होइए। लछमीपुरक दुर्गापूजामे सेहो जेठुए बाढ़ि जकाँ भऽ गेल। धमगज्जर मारि-पीट भऽ गेल। धमगज्जर ई जे बेठेकान मारियो भेल आ बेठेकान तेकर कारणोँ भेल। कहब जे दुर्गास्थानमे मारि भेल आ दुर्गाजी मुँह देखैत रहली? मुँह नइ देखैत रहली, साले-साल ने हुनका महिषासुर वध करए पड़ै छैन, तँए ओ अपना धुनिमे लगल छेली, जइसँ मेलापर नजैर नइ पड़लैन।

समाजक लोकोक लीला अपरमपार अछिए। एक-दोसराक बीच जहिना मुँह-मिलानी अछि तहिना मुँह-दुसानी सेहो अछि आ तैसंग मुँह-कटानी नइ अछि सेहो बात नहियेँ अछि, सेहो अछिए। जहिना अनके दिस देखैमे अपन रस्ता हेरा जाइए तहिना अनका दुसैमे सेहो अपन दोख झँपाइये जाइए। एक-दोसराक बीच जाइतिक वैमनस्यता, साम्प्रदायिक वैमनस्यता आ आर्थिक वैमनस्यताक संग-संग समाजक सौहार्दपूर्ण वातावरणक वैमनस्यता सेहो पसरले अछि। ओना, हमरा सन सामान्य लोक यएह बुझै छैथ जे दूटा कोनो वस्तु हुअए, जे दुनू एक्के रेशियोमे

तीत-मीठ किए ने हुअए, मुदा अपना सभ यएह ने कहै छिऐ जे तीतकेँ बेसी तीत आ मीठकेँ कम मीठ कहै छिऐ। यएह तँ समाज छी। सभ रंगक रूप लोक पकड़नहि अछि। केतौ वैशालीक जनतंत्रक चर्च होइए जे अढ़ाइ हजार बरख पूर्वसँ हमर जनतंत्र अछि आ केतौ किछु.., मुदा आजुक परिवेशकेँ देखि की कहल जा सकैए जे एते पुरान जनतंत्र परिपक्व केते भेल अछि?

कोनो देशक वा समाजक जनतंत्र ओइठामक जीवनक मूल समस्याकेँ पकैड़ जीवनकेँ केतेक आसान बनौलक, यएह ने भेल परखैक दिशा। समाजमे आस्था कहि अनास्था केना कएल जा रहल अछि, ओ तँ प्रदूषित गंगाक रूप देखि बुझले जा सकैए। आस्थाक नामपर दूषितो अपने सभ करै छिऐ आ प्रदूषण-मुक्त आन्दोलन सेहो अपने सभ करबै, यएह तँ खेल छी। कोनो रोगक इलाजक तँ यएह ने नीक रस्ता हएत जे ओइ बीमारीकेँ रोकि ओकर जड़ि-उकनन करी। मुदा से देखि की रहल छिऐ?

आइ पनरह दिनसँ लछमीपुर गाममे दू दर्जन फोर्सक संग दण्डाधिकारीक ड्यूटी चलि रहल छैन आ कहिया तक चलतैन, से अखन नहियेँ कहल जा सकैए। ओना, गामक रूखिमे सेहो बहुत किछु सुधार भेबे कएल अछि। किए तँ एक दिस जहिना हवाइ जहाजक सवारीक बेवस्था बढ़ि रहल अछि, मेट्रो रेलक बेवस्था बढ़ि रहल अछि, तहिना दोसर दिस चौक-चौराहापर ताश-जुआक संग देश-विदेशक खेल सेहो चलिये रहल अछि। जइ पाछू भीड़ सेहो बढ़ले जा रहल अछि। प्रदूषण कहि-कहि सफाइ सेहो होइते अछि, मुदा तैयो प्रदूषण बढ़ले जा रहल अछि। गामक लोक शहरोन्मुखी भेल छैथ, किए भेल छैथ से तँ अपने सभकेँ ने बुझौ पड़त आ विचारक संग करौ पड़त। अमेरिकामे रहिकऽ गामक गुनगाने करब तइसँ गाम थोड़े गुणशील बनि जाएत।

❑ **साभार: गजपट मारि, जगदीश प्रसाद मण्डल, 20 अक्टूबर 2022**

इतिहासो तँ एहने ने अछि जे केतौ
कुत्ता ले तँ केतौ बिलाइ ले झगड़ा-फसाद
होइत रहल अछि आ समाज गोपलखत्ता
दिस ढरकैत आबि रहल अछि।

चाह पीब बसन्त भाय दरबज्जापर सँ जखने निकलला कि गुलटेनकेँ उत्तरसँ अबैत देखलैन। उत्तरे-दच्छिने सड़क अछि, अपन डेगकेँ बसन्त भाय छोट केलैन। लगमे गुलटेनकेँ अबिते बसन्त भाय बजला- "गुलटेन सुनै छी गाममे खूब रमन-चमन भेल अछि?"

'रमन-चमन' सुनि गुलटेन सहैम गेल। सहमैक कारण भेलै जे जइले मारि भेल से केते उचित भेल, मुदा अपनामे ओते दम अछि जे अपन विचार लोकक बीच बाजि सकब। तखन तँ गाममे छी, पुछलैन तँ किछु कहै पड़त। गुलटेन बाजल- "ठीके सुनै छी बसन्त भाय। मुदा अपना कोनो मतलब नहि अछि तँए जहिना अहाँ सुनलिऐ तहिना हमहूँ सुनैत आबि रहल छी।"

गुलटेन जखन अपनाकेँ ओइ घटनासँ मुक्त रखने अछि तखन ऐसँ बेसी पुछब उचित नहि हएत। बसन्त भाय मने-मन हियाबए लगला जे दू पक्षक बीच झगड़ा अछि, झगड़ाक आधार जे होउ मुदा दस गोरे मारि तँ जरूर खेलक अछि। पहिने केकरो ऐठाम जाइसँ नीक हएत जे रस्तेपर जँ कियो भेट जेता तँ पहिने हुनकेसँ आरो हुलिया लेब। तैबीच मनमे ईहो प्रश्न उठि गेलैन जे गाममे दस गोरेसँ ऊपरे मारियो खेलैन आ एक-दोसरकेँ मारबो केलैन। जँ सभसँ पुछए लगिऐन जे केते मारि खेलौं आ केते मारलिऐ जइसँ हिसाब मिलि जाएत जे घट्टामे रहला आकि नफ्फामे। मुदा लगले अपने मन रोकलकैन जे एते जे समुद्र उपछए लगब, माने एते गोरेसँ जे एते बात पुछि बुझए लगब तखन तँ समुद्रे जकाँ उपछैमे समय लगत। अनेरे जे समुद्र उपैछ रस्ता बनाएब तइसँ नीक ने जे या तँ अर्जुन जकाँ एक तीरमे पुल बनबैक साहस करब वा हनुमान जकाँ कुदैक बल बनाएब। से तँ सम्भव नहि अछि। मुदा लगले अपने मन दुतकारैत कहलकैन अस्पतालमे कोनो रोगीक सेवा डॉक्टरसँ परिचारिका धरि करै छैथ तँए कहब जे परिचारिको डॉक्टरे जकाँ अध्ययन-मनन केने छैथ सेहो बात नहियेँ अछि। तँए ईहो कहब जे रोगीक रोगक

उपचारमे डॉक्टर सेवा केलैन आ परिचारिका नहि केलैन, सेहो बात नहियेँ अछि। जखन सेवाक प्रश्न अछि तखन तँ सभ सेवामे भागीदार भेला, सभ सेवा केलैन।

..बसन्त भाइक मन मानि गेलैन जे जे कियो पहिने भेटता हुनकेसँ अपन सेवा शुरू करब।

बसन्त भाइक मनमे जहिना एकदिस सेवाक भवन (भव+अन) जगलैन तहिना दोसर दिस कुभाव सेहो जगलैन। कुभाव ई जगलैन जे दू पक्षक बीच मारि भेल, समाजक रूपमे अपनाकेँ बुझि आगू बढ़ि रहल छी, कियो पहिने भेटता आ हुनकासँ पुछबैन माने मारिक विषयमे, आ हुनका जँ तत्काल सेवाक जरूरत होनि आ अपने ओ सुनि-बुझि जाइ, आ दोसर पक्षक कियो देखि कऽ बुझैथ जे फल्लाँ फल्लाँ पक्षमे छैथ तखन तँ अपने सीमांकित भऽ जाएब। तखन निष्पक्षता केना औत? निष्पक्षता लेल निष्पक्षदार बनि जखन निष्पक्ष भाव मनमे राखब। ऐ ले निर्विचारी बनब तखन ने भेल जखन जमीनी विचारसँ फराक होइत निरविकार जकाँ निरविचार करैत निरविकार शब्द बाजब।

बसन्त भाइक मन बीच रस्तापर ठाढ़ भेल ठमैक गेलैन। एक दिस देखैथ जे कियो-ने-कियो एक पक्षक जँ भेटत तँ दोसर पक्षकेँ मनमे डाह हेबे करतैन जे फल्लाँ सेहो गुल्ली-पेंच कऽ रहला अछि। हमरा जखन कोनो मतलब माने कोनो सम्बन्ध नहि अछि तखन किनको मनमे कुवाथ जनमाएब करब उचित नहि...। उचित-अनुचित लग अबिते बसन्त भाइक मन अपने दुतकालरकैन जे समाजमे रहि समाजसँ मुँह नुकाएब कायरता छी। कायर बनि, समाजक बोझ बनि जीबसँ नीक ने मरि जाएब भेल। ..असमंजसमे पड़ल बसन्त भाइक डेग ने आगू उठैन आ ने पाछू हटैन, खरहोरिक कड़ची जकाँ माने खरहोरिक रखबार जकाँ, रखबाइर करब बुझि पड़लैन। तैबीच अपने मन अतीतमे वौआ गेलैन जेकर फलाफल समाजमे अखनो बीर्तमान अछि। बसन्त भाइक मन अतीतमे ई वौएलैन जे अखन जेते झगड़ा-फसाद समाजमे अछि ओकर जड़ि केना शुरू भेल। माने ओ रोपाएल केना? इतिहासो तँ एहने ने अछि जे केतौ कुत्ता ले तँ केतौ बिलाइ ले झगड़ा-फसाद होइत रहल अछि आ समाज गोपलखत्ता दिस ढरकैत आबि रहल अछि।

❑ साभार: जबुरिया कागज, जगदीश प्रसाद मण्डल, 22 अक्टुबर 2020

हुनका भेलैन जे अपने चढ़ल आँखि देखि नवानीवाली हँसली अछि। जइसँ ओल जकाँ मनमे कब-कब लगबे केलैन। ओना, केतबो कब-कबी ओलमे किए ने रहैए मुदा लोक खाएब थोड़े छोड़ि दइए।

एक तँ मेघौन समय दोसर अमावसियाक भोर, तँए फरीच होइमे देरी भेबे कएल। फरीच नइ भेने अपने ओछाइनेपर पड़ल रही। अन्हरिया (अन्हार) पक्षक दसमी एकादशीसँ लऽ कऽ चतुरदशी तकक भोर आ अमावसियाक भोरमे अन्तर भइये जाइए। जहिना इजोरिया पक्षमे दसमी-एकादशीसँ पूर्णिमाक भोर रमणगर भऽ जाइए। अपने अन्हरोख दुआरे ओछाइनेपर पड़ल रही, मुदा पत्नी उठि गेल छेली। अपने दुनू परानीमे विचारक मतभेद अखन तकक जिनगीमे सभ दिन रहल अछि। ओना, बिआहक दिन समझौता भऽ सकै छल, किए तँ दुनू गोरेक पहिल भेँट–मिलन पहर–छल मुदा ओइ दिन बिआहेक तेते विधि-बेवहार हुनका सभकेँ रहैन जे भोर तक सएह होइत रहल, अपन जे मनक विचार छल ओ मनेमे रहि गेल, तँए समझौता नइ भेल, मतभेद अछिए।

कहब जे की मतभेद दुनू परानीमे अछि? मतभेद ई अछि जे ओ सभ दिन, माने पत्नी नित्य अप्पन दैनिक जीवनक कर्म छोड़ि अन्हरोखे उठि कलपर जा हाथ-पैरक संग फुलडाली धोइ, फूल तोड़ए जाइ छैथ, पछाइत अपन नित्य-कर्म दिस मुड़ै छैथ। अपन विचार से नहि अछि, अपने अपनाकेँ अप्पन भगवान बुझि सेवा-टहलमे लागि जाइ छी। ऐठाम एकटा बात आरो अछि, ओ अछि भगवानक स्वरूप की? एकर जवाब इमानदारीसँ दइ छी जे गाम-समाजमे अखनो बहुत लोक छैथ जे बजैक क्रममे बजबे करै छैथ जे ‘मनुक्ख स्वयम् भगवानक स्वरूप छिआ।’ अपने शास्त्र-पुराणसँ भेँट नहि अछि, मुदा जइ मनुक्खक मुहसँ एहेन विचार निकलै छैन, अपने हुनके विचारसँ सहमतो छी आ चलितो छी। मुदा पत्नी से नहि छैथ, ओ सभ दिन फूल जोहि, नहा-धोकऽ पूजा करिते छैथ। हुनके मुहेँ जखन पाबैन सभक चर्च

सुनै छी तखन तिथि सेहो बुझै छी आ मौसमक गति-विधि सेहो मोन पड़ैए।

सुति उठि भोरक कर्मसँ निवृत्ति भऽ तैयार भेलौं। चाहक आशामे बैसल रही। अपनो मानिते छी जे पूर्वज सभ कहने छैथ- घरसँ निकलैकाल ओहन जल-थम्हन पेटमे जरूर दऽ दिऐ जे ऐगला खगताक मुँह मारने रहत। ओना, पत्नीकेँ चाह बनबैमे बिलम्म होइक दोसरो कारण छेलैन। दोसर कारण ई छेलैन जे फूल तोड़ैले जखन निकलली तखन फुलबाड़ीएमे बिशौलवाली आ नवानीवाली भौजीसँ भेँट भऽ गेलैन। ओहीठाम तीनू गोरे गाम-समाजक भाग-रेखापर विचार करए लगली। बिशौलवाली बजली- "समाजमे केतौ एहनो होइ.!"

जहिना बिशौलवाली छन्दबद्ध बजली तहिना छन्दबद्ध नवानीवाली उत्तर देली-

"समाजमे सभ होइ छै, जे नहियोँ होइबला रहैए सेहो होइए।"

ओना, अपन पत्नी माने सुचित्रा आँखि गड़ा कऽ दुनूक मुहेँ दिस देखि रहल छेली, बात बुझल रहितैन तखन ने किछु टोको-टाक करितैथ, से तँ बुझल रहैन नहि। तइ बिच्चेमे सुचित्राक मुँह देखि नवानीवाली हँसि देलखिन। पत्नीकेँ भेलैन जे अपने चढ़ल आँखि देखि नवानीवाली हँसली अछि। जइसँ ओल जकाँ मनमे कब-कब लगबे केलैन। ओना, केतबो कब-कबी ओलमे किए ने रहैए मुदा लोक खाएब थोड़े छोड़ि दइए। सुचित्रा बजली-

"भोरे-भोर दुनू गोरे अपने-मने गुड़-चाउर खाइ छैथ आ हमरा मुँह तकबै छैथ।"

❑ **साभार: कन्हजोड़, जगदीश प्रसाद मण्डल, 23 अक्टूबर 2022**

जे मैथिली अन्तर्राष्ट्रीय भाषा छी ओ मरि केना जाएत? एहेन संस्कार ओहन परिवारसँ अबैए जे परिवार मिथिला आ मैथिलीकेँ चारागाह बना चरैए..!

सभसँ पहिने हमरा सभकेँ 'भाषा' आ 'साहित्य'क भेदपर धियान देबा चाही। केते गोरे भाषाकेँ साहित्य माने छैथ आ साहित्यकेँ भाषा। मुदा से नहि, साहित्य समाजक दर्पण छी आ भाषा एक-दोसराक बीच संवाद स्थापित करैक माध्यम। भाषाक दौड़मे जनभाषा वैदिक रूपमे आएल। वएह भाषा परिमार्जित होइत लौकिक संस्कृत बनल। लौकिक संस्कृत समाजक अल्पसंख्यक लोकक बीच बढ़ल। मुदा बहुसंख्य जन-मानस ओइसँ दूर रहल, जीवनमे भाषाक खगता अछिए, तँए संस्कृत भाषाक बीच जन-मानसक विद्रोह भेल। लौकिक संस्कृत दबल आ जन-समुदायक बीच पाली भाषा स्थापित भेल। ऐठाम एकटा बात आरो कहि दइ छी, अखन जे भारत देखै छिऐ, से भारत पहिने नहि छल। तँए क्षेत्रक हिसाबसँ भाषो भिन्न-भिन्न रूपमे आबिये रहल अछि। 1947 इस्वीक भारत आ तइसँ पहिलुका भारतमे अन्तर छेलैहे, जइसँ भिन्न-भिन्न भाषा, भिन्न-भिन्न संस्कृतिक चलैन, क्षेत्रक हिसाबसँ छेलैहे।

पाली भाषा परिमार्जित होइत जखन आगू बढ़ल आ जनमानससँ दूर भेल, तखन पाली भाषाक बीच सेहो विद्रोह भेल आ अपभ्रंश स्थापित भेल। पछाइत आरो-आरो भाषा बढ़ैत-बदलैत गेल अछि मुदा अखन भाषाक चर्च एतबे करब। मध्ययुगमे, माने जेकरा 'भक्ति युग' वा 'भक्ति काल' कहै छिऐ, भाषाक जबर्दस्त आन्दोलन भेल। जइसँ तुलसीक माध्यमसँ अवधी, सूरक माध्यमसँ ब्रजभाषा, कबीरक माध्यमसँ मैथिलीक संग आरो पूर्वांचलक भाषाक आगमन भेल। मुदा से अखन नहि, अखन एतबे जे साहित्य समाजकेँ आगू-आगूक रस्तो देखबैए, संगे चलबो करैए आ दुरकाल समयमे पाछूसँ धक्का दैत ठेलबो करिते अछि। तँए साहित्यक क्षेत्रमे एतबे कहब जे अखन जे अपन मिथिलाक समाज अछि ओकर साहित्य केहेन छै आ ओ समाजक संग चलि रहल अछि वा समाजकेँ पाछू छोड़ि

चलि रहल अछि।

मिथिले नहि, सौंसे देशे हजारो बर्खक गुलामीक सिक्कैड़मे बन्हाएल आबि रहल छल जे 1947 इस्वीमे आंशिक रूपमे टुटल।

ओना, सभ जनिते छी जे सतजुगेसँ देव-दानवक लड़ाइक चर्च होइत आबि रहल अछि। त्रेता युगमे राम-रावणक लड़ाइ भेल। समाजक बीच बलहीनक केहेन गति बलवान समाज बनौने छल, अनेको कथा-पिहानीसँ भेटिये रहल अछि। द्वापर युगक कौरब-पाण्डवक लड़ाइ सेहो बुझले अछि। जे समस्या अखन समाज बीच देखि पड़ैए, एहेन समस्याक चर्चे पुराण छी। ऐ सभकेँ अखन छोड़ू। अखन जँ एकलव्य आ द्रोणाचार्य करए लगब तइसँ काज नहि चलत। सभ जनिते छी जे हर मनुक्खकेँ एकटा जीवन होइ छै, ओ केहेन आ केना अछि तैपर नजैर दिअ पड़त।

वैदिक मनुक्ख आ मनुक्खक जीवन केना वैदिक बनल चलत, ई मूल प्रश्न अछि।

वैदिक संस्कृति जे साहित्यमे देखै छी ओ ओइ समयक समाजक जीवन छल। आइ हम सभ एकैसमी सदीमे छी, जे वैज्ञानिक सदी मानल जाइए। वैज्ञानिक सदीक अर्थ भेल बेवहारिक जीवन। सभ दिन किछु-ने-किछु समाजक बीच विग्रहक जड़ि रोपले जा रहल अछि, तैठाम बेवहारिक जीवन पएब बाल-बोधक खेल नहि। समाजमे एहेन वातावरण बनियेँ रहल अछि जे मैथिली भाषा मरि जाएत। एहेन विचारक जन्म केना भेल? जे मैथिली अन्तर्राष्ट्रीय भाषा छी ओ मरि केना जाएत? एहेन संस्कार ओहन परिवारसँ अबैए जे परिवार मिथिला आ मैथिलीकेँ चारागाह बना चरैए आ समाजक हवाकेँ दूषित करैए।

❑ **साभार: पयस्विनी, जगदीश प्रसाद मण्डल, 2021**

> “भैया, जखन खेतमे अन्न आकि आने कोनो उपजा नै हएत तखन लोक केना जीवित रहत? बिना कोयला-पानीसँ तँ लोहा चलबे ने करैए आ मनुख तँ सहजे मनुख छी। लाखो रंगक परसाद पबैबला!”

मनखप बटाइसँ पहिने सुपतलालकेँ अपन कीनल पाँचे कट्ठा जमीन मुदा ओ पाँचो कट्ठाकेँ बरह-मसिया खेती-जोकर बनौने। बरह-मसिया ई जे तीनू मौसमक तीन फसल उपजैत। ओना, हरि अनन्त हरि कथा जकाँ तर्कों-वितर्कक अनन्त उत्तर छइ। ईहो तँ भऽ सकैए जे बरह-मसिया गाछीए लगौल जाए। मुदा प्रश्न तँ ईहो उठैए जे बरह-मसिया ओकरा तँ नै कहबै जे सालमे एकबेर उपजा देत। मुदा तेकरा मानब उचित हएत? उचित तँ यएह ने जे बारहो मास ओइमे श्रम लगौल जाए आ बारहो मास उपज आबए। जँ से नै औत तँ खाली समयमे, जइ समय उत्पादन नै हएत, उपजौनिहार जीवित केना रहत? तेकरो तँ उपयक जरूरत ऐछे। खाएर जे हौउ, सुपतलाल अपन पाँचो कट्ठा जमीनकेँ धरोहर बुझि उपजाबऽ लगल। मध्यम किसिमक जमीन। पाँचो कट्ठामे तरकारी उपजाबऽ लगल। एतेक उपजा होइ जे अप्पन परिवारक भोजनक अदहाक संग नगदो-नारायण भऽ जाइ। ..एक दिन दुनू भाँइ, सुपतलाल-कुपतलाल, घरक काज सम्हारि गाम घुमैक विचार केलक। तेहेन रौदियाह समय जे दस बजेक पछाइत बाधमे लू चलए लगैत। ओ गामो-घर दिस एबे करैत। गाछ सबहक पत्ता झड़ैक-झड़ैक अधसुखू भऽ गेल। सौंसे बाधमे केतौ हरियरीक दरस नहि। टोलसँ निकैलते दुनू भाँइ गामक बाध-बोन देखि सिहैर गेल। आगू बढ़ैक साहस नै भेलइ। ..कुपतलाल सुपतलालकेँ कहलक– “भैया, गाम बीरान भऽ गेल। जइ गामक माटि-पानि मरि जाएत तइ गामक गाछ-बिरीछ आकि जीवे-जन्तु केना ठाढ़ रहत?”

कुपतलालक प्रश्न सुनि सुपतलाल बाँहि पकैड़ बाजल– “बौआ, से केना बुझै छहक?”

सुपतलालक प्रश्नक उत्तर दइले जेना कुपतलालक मन तर-ऊपर करइ, तहिना जेठ भाइक पुछब सुनि कुपतलाल बाजल– “भैया, जखन खेतमे अन्न

आकि आने कोनो उपजा नै हएत तखन लोक केना जीवित रहत? बिना कोयला-पानीसँ तँ लोहा चलबे ने करैए आ मनुख तँ सहजे मनुख छी। लाखो रंगक परसाद पबैबला!"

कुपतलालक ओजाएल जिज्ञासा देखि सुपतलाल बाजल– "बौआ, अपने दुनू भाँइ छी आ दू दियादिनी आँगनमे छैथ। जहिना चारू गोरेकेँ अपन-अपन जिनगी आ जिनगीक काज अछि तहिना ने सबहक छइ। एककेँ नष्ट भेने तँ पर्यावरण बिगड़ए लगै छै आ जखन एक भागेक सभ किछ नष्ट भऽ जाएत तखन की हेतै?"

"हँ से तँ हेबे...।"

"अपना दुनू भाँइकेँ एतबे ने बुझैक काज छह। जँ अपन काजपर ठाढ़ हेबह तँ अदहा भक्त कमाल जकाँ हेबह, नै जँ बाँकियोहो अदहा पुरा लेबह तँ सोलहन्नी हेबह। जइसँ भेद-अभेद मेटा जाइ छइ।"

"हँ, से तँ ठीके भैया!"

"बौआ सुनह, जे बात हम बुझै छिऐ ओ तोरा कहला पछाइते ने तहूँ बुझबहक, तहिना ने तोरो बात आ घरो लोकक बात सुनला पछाइते ने अपनो बुझब?"

"हँ से तँ ठीके।"

"बौआ, आब तँ सहजे केते दिनसँ खेती करै छी, मुदा जहिया नहियोँ करैत रही तहियेसँ कोसी नहैर सुनै छी जे गामे-गाम बनत, डैमसँ बिजली बनतै आ ऐठामक किसानकेँ करखन्ना जकाँ चौबिसो घन्टा खेतीक काज चलतै।"

"भैया, ई बहुत भेल। छोड़ह ऐगला गप। कान भरैत-भरैत तेना भरि गेल जे काने बन्न भऽ गेल। दिन-राति जे काजे करत आ खा-पी कऽ सुतत नहि, तखन भगवानसँ एकाकार केना हएत?"

"धुर बुड़िबक! अहिना बुझै छीही, जहिना कारखानामे चौबिसो घन्टा काज छै तहिना खेतियोमे अछि। खेतेक उपजासँ चौबिसो घन्टा कारखाना चलैए। जँ पचपन खान चलबैए तँ पैंतालीस खेतो चलबैए।"

❑ **साभार: अप्पन-बीरान, जगदीश प्रसाद मण्डल, 01 मई 2014**

जे जेतए छी से तेतइसँ उठि कऽ ठाढ़ होउ आ अपन मातृभाषा आ मातृभूमिक लेल संस्कृतिक रक्षामे लागि जाउ।

भाषाक संग साहित्य अछि। केते गोटे तँ अखनो भाषेकेँ साहित्य बुझै छैथ आ साहित्यकेँ भाषा। मुदा अखन से नहि, अखन एतबे जे मैथिली साहित्यमे जे रचना भऽ रहल अछि ओ समाजसँ केतेक जुड़ल चलि रहल अछि। की एहेन नहि अछि जे छी अमेरिकाक बीस महलाक ऊपर आ कम्प्युटरमे देखि-सुनि रहल छी मिथिलाकेँ, जे साग-पात खोंटिकऽ खाएब आ मिथिलेमे रहब..! अखन साहित्यक विस्तारमे नहि जाएब। अखन एतबे कहब जे अपन भाषा, अपन साहित्य आ संस्कृतिकेँ अपने निरमित करए पड़त। अपने केलासँ हएत।

अखन आरक्षणक प्रश्न सौंसे देशमे उठल अछि मुदा आरक्षण छी की आ एकर जरूरत की छै? महिला आरक्षण वा हरिजन-पनिचल्लाक आरक्षण जे अछि तइमे की देखै छिऐ? पंचायत चुनावमे महिलाकेँ पचास प्रतिशत आरक्षण देल गेल अछि, ओकर अतिरिक्त हरिजन आ पनिचल्लाकेँ सेहो आरक्षण देल गेल छैन, मुदा पंचायतमे जे मुखिया पाँच चुनाव पहिने छल सएह अखनो अछि.! तहिना आनो-आन आरक्षणक गति अछि। अन्तर्जातीय विवाहक कानून नेहरूजी, पण्डित जवाहरलाल नेहरू,क समयमे पास भेल मुदा समाजमे ओकर की गति अछि? अपहरण, हत्या, विषपानक घटना कोन रूपमे बढ़ि रहल अछि। बजैक क्रममे सभ बजै छी जे प्रकृतिक अनुकूल आचरण करी, नीक विचार, मुदा देखै की छिऐ? समाजमे लड़की-संख्याक अनुपात दिनो-दिन कमि किए रहल अछि? भ्रूण हत्याक रोग एते केना पसैर गेल अछि? जे सार्वजनिक संस्था सभ अछि ओ अखनो ओही ढर्रापर चलि रहल अछि जे स्वतंत्रता-पूर्वक छल। जरूरत अछि जे पछुआएल समाजक जे रचनाकार सभ छैथ, अपन जीवनानुकूल रचना करैथ। छुच्छे गीत-नादसँ समाजकेँ केते दूर तक लऽ जेबइ। आजुक जे पढ़ाइक सिलेवस अछि ओकरा आजुक समाजक परिवेशक अनुकूल बनौल जाए। खाएर जे भेल से भेल, एकरा स्वतंत्रतासँ पूर्वक विचार बुझू, माने 1947 इस्वीसँ पूर्वक। आइ अपना सभ

स्वतंत्रताक पचहत्तरीम वर्षगांठक अमृत महोत्सव मना रहल छी। आइ जे दिशाहीन समाज भऽ गेल अछि, तइमे सार्वजनिक संस्था सभक हाथ सेहो अछिए। ओ केना समुचित दिशान्मुख हएत। आइसँ हजार बर्ख पूर्व कवि-नाटककार ज्योतिरीश्वर भेला, जे 'धूर्तसमागम' लिखलैन, ओ समाजकेँ देखि कऽ लिखने छला नहि कि सपनौती भेलैन। जहिना जन्मभूमिकेँ मातृभूमि बुझै छी तहिना मातृवत बेवहारो हेबा चाही। जँ हृदयसँ दबल-कुचललक समाजक भाषा, साहित्य आ संस्कृतिक संघर्षकेँ सिनेहसँ अपनौल जाएत तँ निसचित हाशिया परक समाजक कल्याणो हेतैन आ भावी जीवनक आशा सेहो जगबे करतैन। तइले जरूरत अछि जे जे जेतइ छी, से तेतइ ठाढ़ भऽ अपन शक्तिकेँ जगाबी। असकरो बहुत किछु कएल जा सकैए। असकरे भाय राजनन्दन लाल दास, अपन बूत्तापर 'कर्णामृत' सन पत्रिकाक सम्पादन करीब पैंतीस-चालीस बर्ख धरि सम्हारि लेलैन। अखने चन्द्रमोहन बाबू जे आन्धप्रदेश- हैदरावादमे छैथ, केना मैथिल रचनाकारक एकटा मंच तैयार केलैन अछि। जे जेतए छी से तेतइसँ उठि कऽ ठाढ़ होउ आ अपन मातृभाषा आ मातृभूमिक लेल संस्कृतिक रक्षामे लागि जाउ।

❑ **साभार: पयस्विनी, जगदीश प्रसाद मण्डल, 2021**

चिन्तनोक दू रूप अछि, पहिल अछि अपन भार मुक्त, भय मुक्त भऽ कोनो समस्याक विषयमे चिन्तन करब आ दोसर अछि भय ग्रस्त, भार ग्रस्त भऽ चिन्तन करब। दमयन्तीकेँ दोसर कोटिक बुझि पड़लैन तँए मनमे शंका जगलैन।

जाधैर परिवारमे खर्चक पूर्तिक हेतु आमदनी नहि औत ताधैर परिवारक कोनो-ने-कोनो काज मारले जाएत। जखने परिवारक काज मरत तखने परिवारक आमदनीक स्रोतो आ जीवनो टुटबे करत। जखने जीवन टुटत तखने रंग-बिरंगक समस्या पारिवारिक जीवनमे उठबे करत। मुदा अपन मनक विचारक वेगकेँ देवकान्त बाबू ई सोचि रोकलैन जे विद्यालयमे काज करै छी तखन ने दरमाहाक आशा करै छी जे महीना पुरलापर दरमाहा उठा, पत्नीक हाथमे दैत मास दिनक आश्रमक भार सुमझा दइ छिऐन। जेकरा ओ अपना ढंगे पार लगबैत अपन काज-भारसँ मुक्त होइ छैथ, तैठाम तँ स्पष्ट अछिए जे विद्यालय बन्न हेबाक जे परिस्थिति उठि ठाढ़ भेल अछि ओ सोल्होअना अपन भेल, तइले पत्नीकेँ किए कहि शोकाकुल करयैन? मुदा अपने मन आगू बढ़ि कहलकैन जे जखन पत्नीक हाथमे मास दिनक खर्च नहि देबैन तखन ओ केतए-सँ आनि आश्रम चलौती? मुँह दाबि देवकान्त बाबू बजला- “विद्यालय, अनिसचित समय ले बन्न भऽ गेल।”

अनिसचित समयक चर्च जइ ढंगे देवकान्त बाबू बजला तइसँ भिन्न ढंग पकैड़ दमयन्ती बजली-

“विद्यालय बन्न भऽ गेल तँ कि हेतइ। बुझले बात तँ अछिए जे बैसारीक सबटा दरमाहा विद्यालय देबे करत। तइले..?”

पत्नीक विचार सुनि देवकान्त बाबू तत्खनात चुपे रहला, किए तँ अपने मन कहि रहल छेलैन जे अनेरे जे बकतूत करब तइसँ नीक ने जे जनिहेँ मियाँ धुनै बेरिया। जखन खाली मुट्ठी भार पड़तैन तखन बुझती। अनेरे ने गाबए लगती, ‘गीता सवेद सभी विसरी जब हाथ पड़े हाथ लगना।’

मुँह बन्न होइते देवकान्त बाबूकेँ मनक विचार ठेलैत कहलकैन, जे चूक भऽ रहल अछि.! एक दिस अनिसचित काल ले विद्यालय बन्न भेल अछि आ अपने परिवारक रोचे मुँह चोरा कऽ राखि 'जाबत बरतन ताबत बरतन'क मंत्र जपैत रहि जाइ, तखन पत्नी खाली हाथ परिवारक गाड़ी केना खींच पौती.? जखन कि अपने खेबा काल पीढ़ी आ चाह पीबै काल कुरसी लगा बैसबे करब। छुच्छे हाथे, माने खाली, तँ यएह ने करती जे चुल्हिमे आँच घुसकबैबला खोंरनी मुँहपर तेना बैसौती जे कोयलाक छाप पड़त..! एकाएक देवकान्त बाबूक मन डोलि गेलैन जे जखन सभ मिलि परिवार बनल अछि तखन सभ मिलि चलेबो करब किने। नीक-बेजाए समय जीवनमे अबिते अछि। तँए किए ने नीक जीवनक झाँकियो आ अधला जीवनक जरोखो परिवारक सोझमे राखि दी। संक्रमित मने पत्नीकेँ पुछैत देवकान्त बाबू बजला-

"एकटा विचार पुछी?"

बालो-बोधकेँ जखन कहबै जे बौआ एकटा बात पुछै छिअ। कहह ते आइ तूँ की सभ खेलह? तँ ओ लगले कहत फल्लाँ चीज। तहिना दमयन्ती सेहो पुछैक विचार सुनि भाव-विह्वल भऽ गेली। जहिना भाव भूमिक भक्त अभक्त नहि होइ छैथ तहिना दमयन्ती महाभारतक नलक संगी दमयन्ती जकाँ जीवनक संगी बनि चलैक उत्कट इच्छा व्यक्त करैत बजली- "अखन धरि हम ई नहि बुझै छेलौं जे अहाँ चोरो छी।"

पत्नीक मुहसँ चोर सुनि देवकान्त बाबूक मन परसाएल गौरिया केरा जकाँ पलैड़ गेलैन। बजला-

"चोर कि कोनो हमहींटा छी आकि अहूँ छी। जहिना अहाँ चोरा कऽ रखैबला चोर छी तहिना ने हमहूँ भेलौं। चलू अधा-अधीपर समझौता भऽ गेल। जे पुछए चाहलौं से कहै छी।"

❑ साभार: कुण्ठ, जगदीश प्रसाद मण्डल, 18 अक्टूबर 2021

“केतबो बानर जकाँ नाँगैर पटैक कऽ रहि गेलैं कहाँ एको धूर जमीन-जत्था अपनो पएर रोपैले भेलौं, जहिना बाप-दादा गुड़कैत एलौ तहिना गुड़कैत रहमैं।”

एकसँ एकैस सूप, डगरा, डगरी, कोनियाँ, सुपती सजल घाटपर ठकुआएल भुसबा मने-मन छगुन्तामे पड़ल अछि। कनकनाइत मन पटपटेलै- “कहू, एहेन हेबा चाही?”

अपने फुरने भुसबा बड़बड़ाइत, मुदा कियो डालमे सुननिहार नहि। ओना, रंग-रंगक वस्तुसँ सजल डाल। जहिना बरखा-जाड़क बीच संगमक चान-सुरूज शीतसँ शीताएल तहिना घाटपर पसरल सूप, डगरा आ कोनियाँ-सुपती सेहो।

भिनसुरका अर्घ्यक सुर्ज जकाँ उगैत आदी, हरदी, अरूआ, खमहरूआ, सुथनी माटिक तरक आ माटिक ऊपरक पसरल खीरा, सजमैन, नारिकेल, केरा इत्यादि, तहिना धरतीसँ अकास धरिक सजल आगन्तु कुशियारक संग भुसबा-ठकुआ पँचमुखी दीपक आगू। मुदा छठिक सौंझुका अर्घ्य जकाँ ठकुआक गहुमक संग तेलक सेरसोकेँ तँ जेबाक सेहो छइहे। तेतबे किए अंकुरैत औंकरी सेहो ऊपरेसँ अपन बलिदान करैले तनफनाइते अछि। कुशियारो कौल्हमे पेराइले तैयारे अछि। जँ से नै रहत तँ मिसरी केना बनत। असगरे भुसबा बुदबुदाएल मुदा कियो ने कान देलक आ ने बेथा बुझलक। फेर ठोर पटपटबैत भुसबाक मुहसँ निकलल-

“कहू! जे आगूक जनमल ठकुआ छी, तखन केहेन कडुआएल बात बजैए जे जहिना सभ दिन गुड़कैत रहलैं तहिना गुड़कैत रहमैं। हमरा जकाँ तोरा आसन-बासन हेतौ।”

बुदबुदाइक वेगमे भुसबा बुदबुदा तँ गेल मुदा लगले मन घुमलै। घुमिते उठलै, मनोक तँ यएह ने चालि छै, जखन खुशी रहैए तखन नचबो करैए, गेबो करैए। नाचियो-नाचि आ गाबियो-गाबि दुनियोँकेँ देखबैए आ दुनियोँकेँ देखैए। मुदा वएह मन जखन कोनो बाएबे दुबराए लगै छै तखन अपनो दुबराइत रहैए आ दोसरोकेँ दुबरैबते छइ। भरिसक तहिना ठकुआकेँ भऽ गेलइ। आकि धन-बुबकी

पकैड़ लेलकै। मुदा जहिना बिनु गाड़लो बाँसक खुट्टाकेँ जँ दुनू भाग डोर पकैड़ खींचल जाइ छै तखन असथिरसँ ठाढ़ भऽ जाइए...।

असथिर होइत भुसबा अपन पुरखा दिस तकलक तँ बुझि पड़लै जे हुनकर सिरजनमे केतौ भेद-कुभेद नै भेल छैन। पृथ्वी जकाँ गोल-मोल बना गुड़काउ बनौने छैथ, किए केकरो ऊपर अपन पसरल भार देब, तँए कि ओकरा सँ कम भारी छी। नै दौड़ कऽ चलल हएत मुदा नहियोँ तँ नहियेँ चलल हएत। नै डेगे-डेग मुदा गुड़कुनियाँ कटैत नै चलल हएत से केकरो कहने थोड़े हेतै, एते तँ अपनो अपन परिचय अछिए। जखन बिनु पएरे ठाढ़ होइते छी, गुड़कैत चलिते छी तखन किए केकरो आँखि गुरेड़ब आँखि दबि दाबि लेब। ..मनक उष्मा जगलै। आगू तकलक तँ केतौ किछु ने नजैर पड़लै। जखन कि फूल-पात, तीमन-तरकारीसँ लऽ कऽ फल-फलहरी धरिसँ सजल डाली अछि। होइतो अहिना छै जे हजारो-लाखोक भीड़मे जहिना प्रेमी अपन प्रेमिका छोड़ि किछु ने देखैए तहिना भुसबाकेँ ठकुआ छोड़ि किछु ने नजैरपर एलइ। खसल आँखि जहिना उठि कऽ आगू देखए चाहैए तहिना भुसबोक नजैर उठल। उठिते हिया कऽ ठकुआ दिस तकलक।

तकिते देखलक जे जहिना नजैर दाबि ठकुआ बाजल छल तहिना किछु अगोँ बाजए चाहैए। जखन अगोँ बजैले मन लुसफुसाइते छै तखन किए ने कनीकाल बिलैम देखे लिऐ जे की बजैए। जेहेन मुँह तेहेन बोल आकि जेहेन मुँह तेहेन थापर, दुनूक बीच तँ समगम अछिए। जिज्ञासु नजैर भुसबा ठकुआ दिस नजरेलक। ..अपना ताले बेहाल ठकुआ, जे बाल-बोध रही आकि चेतन जखने डालीक उत्सर्ग हएत तखने पहिल हाथ हमरे दिस ने बढ़त। ई प्रतिष्ठा केकरा छइ। कियो बाँटि लेत। तँए कियो हमर मुँहक बात छीन लेत। केहेन गबदी मारि भुसबा बजै छल, जेना बुझि पड़लै जे कियो सुनबे ने केलक। जेकर असार-पसार एते छै तेकर कान हाथी जकाँ नै तँ बिज्जी जकाँ हेतइ।

जेना-जेना ठकुआक मनमे भुसबा गुड़कैत रहै तेना-तेना ठकुआक रीश बढ़ल जाइ। रीशसँ रीशिया ठकुआ बाजल- “केतबो बानर जकाँ नाँगैर पटैक कऽ रहि गेलेँ कहाँ एको धूर जमीन-जत्था अपनो पएर रोपैले भेलौं, जहिना बाप-दादा गुड़कैत एलौ तहिना गुड़कैत रहमेँ।”

❑ साभार: ठकुआएल भुसबा, जगदीश प्रसाद मण्डल, 13 नवम्बर 2014

‘भौजी, पैछला लोककेँ हिसाब जोड़ैमे गड़बड़ होइत रहैन तँए सतयुगसँ त्रेता जोड़ैमे हजारो बरख लगि गेलैन, मुदा अपना सभ एक्केसमी सदीक ने लोक छी, ओ सभ जे कहै छेला जे ‘कलयुगक लोक लग्गी लगाकऽ भँट्टा तोड़त।’ से अहीं कहू जे एहेन होइ.!

“विमल, तूँ तँ गाममे नइ छेलह तँए तोरा नइ बुझल हेतह।”

ओना, बिच्चेमे दुआरमवाली भौजीक मन बजैले लुस-फुसाइते रहैन, मुदा एते तँ चेतनता आबिये गेल छैन जे जँ कियो बजैत रहैथ तँ हुनकर विचार पहिने धियानसँ जरूर सुनी। बजलौं-

“हँ, से तँ नहियेँ बुझल अछि।”

उचितलाल भाय बजला- “गामक सभ बुझै छैथ जे बाबूलालक बेटी- रूक्मिणी आ जियालालक बेटा- श्याम, एक्के कौलेजक एक्के क्लासमे पढ़ैए।”

अपनो बुझल अछिए, बजलौं-

“हँ से तँ पढ़िते अछि।”

उचितलाल भाय बजला- “कौलेज सभमे सालमे एकबेर घुमै-फिड़ैले विद्यार्थियो आ शिक्षकोकेँ आर्थिक मदद भेटै छैन। ओही दौड़मे श्याम आ रूक्मिणी सेहो पुष्कर गेल छल।”

अपनो बुझल अछिए जे कौलेजमे टूरक कार्यक्रम चलिते अछि। बजलौं-

“वाह.! घुमब-फिरब जीवनक क्रियाक एक मद हेबाके चाही। जहिना भीतरक दुनियाँ देखैले दृष्टि चाही तहिना भूगोलक दुनियाँ देखैले आँखि सेहो चाहबे करी।”

सोइनमे सुइया फेरैत बिच्चेमे भगवानपुरवाली भौजी बजली- “एहेन जिद्दो, माइये-बाप आकि गामे-समाजकेँ नइ राखक चाही। सब जनै छी जे अखनो हमसब

साहोरेक दतमनि करै छी आ नवका लोक ब्रश करैए। जहिना युग-जमाना बदैल रहल अछि तहिना अपनो चालि-ढालिकेँ बदलैत चली।”

ओना, भगवानपुरवाली भौजी पंचैतियाह सोभावक छथिए जिनका आइये नहि, सभ दिनसँ मानैत एलिऐन अछि, तँए धियानसँ हुनकर बात सुनलौं। नीक लागल। ओना, मनमे ईहो भेल जे भगवानपुरवाली भौजीक विचारमे अपनो दिससँ एते जोड़ि कहिऐन जे ‘भौजी, पैछला लोककेँ हिसाब जोड़ैमे गड़बड़ होइत रहैन तँए सतयुगसँ त्रेता जोड़ैमे हजारो बरख लगि गेलैन, मुदा अपना सभ एक्केसमी सदीक ने लोक छी, ओ सभ जे कहै छेला जे ‘कलयुगक लोक लग्गी लगाकऽ भँट्टा तोड़त।’ से अहीं कहू जे एहेन होइ.! हवा जहाजमे चढ़ि-चढ़ि लोक अकासमे बिआहो करैए आ भोजो खाइए आ भँट्टा तोड़ैले लग्गी लगौत? अखुनका लोक तँ खुलल दिमागसँ बुझिये रहला अछि जे साठि हजार बेर दिनमे मन चलैए आ धरती-आसमान तँ सदिकाल चलिते रहैए, तँए ओ बेहिसाब अछि।’ मुदा बजलौं ऐ दुआरे नहि जे अखन समाजक बीच जे समय बनि गेल अछि ओ दोसर दिस देखैक नहि अछि। समाजक बीच, जखन बिआह पद्धतिक रूप नेने आएल, तहियाक समाज आ औझुका जे समाज अछि, ओ बहुत आगू बढ़ि गेल अछि, तँए परिवेश आ पद्धतिमे सम्बन्ध केना बनत, ई तँ अपने सभकेँ ने करए पड़त।

❑ साभार: होनी, जगदीश प्रसाद मण्डल, 29 अक्टूबर 2022

“दिग्विजय! अपना सभ किछु छी तैयो
जीवित मनुख तँ छीहे।” बिच्चेमे मुड़ी डोलबैत
दिग्विजय लाल बाजल- “एकरा के काटत, बाबा।
जे काटत तेकर नाक काटि लेबइ।”

“बाबा, लाजे अहाँ तक नइ अबै छेलौं।”

ओना, दिग्विजय लालक विचारकेँ आसु-तोष दैत जुगुतलाल बाबा हँसीमे लेलैन, मुदा मन तरैस गेल छेलैन जे ऐठाम–अपना देशमे–खाली दिग्विजये लालटा लाजक पात्र नहि, देशक किसानी जिनगी आ किसानो लाजक पात्र छैथ। लाजक पात्र ऐ मानेमे जे जिनका देशक सत्ताक दिशा निर्धारित करैक शक्ति छैन ओ अपने दिशाहीन भऽ गेल छैथ। जेना अष्टावक्रकेँ उत्तर दिशासँ सबाल-जवाब भेला पछाइत हुअ लगलैन...।

मुस्की दैत जुगुतलाल बाबा बजला-

“बौआ दिग्विजय, औझुका जुगमे तोरेटा मुहेँ लाज-लेहाज सुनलौं। आब कि लोक सोल्हमी सदीक रहल जे तुलसी बाबा जकाँ आकि कबीर बाबा जकाँ आरबन-कोपीन पहीरि अपन लाज-लेहाज निमाहत। आब तँ लाज-लेहाज शास्त्र-पुराणक बात भेल। लोक आब लोहाक मशीन बनि गेल अछि, तँए इज्जत-आवरूकेँ तेना नट-बोल्ट लगा कसिकऽ पकैड़ लेलक अछि जे धरतीक धुजा अकासमे उड़ि रहल अछि।”

ओना, जुगुतलाल बाबाक विचार सुनि दिग्विजय लालक मन वास्तविक मनसँ मर्माहत भऽ गेल मुदा जखन अपनाकेँ समुद्रक एक बून पानि जकाँ बुझलक तखन मनक ‘तस’मे ‘इल्ली’ एलइ...।

अपन विचारकेँ चौरस करैत दिग्विजय लाल बाजल-

“छअ-सात मासक अपन जिनगी कहै छी, बाबा।”

समयवद्ध जिनगी सुनि जुगुतलाल बाबा सहमला। सहमैक कारण भेलैन जे जखने मनुख अपन समयकेँ चीन्ह कऽ पकैड़ अपन जिनगीमे बान्हत, तखने ओकर

भागक भाग फुटबे करतै। जुगुतलाल बाबा कहलखिन- “बाजह।”

दिग्विजय लाल बाजल- “छअ मास पहिने किसानक मनमे उजाहि उठल। जिला कार्यालयमे कृषि सलाहकार सबहक बैसार भेल। बैसार दुनू पक्षक बीच रहै सरकारो आ आमोजनक बीच। ओहीमे एकटा वैज्ञानिक हिसाब जोड़ि-जोड़ि तेना ने कोबी-खेतीक हिसाब, फूलसँ लऽ कऽ बीआ धरिक जोड़ि कऽ बुझा देलैन जे मने उड़ि गेल। काजक मर्म बुझनिहारक मन ने काजक दौरमे सुतिया जाइए, मुदा से भेल नहि। दसो कट्ठा चौमासमे कोबीक खेती केलौं, दिन-राति ओगरैत रहलौं। मुदा...।”

‘मुदा’ सुनि जुगुतलाल बाबा चौंकैत बजला-

“मुदा की?”

दिग्विजय लालक मनक विचार टुटि-टुटि कऽ तेना झड़ि-झड़ि खसए लगल जे सुपुट बोलमे नहि निकैल थरथराइत आवाजमे निकलल।

जुगुतलाल बाबा तोषसँ तोपैत बजला-

“दिग्विजय! अपना सभ किछु छी तैयो जीवित मनुख तँ छीहे।”

बिच्चेमे मुड़ी डोलबैत दिग्विजय लाल बाजल-

“एकरा के काटत, बाबा। जे काटत तेकर नाक काटि लेबइ।”

मुस्की दैत जुगुतलाल बाबा बजला- “अपन चूक केतए बुझि पड़लह?”

दिग्विजय लाल-

“खेत चौरस नइ बना पेलौं तँए पटौनी-बेर खेती बिगैड़ गेल जइसँ उपजे डेढ़बरा भऽ गेल। घाटा भेल।”

जुगुतलाल बाबा बजला- “जे जीबे से खेलए फागु। बुड़िबकहाक खेती ऐगला साल।”

❑ साभार: चौरस खेतक चौरस उपज, जगदीश प्रसाद मण्डल, 29 अप्रैल 2019

“टंकीपर आकि पोखरिक घाटपर पनचैती केने गाममे कि कोनो उनटन भऽ जाएत। सभ कालमे कहबै जे पुरुखे जकाँ स्त्रीगणोकेँ बराबरीक हक-हिस्सा भेटौ, मुदा अपनो दिस ने ताकिकऽ बजबै जे परे-पनचैती आकि मारियो-पीटमे बराबरी करै छी? आकि तइ कालमे कहबै हम मौगी छी। तँए पहिने मौगपन मनसँ मेटा लिअ, तखन पुरुखपनक आशा करैत सभ किछु लेब।”

रस्ताकातक टंकीपर भोरे-भोरे सुनितिया दादी आ सुरुचिया-दादीक बीच कहा-कही शुरू भेल। सुनितिया दादी बजली-

“मनुक्ख माल-जाल नइ ने छी जे डोरीमे बान्हिकऽ राखल जाएत।”

सुरुचिया दादी उत्तर दैत बजली-

“सोन आकि साबेक जौरमे मनुक्खकेँ बान्हिकऽ तँ नहियेँ राखल जाएत, मुदा माए-बापकेँ एते तँ चाहिऐन जे अप्पन बेटा-बेटीकेँ विचारसँ सम्हारिकऽ, माने बान्हिकऽ राखैथ।”

सुनितिया दादीकेँ गर भेटलैन, झटैक बजली-

“अहाँ कि गाम घरमे नइ रहै छी, नइ देखै छिऐ जे कोन बेटा-बेटी माए-बापक बोलकहलमे अछि।”

सुनितिया दादीक विचार सुरुचिया दादीक मनमे जनु गड़लैन तँए ओ अपन मुँह बन्ने रखलैन। मुदा तही बीच हुनकर अपन पुतोहुए, माने सुनितिया दादीक पुतोहु- नरुआरवाली, टंकीपर पहुँच कऽ एक्केबेर झपटैत बजली-

“हिनके पुछिकऽ मरदे आकि मौगीए पनचैती करतैन.!”

ओना, नरुआरवालीकेँ लड़ुगामवाली काकी कानमे फुसफुसा कऽ किछु कहि देने छेलैन, तही उमकीपर नरुआरवाली टंकीपर पहुँचल छेली।

संजोग एहेन भेल जे सुरुचिया दादीक पुतोहु सेहो आँगनसँ निकलली कि दुनू सासु-पुतोहु सुनितिया दादीकेँ देखलैन। बहुमत-अल्पमतक दुनियाँ छीहे, शंका भेलैन। बोलीक पारख तँ नहि कऽ सकली मुदा आवाजमे किछु सुनि लेने छेली जइसँ मूड बनि गेल छेलैन। नल दिस बढ़ैत बजली-

"टंकीपर आकि पोखरिक घाटपर पनचैती केने गाममे कि कोनो उनटन भऽ जाएत। सभ कालमे कहबै जे पुरुखे जकाँ स्त्रीगणोकेँ बराबरीक हक-हिस्सा भेटौ, मुदा अपनो दिस ने ताकिकऽ बजबै जे परे-पनचैती आकि मारियो-पीटमे बराबरी करै छी? आकि तइ कालमे कहबै हम मौगी छी। तँए पहिने मौगपन मनसँ मेटा लिअ, तखन पुरुखपनक आशा करैत सभ किछु लेब।"

एक्के-दुइये टोलक स्त्रीगण अबैत गेली आ झगड़ाक रूप लत्ती जकाँ पसरैत गेल।

चारि बजे भोरमे रूपनीक पिता दुनियाँलाल आ टेम्पुबला रामरतनक परिवारमे ललका-ललकी शुरू भेल। दुनियाँलाल ललैक-ललैक कऽ रामरतनकेँ कहैत- "तूँ दुनू बापूत चोर छेँ, हमरा बेटीकेँ रातिमे चोराकऽ लऽ गेलेँ।"

❑ **साभार: भवितव्य, जगदीश प्रसाद मण्डल, 02 नवम्बर 2022**

“काका, ई कोनो ग्लानिक बात नइ भेल।
तोहीं कहह, अपने गाममे जे कलक्टर साहैब छेलैथ,
हुनकर घरवालीकेँ अपना बुते नामो-गाम ने लिखल होनि,
अपना बुते कलक्टर साहैबकेँ सिखौलो नहियेँ भेलैन,
काजक धुमसाहीमे वौआएल-वौराएलरहला से
बड़बढ़ियाँ, आ...।”

“मनुक्ख माल-जाल नइ ने छी जे डोरीमे बान्हिकऽ राखल जाएत।”

सुरुचिया दादी उत्तर दैत बजली-

“सोन आकि साबेक जौरमे मनुक्खकेँ बान्हिकऽ तँ नहियेँ राखल जाएत, मुदा माए-बापकेँ एते तँ चाहिऐन जे अप्पन बेटा-बेटीकेँ विचारसँ सम्हारिकऽ, माने बान्हिकऽ राखैथ।”

सुनितिया दादीकेँ गर भेटलैन, झटैक बजली-

“अहाँ कि गाम घरमे नइ रहै छी, नइ देखै छिऐ जे कोन बेटा-बेटी माए-बापक बोलकहलमे अछि।”

सुनितिया दादीक विचार सुरुचिया दादीक मनमे जनु गड़लैन तँए ओ अपन मुँह बन्ने रखलैन। मुदा तही बीच हुनकर अपन पुतोहुए, माने सुनितिया दादीक पुतोहु- नरुआरवाली, टंकीपर पहुँच कऽ एक्केबेर झपटैत बजली-

“हिनके पुछिकऽ मरदे आकि मौगीए पनचैती करतैन.!”

ओना, नरुआरवालीकेँ लड़ुगामवाली काकी कानमे फुसफुसा कऽ किछु कहि देने छेलैन, तही उमकीपर नरुआरवाली टंकीपर पहुँचल छेली।

संजोग एहेन भेल जे सुरुचिया दादीक पुतोहु सेहो आँगनसँ निकलली कि दुनू सासु-पुतोहु सुनितिया दादीकेँ देखलैन। बहुमत-अल्पमतक दुनियाँ छीहे, शंका भेलैन। बोलीक पारख तँ नहि कऽ सकली मुदा आवाजमे किछु सुनि लेने छेली जइसँ मूड बनि गेल छेलैन। नल दिस बढ़ैत बजली- “टंकीपर आकि पोखरिक

घाटपर पनचैती केने गाममे कि कोनो उनटन भऽ जाएत। सभ कालमे कहबै जे पुरुखे जकाँ स्त्रीगणोकेँ बराबरीक हक-हिस्सा भेटौ, मुदा अपनो दिस ने ताकिकऽ बजबै जे परे-पनचैती आकि मारियो-पीटमे बराबरी करै छी? आकि तइ कालमे कहबै हम मौगी छी। तँए पहिने मौगपन मनसँ मेटा लिअ, तखन पुरुखपनक आशा करैत सभ किछु लेब।"

एक्के-दुइये टोलक स्त्रीगण अबैत गेली आ झगड़ाक रूप लत्ती जकाँ पसरैत गेल।

चारि बजे भोरमे रूपनीक पिता दुनियाँलाल आ टेम्पुबला रामरतनक परिवारमे ललका-ललकी शुरू भेल। दुनियाँलाल ललैक-ललैक कऽ रामरतनकेँ कहैत- "तूँ दुनू बापूत चोर छेँ, हमरा बेटीकेँ रातिमे चोराकऽ लऽ गेलेँ।"

दसे कट्ठाक दूरीमे सिंहेसरो आ रामरतनोक घर अछि। दुनू दू जातिक छी, एकठाम परिवार रहने सभ-तरहक सम्बन्ध, माने सामाजिक, दुनू परिवारक बीच अछिए। सोफोक्लीजक ओडीपस नाटक जकाँ नइ बुझब जे अधिक प्रेम भेने विवाहक रूप लइए आ अधिक दुश्मनी भेने खून क रूप लइए। ऐठाम गप अछि, टेम्पूबला रामरतनक परिवार कहियौ कि कृषक सिंहेसरक किसान परिवारक। तँए, ऐठाम एहेन धोखा नइ हुअए जे गामक बेटी जँ गाममे बिआह करत तँ लाज-धाख गामसँ मेटा जाएत। लाज-धाख गुण-अवगुणक बीच निहित अछि।

ओना, रामरतनक मनमे उठल जे केकरो बेमिएने की होइ छै, काजसँ जीवन ठाढ़ होइए, अपन काज जखन ससरिये गेल, तखन तँ चुप्पे रहने ने लाभ। तँए रामरतन अपन मुँह बन्न केने रहल। मुदा रामरतनक दादाकेँ पोताक कमाइपर गरमी चढ़िये रहल छेलैन, तँए दुनियाँलाल जवाब दैत सोनेलालकेँ कहलकैन-

"जाबे तोरा घरमे छेलह, ताबे तोहर बेटी छेलह, आब हमर पुतोहु भेल, तँए हमरा पुतोहुक विषयमे किछु बजबह से हम बरदास नइ करबह।"

परिवारक सृष्टिजनक बात सुनि दुनू बापूत- रामरतनो आ सिंहेसरो घरसँ धएल अप्पन-अप्पन लाठी आनि दुनियाँलालक आगूमे आबि ठाढ़ भऽ गेल।

दुनियाँलाल सकसका गेला। बोलती बन्न भऽ गेलैन। भाय, बोलतीएमे ने ओलती लगल अछि जइसँ कब-कबी शुरू होइए आ भक-भकाइत कब-कबा

जाइए। विचारमे लजपन आनैत दुनियाँलाल बजला-

"रौ रमरतना, ई तोरा सन भेल जे पढ़ल-लिखल बेटीकेँ केना अपना घर लऽ गेलैँ।"

एक तँ आजुक समय एहेन भइये गेल अछि जे अस्सी-सँ-नब्बे प्रतिशत माता-पिताक एहेन धारणा बनि गेलैन अछि जे अप्पन बेटीक बिआह नोकरी करैबला बरसँ करी। मुदा कोनो धारणा धारण करैसँ पहिने ई तँ सभकेँ अधिकार अछिए जे अपन धारणाकेँ व्यक्त करए। मुदा होइए तेकर विपरित। कान खोलि आँखि ताकि देखए-सुनए पड़त जे अही धारणाक चलैत स्वनिर्मित जीवनपर कुठाराघात भऽ रहल अछि। जाबे स्वनिर्मित जीवन नइ बनत, ताबे स्वतंत्रता सपना जकाँ मात्र कल्पना बनल रहत।

जहिना कोनो बच्चाकेँ विद्यालयमे सफलता भेटला पछाइत हृदयक तहकाएल मन खुशीसँ उधिआ-उधिआ उफनैत रहैए, तहिना रामरतनकेँ अपन सफलतापर मन खुशीसँ उफैनते रहै, चौअनिया मुस्की दैत बाजल- "काका, ई कोनो ग्लानिक बात नइ भेल। तोहीं कहह, अपने गाममे जे कलक्टर साहैब छेलैथ, हुनकर घरवालीकेँ अपना बुते नामो-गाम ने लिखल होनि, अपना बुते कलक्टर साहैबकेँ सिखौलो नहियेँ भेलैन, काजक धुमसाहीमे वौआएल-वौराएल रहला से बड़बढ़ियाँ, आ...।"

❑ **साभार: भवितव्य, जगदीश प्रसाद मण्डल, 02 नवम्बर 2022**

खाएर किछु छल मुदा दौड़ब नइ छोड़लौं।
किए अनेरे पतंजलिक योग क्रिया, मैथिल मानलैन
की नहि मानलैन, तइ भाँजमे पड़ितौं। अपन सीमापर
पहुँच, जखन घुमलौं तखन डेगो छोट हुअ लगल आ
मनक विचारो करैक अवसर भेटल।

"बौआ, घोड़दौड़ दौड़ैक उमर आब अपन रहल, जखन छल तखन दसकोसीक लोक जनै छला, आब जिनगी-ले योग करै छी।"

जीवकान्त कक्काक विचार अपना मनमे ओहिना सन्हिया गेल जहिना पुजेगरीक मनमे फूल लोढ़ैसँ लऽ कऽ पूजा समाप्ति धरि पूजा सन्हियाइत रहै छैन। मन मानि गेल जे जाबे योग नहि करब, ताबे सालो भरि जीब कठिन अछि। देखिते छी जे जाड़क केहेन शीतलहरी होइए, जे समयकेँ अन्हार करैत आ देहमे बातरस बेमारी घोंसिया दइए। तहिना देखै छी, गरमी मौसममे एकदिस पोखैर-इनार सुखि जाइए आ दोसरदिस पियासे कण्ठ सुखा बकारे हरण भऽ जाइए। तहिना बरसातोक तँ अछिए। जहियासँ इन्दिरा आवास बनए लगल अछि, तहियासँ ने ठनकाक हिसाब, नापि-जोखिकऽ हुअ लगल अछि तइसँ पहिने जखन खसल-पड़ल घरमे रहै छेलौं, तइमे ठनकाक कोन बात जे पानियोँक बूनकेँ नहि रोकि सकै छेलौं, तखन जे ठनकासँ मरै छल तेकर हिसाब बुझैक खगता केकरा छेलइ।

दू सालसँ अपनो चारि बजे भोरमे घोड़दौड़ लगाएब शुरू केलौं अछि। ओना, ऐ दौड़सँ अपन देहक दर्द बढ़िये गेल अछि। अपन जे नियमित-काज अछि, हँसुआ, कोदारि, खुरपीक, सेहो करिते छी, तइसँ अपना बुझि पड़ैए जे योग क्रिया बेसी भऽ जाइए। यएह छी मिथिलांचलक जीवन। जैठाम बालो-विधवा लेल, जएह साधन छल तेहीमे, रूइआ सूतक जनौ बनबैक अधिकार समाज देने छेलैन। कहब जे जनौक की खगता छल? विचारकेँ घोड़दौड़ नइ दौड़ाबियो, सच्चाइक सीमापर ठाढ़ भऽ देखियौ जे अपना ऐठाम कहियासँ जनौ धारण शुरू भेल, एकटा छोटछीन ओहन काज-रोजगार तँ छल। जइ काजकेँ करैसँ विधवो बर्जित नइ छेली। तैसंग

वैष्णव सम्प्रदायक संग जनौक चलैन सेहो भेल, माने कण्ठी-मालाक बीच जनौएक धागा बनैए। खाएर जे से, अखन से नहि। अखन बस एतबे जे स्वतंत्र जीवन जीबैक दिशा तँ छेलैहे। ई दीगर जे मेघडम्बर कहियौ कि छत्ता, ऊपरसँ शासन-सूत्र छेलैहे। मुदा जएह छल, तइमे स्वतंत्रो जीवन जीबैक बाट तँ छलैहे।

करीब चारि बजेसँ पहिनहि रोडपर दौड़ब शुरू केलौं, कनियेँ आगू बढ़लौं कि घुरनी दादीक आवाज आँगनसँ आबि कानमे पइस गेल। मन भेल जे घुरनी दादीकेँ पुछि लिऐन जे एना किए जरल बात, माने 'मनुक्ख खौक' बजै छी। तइसँ पहिने की बाजल छेली, से नइ सुनने छेलौं। लगले अपने काजक मन रोकलक। रोकलक ई जे अखन योग क्रियाक अन्तर्गत दौड़ैक अछि। तखन अनेरे अपन रूटिंग किए दुइर करब। नइ रूकलौं, दौड़ैत आगू बढ़िते गेलौं, मुदा जहिना हथबौगलीमे बन्न कऽ माला फेरैकाल मन दुनियाँमे चरौड़ करए लगैए, तहिना अपनो भेल। माने क्रिया छल दौड़ैक आ मन छल घुरनी दादीक 'मनुक्ख खौक' शब्दपर। खाएर किछु छल मुदा दौड़ब नइ छोड़लौं। किए अनेरे पतंजलिक योग क्रिया, मैथिल माललैन की नहि मानलैन, तइ भाँजमे पड़ितौं। अपन सीमापर पहुँच, जखन घुमलौं तखन डेगो छोट हुअ लगल आ मनक विचारो करैक अवसर भेटल। लगले, विवेक शक्ति जेना मुड़ीयारी देलक। घुरनी दादीक घरसँ कनी पाछूए रही, कि निर्णयक मोड़पर मन पहुँच गेल। पहुँचल ई जे घरपर सँ जँ पुन: आएब, से नीक नहि। आन किछु नीक-अधला जे हुअए, मुदा किछु समयक नोकसान तँ हेबे करत। तँए अखने, माने घुरतीएकाल, किए ने घुरनी दादीकेँ पुछि लिऐन। संयोग बनल घुरनी दादी दलानक आगूएमे ठाढ़ छेली। पुछलयैन-

"दादी, दौड़ैकाल सुनने छेलौं, मनुक्ख खौक, से की मनुक्ख खौक भेल?"

❑ **साभार: मनुक्ख खौक, जगदीश प्रसाद मण्डल, 25 सितम्बर 2022**

जइ साल मलमास निच्चाँ रहल आ बरखा अगते समाप्त भऽ गेल, तइ साल कातिक मासक दिवाली-छठि मौसम अनुकूल रहैए आ जइ साल मलमास सिरामे रहल आ बरखा अपन बोरिया-बिस्तर कन्हा तक पसारने रहल, माने कन्हा नक्षत्र धरि, तइ सालक मौसममे प्रतिकूलता आबिये जाइए, माने समयक हिसाब माने मासक हिसाबसँ। ऐ बेरक मौसम सहए भेल।

जहियासँ लछमीपुर गाम बसल आ गाममे छठि पाबैन शुरू भेल तहियासँ आइधरिक इतिहासमे ऐ बेर सन छठि पाबैन कहियो ने भेल छल। गाममे ऐ बेर बिजली आबि छठिक घाट तक पहुँच गेल। ऐ बेरक छठि पाबैन गाम-समाजक इतिहास बदैल देलक। एकर माने ई नइ बुझब जे किसान परिवारसँ निरमौल पाबैन, आब नोकरिहाराक भऽ गेल। इतिहास ई बदललक जे ऐ बेरक छठिमे गामक जेते बहरबैया छैथ, जिनका परदेशी सेहो कहै छिऐन, सभ अपन-अपन बाल-बच्चाक संग, कियो स्टीलक सूप तँ कियो पितरीक कोनियाँ नेने पहुँचल रहैथ। भाय, गाम छी, सबहक छीहे। गाममे पोखैरो आ तइमे घाटो बहुत अछिए। महिला जगत जहिना ऐँठाएल साड़ीकेँ अशुभ बुझि निरठाएल साड़ी पहीरि-पहीरिकऽ घाटपर पहुँचल छेली, तहिना धिया-पुता फुलझड़ी-फटाका लऽ कऽ पहुँचल छल। तँए कहब जे सियानक पाबैन नइ छी सेहो बात नहियेँ अछि, हुनको सबहक छिऐन्हे। ओ सभ रंग-बिरंगक अकासतारासँ लऽ कऽ हथगोला-बम तक लऽ कऽ पहुँचल छला। जइसँ पोखरिक घाटक रौनक एहेन भऽ गेल जे केतेको मोबाइल आ मंगटीका उड़ि गेल। खाएर जे भेल से भेल मुदा जितनी काकीक बरसोक मनक आशा पूर भेलैन जे पाँचो बेटी-जमाइक आ एगारहो नाति-नातिनक संग घाटपर पहुँचल छेली।

जमीन्दार बहादुरक आगूमे जहिना एकटंगा ठाढ़ कऽ देहपर पानि ढारि घोरनक छत्ता माथपर झाड़ि-झाड़िकऽ मालगुजारी असुल कएल जाइ छल, तहिना पानिमे ठाढ़ भऽ भऽ लोक, जे सभ अपन बेटा-बेटीक मनकामना केने छली, ओ सभ साँझोक अर्घ आ भोरोक अर्घक हाथ उठा छठि पाबनिक बिसर्जन केलैन।

छबो बेटा-बेटीक बिआहक पछाइत जितनी काकीक कोनो एहेन यज्ञ-काज परिवारमे भेबे ने केलैन जइमे परिवारक सभकियो एकठाम होइतैथ। एकर माने ई नइ कहै छी जे जँ छठिकेँ यज्ञक सीमामे राखब तँ दिवाली-भरदुतियाकेँ किए छोड़ि देब। सभ एक्के मासक नहि, एक्के पक्षोक पाबैन छी। ओना, जितनी काकी कए बेर अपनो बेटा-ले छठि महरानीकेँ हाथ उठा कबुला केने छेली जे जँ बेटा हएत तँ पाँच बरख तलावमे ठाढ़ भऽ कऽ हाथ उठाएब। मुदा भऽ जाइन बेटी, तइसँ छठिक कबुला कटि जाइन। अन्तमे आजीज भऽ कऽ जितनी काकी छठिक कबुलो बन्न केलैन। मुदा बिनु कहनौं छठि महरानी बुझलखिन आ चारिम बेर बिनु कहनौं बेटा देलखिन। चारिम नम्बरमे, माने तीन बेटीक पछाइत, एकटा बेटा भेलैन, जे अपन पहिलुका पुरुखाक घराड़ीपर कायम अछि। चारिम नम्बर बेटाक माने ई नहि बुझब जे जहिना विद्यालय-महाविद्यालयमे एक नम्बर माने फस्ट, दू नम्बर माने सेकेण्ड आ तीन माने थर्ड आ चारि माने फेल। आन सालक छठि पाबैनसँ भिन्न ऐ बेरक मौसम बनि गेल। जइ साल मलमास निच्चाँ रहल आ बरखा अगते समाप्त भऽ गेल, तइ साल कातिक मासक दिवाली-छठि मौसम अनुकूल रहैए आ जइ साल मलमास सिरामे रहल आ बरखा अपन बोरिया-बिस्तर कन्हा तक पसारने रहल, माने कन्हा नक्षत्र धरि, तइ सालक मौसममे प्रतिकूलता आबिये जाइए, माने समयक हिसाब माने मासक हिसाबसँ। ऐ बेरक मौसम सहए भेल।

❑ **साभार: ओसचट बीमारी, जगदीश प्रसाद मण्डल, 05 नवम्बर 2022**

"बौआ, भगवान ओहने माए-बापक परिवारमे जन्म देलैन, जिनका दुनियॉंक सम्पैतमे किछुओ ने हिस्सा छैन, छैन सिरिफ अपन देह भरिक सम्पैतटा, तैठाम जँ देह धुनि नहि चलब तखन पार लागल। एक तँ ओहुना देखै छी मनुखक ओहन चालि अछि जे अनेरो लोकक चीजो चोरबैए आ दुब्बर-दानर देखि बलजोरियो छिनैए, तैठाम जँ अपनो भरि नहि करब तखन कए दिन चलब..!"

"बौआ, गाममे ते सभ देखिते छिऐ जे भैया केहेन छैथ। भरि दिन गपे-सप्प आ ताशेक पाछू लगल रहै छैथ। विधातेकेँ की दोख देबैन। रंग-रंगक कलम रखने रहै छैथ विधाता, जखैन जेहेन मन रहलैन तखैन तेहेन कलमसँ लिख दइ छैथ।"

भौजीक बात सुनि हँसी लगि गेल। हँसी लगैक कारण भेल जे दुनियॉंक आदि-अन्त तँ सभ जनैए जे जे जन्म लेलक ओ मरबे करत। मुदा बीचक जिनगीमे केतए भोथिया जाइए से बुझबे ने करैए। एहने बुधिआरि बुझनिहारि अल्लापुरवाली भौजी सेहो छथिए। ओना, अल्लापुरवाली भौजी सासुर अबिते, बिना सासु-ससुरक कहने, गाइयक थैर-गोबरसँ लऽ कऽ खुआएब-पियाएब माल-जालक शुरू कऽ नेने रहैथ, जइसँ साउसो-ससुर अपन परिवारक प्रमुख काज–माने पशुपालनक सभ काज–सँ निसचिन्त जकाँ मने-मन भइये गेलैथ। बजलौं- "भौजी, अहाँ जनिते छी जे ने खुट्टा रखने छी आ ने तइमे बन्हैले माल-जाल पोसने छी। लऽ दऽ कऽ एक गाही मनुखेटा हमरा घरमे अछि। तइमे ऐबेरक बीतल तीन मास जे रहल अछि आ अखनो अछि ओ नाकोदम केनहि अछि, तैठाम बलिहारी अहाँकेँ अछि जे एहनो समयमे दूटा गाए सम्हारि दस किलो दूधक आमदनी परिवारमे केने छी।"

जहिना कोनो बीतल घटना वा चलैत जिनगीक क्रियाक बीचक बिचड़ैत विचार मनकेँ उत्फुलित करैए तहिना अल्लापुरवाली भौजीकेँ भेलैन, बजली-

“बौआ, केलहे देह अछि तँए एहेन समयमे अपनाकेँ सम्हारि रखलौं, नइ तँ बिलैट जइतौं।”

अल्लापुरवाली भौजीक विचारक प्रवाहमे अपन कोनो परवाह नहि रहल। खापड़िमे देल मकइ जकाँ अनेरे मुँह फुटि गेल-

“भौजी, ऐ तीन मासक बैसारीमे माने बाढ़ि एलहा समयमे, गामक यएह देखै छी जे जँ बोड़ो-कट्ठाक हिसाबसँ धान भेल रहैत तँ आइ गाम धनमण्डल भेल रहैत मुदा से भऽ गेल पौकेट कटलाहा परदेशिया जकाँ, जेकरा कानब छोड़ि मुँहमे कोनो बोल नहि रहैत। गाममे जेतबो माल-जाल, गाए-महींस छल ओहो रंग-बिरंगक कारणे–रंग-बिरंगक कारण भेल, खुएनाइ-पीएनाइसँ लऽ कऽ बरसाती खढ़क रोगक संग-संग रखैक घर-दुआर धरि–सभटा उपैट गेल। धन्यवाद अहाँकेँ दी, जे अखनो अपन मुँहक लाली ओहने रखने छी जेहेन नीक समयमे रहै छल।”

हमर बात सुनि अल्लापुरवाली भौजीक विचार-धारमे जेना मोइन फुटि गेलैन तहिना बजली- “बौआ, मनुख बनि जखन धरतीपर जनम नेने छी तखन जँ अपनो जीबैक उपाय सोचि नहि चलब तँ जीब केते दिन सकै छी।”

भौजीक विचार सुनि मन जेना पसीज गेल। जँ एहेन विचार-शक्ति नारी कि पुरुखोमे जगि जाए तँ ओ जरूर अपनो आ अपना संग आनो-आनकेँ मनुखक शकलमे मानव बास स्थापित कऽ लेत। मुदा...। अपन जिनगीक बेवहारिक प्रवाहकेँ नुका वैचारिक धारमे भँसियाइत बजलौं- “भौजी, लोक कि कोनो झुठे बजैए जे बुधि बपजेठ होइ छइ। तहूमे जँ ओ बेवहारिक भऽ जाए तँ घीबोसँ चिक्कन होइते अछि।”

‘घीबोसँ चिक्कन’ आकि ‘बुधि बपजेठ’ सुनि अल्लापुरवाली भौजीक मन जेना प्रेमास्पदक अवस्थामे पहुँच गेलैन तहिना भव-विह्वल होइत बजली-

“बौआ, भगवान ओहने माए-बापक परिवारमे जन्म देलैन, जिनका दुनियॉंक सम्पैतमे किछुओ ने हिस्सा छैन, छैन सिरिफ अपन देह भरिक सम्पैतटा, तैठाम जँ देह धुनि नहि चलब तखन पार लागल। एक तँ ओहुना देखै छी मनुखक ओहन चालि अछि जे अनेरो लोकक चीजो चोरबैए आ दुब्बर-दानर देखि बलजोरियो छिनैए, तैठाम जँ अपनो भरि नहि करब तखन कए दिन चलब..!”

❑ साभार: पसेनाक मोल, जगदीश प्रसाद मण्डल, 06 नवम्बर 2019

पचहत्तैर बरख स्वतंत्र भेलो पछाइत मिथिला-गामक लोक किए पड़ा रहला अछि? हजारो कारण भऽ सकैए मुदा ओइ कारणक निदान केना हएत तइ दिशामे बढ़ब आकि अंगरेजीए शासनमे अपनाकेँ बुझब।

मिथिलाक आने गाम जकाँ शीतलपुर सेहो एकटा गाम अछि। ऐठाम एहेन भ्रम नइ हुअए जे मिथिलाक सभ गाम एक्के रंग अछि। जहिना देश अनेक रंगक बोली-वाणी, भाषा-साहित्यक संगम छी तहिना उजड़ल-उपटल गामसँ लऽ कऽ सुख-समृद्धिसँ भरल गाम सेहो छीहे। पढ़लो-लिखलक दौड़मे देखब तँ अंगरेजी माध्यमसँ अपना ऐठाम पहिल स्नातक 1872 इस्वीमे भेला, तँ दोसर दिस ओहन गाम नइ अछि जइमे अखन तक स्नातक नइ भेला अछि। यएह तँ कबीरदासक कहब छैन, दुनूक बीच पाटन करू।

मिथिलाक गामक अन्तर (दूरी) एतबे नइ ने अछि, कोनो-कोनो गाम आमक गाछीसँ झाँपल अछि, तँ कोनो-कोनो गाम एहेन नइ अछि जे जहिना 1934 इस्वीक भुमकममे टुटल कोसीक रेलबे पुल जकाँ अखनो कोसिकन्हा भेल गाममे आमक गाछी सेहो टुटल अछि। पचहत्तैर बरख स्वतंत्र भेलो पछाइत मिथिला-गामक लोक किए पड़ा रहला अछि? हजारो कारण भऽ सकैए मुदा ओइ कारणक निदान केना हएत तइ दिशामे बढ़ब आकि अंगरेजीए शासनमे अपनाकेँ बुझब।

मिथिलाक माटि-पानि उर्वरशील अछिए। एते सुन्दर माटि-पानि देशक कोनो राज्यमे नहि अछि। अनेको रंगक सुन्दर माटि, अनेको रंगक पहाड़ी नदीक पवित्र पानि, मिथिलाक उत्तरसँ दच्छिन होइत गंगाक संग समुद्रमे बहि रहल अछि मुदा रौदीक भरपाइ ले सरकार अनुदाने दइमे पस्त अछि। एक्कैसमी सदीमे ने अपना सभ छिऐ, बाँस-खरहीक मरबा बीच जे बर-कनियाँक वैवाहिक सम्बन्ध होइ छल से आब थोड़े छी। आब तँ हवाइ-जहाजक विवाह-भवनमे बिआहो करै छी आ जिनगी भरि दुनू परानी कुस्तम-कुस्ता सेहो करिते छी। खाएर जे छी से छी तइसँ

हितनारायण बाबाकेँ कोन मतलब छैन, मतलब छैन अप्पन तीनू बेटा आ दुनू बेटीक गढ़ैन केना हएत..।

अपना जनैत हितनारायण बाबा पाँचो सन्तानक गढ़ैन मिथिलाक बेवहारानुकूल करैत आबि रहला अछि। अप्पन साठि बर्खक उम्रक बीच हितनारायण बाबा अपना जनैत कोनो बेटा-बेटीक संग दूजा-भाव नहि केलैन। गाम-घरमे कहबियो छइहे जे एक हाथसँ थोपड़ी नइ बजै छइ। थोपड़ी बजबैले जहिना दुनू हाथक जरूरी होइ छै तहिना बनबैबला आ बनैबलाक बीच सेहो होइ छइ। कुम्हार केहनो कारीगर किए ने हुअए मुदा जँ ओकरा कुम्हराएल माटि नहि भेटए तँ बरतन गढ़ब कठिन भइये जाइए। किए तँ बनौनिहारक विचार ताबते धरि कारगर होइ छै, जाबत धरि माटि आ निर्मातामे एकरूपता नइ रहैए। सोभाविको अछि। माटि-माटिक अपन-अपन गुण-दोष सेहो अछिए। एकटा माटि ओहन होइए जइमे अनुकूल लसपन रहने नीक-सँ-नीक आ पैघ-सँ-पैघ बरतन निर्माण असानीसँ भऽ जाइए आ एकटा ओहनो दोखरा बाउल माटि सेहो अछिए जइमे लसपनक अभाव रहने सुन्दर आ पैघक कोन बात जे कुरूपो आ निम्नो बरतनक गढ़ान पहाड़ोसँ भारी भइये जाइए। दू गोटाक बीच, भऽ सकैए प्रकृतिक गुण-अवगुण रहने एकरंगक गढ़ान नहि हुअए, मुदा बेकतीक समूहक (समूहक माने समाजसँ नहि, परिवारसँ) बीच सभकियो रहिते छी, भलेँ ओ एको-दूक भऽ सकैए आ दसो-बीसक तँ होइते अछि। तैबीच अनुकूल सम्बन्ध बनब असम्भव नहियेँ अछि। नइ शत-प्रतिशत, ओना शत-प्रतिशत असम्भवो नइ अछि, तँ अधो-चौथाइ प्रतिशत। किए तँ देखिते छी जे पाँच-दस कट्ठाक खेतमे एकरंग जोत-कोरक संग एकरंग बीआ बाउग केने उपज सेहो एकरंग होइतो अछि आ नहियोँ होइए। गतिशील दुनियाँमे मति भिन्न हएब सोभाविको अछि आ बाधक सेहो अछिए। खाएर जे अछि से अछि तइसँ हितनारायण बाबाकेँ कोन मतलब छैन, मतलब छैन अप्पन पारिवारिक जीवन पार करब।

❑ **साभार: पुत्र परीक्षा, जगदीश प्रसाद मण्डल, 09 नवम्बर 2022**

“बाउ, जे मनुख पल-पल जिनगीक महत बुझि पग-पग बढ़ैए ओकर जिनगी आ जे पल-पलकेँ पलपलाएल रस पीब बढ़ैए तेकर जिनगीमे अकास-पतालक अन्तर होइ छइ। किएक तँ नीको आ अधलोमे पलपली होइते छइ।”

शिवजीकेँ तीन सन्तान, दूटा बेटा एकटा बेटी, तीनू छँटगर। जेठ बेटा- कुशेसर- खेलौड़िया बेसी, तँए हाइ स्कूलक पढ़ाइसँ आगू नै बढ़ि सकल। नै बढ़ैक पाछू पितोक ओते तनदेही नै रहलैन जेतेसँ बेटा-बेटी सुधरैए। सोलह बर्खक अवस्थामे कुशेसर दिल्ली चलि गेल। गरो नीक बैसलै, एकटा फैक्ट्रीक ऑफिसमे नोकरी भेट गेलइ। दरमाहासँ बेसी बाइली हुअ लगलै। जे अपन खर्च चलबैत बैंकमे नियमित रखबो करए आ पाँच हजार रूपैआ पितोकेँ मासे-मास पठबैत रहल। बहिनक बिआह सेहो नीक जकाँ केलक। छोटका भाएकेँ बंगलोर पठा डॉक्टरी पढ़बैए...।

समय आगू बढ़ल। शिवजी जिनगीक अन्तिम अवस्थामे पहुँच गेला। परिवारक संग कुशेसर परसू गाम आएल। चारू धिया-पुता प्राइवेट कोचिंगमे पढ़ै छइ। कोठरीमे दुनू परानी शिवजी बैसल अपनो जिनगीकेँ आ बेटो- कुशेसरो-क जिनगीकेँ भजारि रहल छैथ।

अपन पढ़ल-लिखल जिनगी देखि शिवजी बजला-

“ओना, ईश्वरक दयासँ परिवारक पैछलो आ ऐगलो गति नीक अछि मुदा..?”

‘मुदा’पर शिवजीकेँ रूकिते पत्नी टोकि देलखिन- “मुदा की?”

ओना, अखन धरि पत्नियोँ नीक जकाँ शिवजीक जिनगीकेँ नै जनैत, मुदा शिवजी तँ स्वयं कर्ता-धर्ता छैथे। संयोग नीक रहल जे पत्नीकेँ उत्तर दइसँ पहिनहि पोता- कुशेसरक जेठ बेटा- जे हाइ स्कूलमे पढ़ैए, कोठरी पहुँच गेल।

पोताक रूप-रंग देखि शिवजी सहैम गेला। सहमला जे अपना आगू कुशेसर केते पढ़ने अछि। मुदा कमेबाक आ जिनगी जीबाक जे लूरि ओकरा छै ओ अपना कहाँ भेल! खाली-खाली जिनगी खलियाइत सोलहन्नी खलिआ गेल! कोन मुहेँ केतौ बाजब जे जिनगीक ई लीला अपन छी!

कोठरी अबिते नन्दन पुछलकैन-

“दादाजी, अपन जिनगीक अनुभवक किछु बात हमरो सुना दिअ।”

पोताक प्रश्न सुनि शिवजी ठकुआ गेला। ठकुआ ई गेला जे सत्-सत् कहि देबै तँ हो-ने-हो ओकरो मन पढ़ै दिससँ हटैक जाइ, ओना, कोन रूपेँ दिल्लीमे रहैए, हमरा बातक केते असैर हेतै, ई परिखब तँ कठिन अछि। झाँपि-तोपि अपन कहि देने तँ उत्तर भइये जेतइ। मुदा अधखिजू कहने थोड़े नीक नहाँति बुझि पौत। सभ रोग-वियाधि, सोग-सन्तापकेँ मनमे तहियबैत शिवजी कहलखिन-

“बाउ, समय सभसँ बलवान होइ छै, श्रमवाने ओकरा पकैड़ संगे चलि सकैए, तँए..?”

‘तँए’ सुनि नन्दन बिच्चेमे पुछलकैन-

“की बलवान?”

पोताक दोहरबैत प्रश्न सुनि कहलखिन-

“बाउ, जे मनुख पल-पल जिनगीक महत बुझि पग-पग बढ़ैए ओकर जिनगी आ जे पल-पलकेँ पलपलाएल रस पीब बढ़ैए तेकर जिनगीमे अकास-पतालक अन्तर होइ छइ। किएक तँ नीको आ अधलोमे पलपली होइते छइ।”

❑ **साभार: पल भरि, जगदीश प्रसाद मण्डल, 24 मई 2014**

आइ केना जीबै छी, एतबे ने बुझब अछि। तइले अनका जकाँ हाइ-हाइ करब से की कोनो कुकुर कटने अछि जे नाचल घुरब।

शुभकान्त काकासँ भेँटक अन्तिम दिन जे गप-सप्प भेल छल तइमे असल विषय छल 'सरकारक सड़क योजना।' गाम-गाममे पक्की सड़क बनत, बनबो कएल आ बनियोँ रहल अछि। ऊँचगरो बनत आ मजगूतो बनत। नीक बात। अही क्रममे शुभकान्त काका विघटनक चर्च केलैन। ओना, अपन मन वौआ कऽ बैशाखमे जे बेटाक बिआह करब आ तइमे मोटर साइकिल सेहो देत, तइ दिस झूकि गेल छल। जखन घरमे मोटर साइकिल औत, तइले जँ नीक सड़क नइ रहत तँ ओकर सेखीए की रहत...। मन उधिया गेल रहए। उधियाइत-उधियाइत भदुआर घाटक चाहक दोकानपर पहुँच गेल। अफीमक पानि मिलौल चाहक सुआद जे ओकर छै ओ दोसराक नइ छइ। अछि तँ बहुत शिकारी–माने अफीमक पानि मिला चाह बनौनिहार शिकारी–मुदा ओकर शिकरपन अगुआएल छै, तँए इलाकाक शिकार पकड़ने अछि। नाओं सुनि अपनो मन छुछुआइये लगैए, जँ डेढ़िया दाम दऽ दियौ तँ चाह पीबैत-पीबैत या तँ अलिसाइये जाएब, नहि तँ चुनावक समैयक चुटपुटिया नेता जकाँ भाषने करैत विदा हएब।

मुदा लगले मन बैशाखक लगनसँ पछुआए लगल। मनमे उठि गेल परम्परा। एक मनमे परम्परा उठिते दोसर मन बाजल- "सासुरमे देल बेटाक सवारीपर चढ़ब पाप छी!"

मने-मन मनमनाइते रही कि बिच्चेमे शुभकान्त कक्काक शब्द- 'विघटन' नचैत-नचैत आगूमे खसल। खसिते मनक विचार कँचका माटिक बनल पजेबा पकबैक विचार जकाँ पकपन मनमे आबए लगल। कुम्हारक आवा जकाँ जेना-जेना राति ढहैत जाइए तेना-तेना आवाक बरतनमे पकपन बढ़ैत जाइए आ भोर होइत-होइत पकपन पेबला पछाइत शान्त होइत सेरा जाइए जइसँ कुम्हार ओकरा उघारि

बरतनकेँ हाथमे उठा आँगुरसँ टोनि-टोनि अपन कारीगरीकेँ जाँचि-जाँचि सन्तुष्टि पबैए...। मन बेकाबू हुअ लगल जे परिवारमे अहिना सभ दिन लटकल रही आ गामक ऐगला-पैछला बात बुझबे ने करी..? ऐगला-पैछला बात ई जे केमहर सड़क बनैए, केमहर कोसीक नहर खुनाइए आ केतए स्टेट बोरिंग गराइए...। मुदा लगले मन असथिर भऽ गेल। असथिर होइक कारण भेल जे छुट्टी दुआरे शुभकान्त काका भैँट नहि भेला, ऐमे अधले की भेल। ओहो तँ ओहने लोक छैथ जे गामक सिमानकेँ ऐपार-सँ-ओइपार टहलबे करै छैथ, तखन तँ भेल काजक कुसंयोग जे भैँट नहि हुअ देलक। ओना, मनुखो जँ अपन मोटा फेक घरसँ पड़ा जाए, ओहो अपना जगहपर नीक अछि, मुदा घरक डरे भागब नइ भेल सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। सभकेँ स्वतंत्र जिनगी होइ, ऐमे अधले की भेल।

मन नइ मानलक। शुभकान्त काकासँ भैँट करए विदा भेलौं। जहिना ओ अपन पैरक सवारी रखने छैथ तहिना अपनो अछिए। तहूमे गामेक बात छी, अधो किलोमीटरसँ कमे दूरीपर हुनकर घर छैन। ओना, महिना दिनसँ जे आएब-जाएब छुटल छल तइसँ अनठियो केते गोरे पुछबे करता जे ‘मन-तन खराब भऽ गेल छेलह जे रस्तो-पेरा बन्न केने छेलह।’ फेर मनमे भेल जे ओहो तँ नीके ने हएत। भैँट करए एक गोरेसँ जाएब आ कुशल-छेम अनेकोसँ हएत। हँ, तखन एतेक सतर्की जरूर रखैक अछि जे रस्ते-रस्ते कुशल-छेम करैत चलब, डेग नहि रोकब। ओना, गपाह लोकक कमी नहियेँ अछि मुदा ओ अछि गप्पीए सभ-ले। हमरा सन-सन लोक-ले तँ नहियेँ अछि। रहबो केना करत। कुशलो-छेममे ने जीवन छीपल अछि। आइ केना जीबै छी, एतबे ने बुझब अछि। तइले अनका जकाँ हाइ-हाइ करब से की कोनो कुकुर कटने अछि जे नाचल घुरब। तँए समाजक बीच जेते सामाजिक जिनगी अछि वएह कुशल-छेम ने जानब-बुझब अछि...।

❑ **साभार: विघटन, जगदीश प्रसाद मण्डल, 31 मई 2017**

चौंकल मन लाल भाइक छेलैन्हे, अपन पूर्वज मोन पड़लैन। राजा हरिश्चन्द्र सपनेमे ने राज-पाट सभ बोहा लेलैन। मुदा ई विचारबे ने केलैन जे राज-पाट राजवासीक छिऐक आकि अपन खतियानी छी..!

"बाप रे! जीब कठिन अछि..!"

ओना, नीक जकाँ लाल भाइक भक् टुटल नइ रहैन, भकुआएलमे मुहसँ निकललैन। ओछाइनपर सँ उठि ठाढ़ भेल रहैथ। तइसँ किछुए पहिने पत्नी उठि घर बहारि रहल छेलखिन।

पतिक बात सुनि सुचित्रा भौजी मने-मन विचारि लेली जे भरिसक सपनाएल मन छैन तँए मुहसँ एहेन बोल निकललैन। एहनो भऽ सकैए जे सपना देखिते समय नीन टुटि गेल हेतैन, तहूसँ एना बजला अछि। ..मुँहक बातकेँ, सपनेक बात बुझि सुचित्रा भौजी झुठियाबए लगली। ओना, मनमे ईहो उठैत रहैन जे सुतैकाल, ओछाइनपर अबैसँ पहिने नीक जकाँ हाथ-पएर नइ धोने हेता तँए सपनेला अछि। फेर भेलैन जे जँ हाथ-पएर धोनौं होथि आ ओछाइनकेँ नीक जकाँ झाड़ि कऽ नहि ओछौने होइथ? मुदा अपने मन रोकैत कहलकैन जे ओछाइन तँ अपनेसँ झाड़ि कऽ ओछौने रही..! लगले फेर दोसर विचार जगलैन, एहनो तँ भइये सकैए जे पैशाव करि कऽ नहि सुतल होइथ।

अनिसचित विचार सुचित्रा भौजीक मनमे उठने निसचित विचार जगबे ने केलैन।

घर बाहरब छोड़ि सुचित्रा भौजी लाल भाइक चेहरापर नजैर देलैन। बसियाएल फूल जकाँ लाल भाइक चेहरा मौलाएल सन बुझि पड़लैन। पतिक चेहरा देखि सुचित्रा भौजी किछु पुछैसँ पहिने परहेज करैत सोचली जे दिनक वा खाइ-पीबै राति तकक जँ बात रहैत तँ निर्भिक भऽ पुछलो जा सकइ छल मुदा लगले बिछानपर सँ निनाएल उठबे केलाह हेन। ई तँ ओहन अवस्था छी जखन

कियो समाधि सम्पन्न करैत उठै छैथ। ई अवस्था दुनियाँ-दारीसँ हटल रहैक होइए, तइ बीच दुनियाँ-दारीक ओहन विषये किए सोझामे औत जे एना चौंक कऽ बजला..? ...किछु बजैसँ परहेज करैत सुचित्रा भौजी अपन मुँह बन्ने रखली।

लाल भायकेँ ओछाइनपर सँ उठिते पत्नीपर, माने घर बहारैत सुचित्रापर नजैर पड़ि गेने चेत एते चेतनशील भइये गेल रहैन जइसँ मनमे उठैत अनेको दृश्यकेँ मनेमे दाबि अनमनस्क भेल विचारि लेलैन जे मनक देखल दृश्यकेँ मने-मन किए ने मँथली जे आखिर एहेन दृश्य मनमे आएल केना? देखल दृश्य जँ दोहरा कऽ अबैए तँ ओ उचित भेल मुदा बिनु देखल ओहन दृश्य जँ अबैए तँ ओहन दृश्यक रूप मनमे बनल केना? तँए अनमनस्क ठाढ़ भेल लाल भाय विचारए लगला। भोरक सपना। भोरक सपना तँ सत् होइते अछि, की दृश्य देखलौं? यएह ने देखलौं जे जीवन विचड़नक बीच सघन बन पहुँच गेलौं, जइमे सुन्दर-सुन्दर गाछो-बिरीछ, झड़नो-पहाड़ आ बाघ-सिंह आ भालु सन जानवरो अछि। तइ बीच जीब केना सकै छी? जी-बन माने जिनगी बना जीब कठिन अछिए। मुदा लगले मन ठोस गबाही दैत कहलकैन जे कठिन जरूर अछि मुदा असम्भव अछि, सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। जँ से रहैत तँ फेर जीवक जीवन अछि की नहि..!

चौंकल मन लाल भाइक छेलैन्हे, अपन पूर्वज मोन पड़लैन। राजा हरिश्चन्द्र सपनेमे ने राज-पाट सभ बोहा लेलैन। मुदा ई विचारबे ने केलैन जे राज-पाट राजवासीक छिऐक आकि अपन खतियानी छी..!

❑ साभार: सघन बन, जगदीश प्रसाद मण्डल, 17 मार्च 2020

जखने जीवन वा वस्तु उपयोगी बनैए तखने ओकर मूल्य बनै छइ। मूल्य बननहि ने कोनो वस्तुए आकि जीवने मूल्यवान होइए। जे लिलसा सभ जीवनो आ वस्तुओकेँ अछिए। देखिते छी जे माटि केना लोहा बनि सुन्दर-सँ-सुन्दर इमारतमे सजि चमकैए। तखन मनुक्ख तँ सहजे मनुक्खे भेला।

ऊपर-निच्चाँक खाढ़ी खाली देहे-देहीक सम्बन्धमे अछि सेहो बात नहियेँ अछि, जीवनक सभ क्षेत्रमे अछि। केतौ अर्थक कमी-बेसी रहने धनीक-गरीब होइए तँ केतौ ज्ञानक कमी-बेसी रहने विद्वान-मूर्ख सेहो होइते अछि। तहिना आनो-आन क्षेत्रमे सेहो अछिए। खाएर जे अछि, जेतए अछि से तेतुक्का भेल, मुदा गाममे सुधीर भाइक संग से नहि छैन। जहिना समाज गामक जनगणक मनमे पसरल रहैए तहिना सुधीर भाय सेहो जनगणक जीवनक अधिकांश क्षेत्रमे वौधिक रूपमे पसरल छैथ। सुधीर भाय समाजक अधिकांश लोककेँ मात्र जीवन-पथ देखौनिहारे नहि अपन चलल बाटपर चलैले प्रेरित केनिहार सेहो छैथ। जइसँ अगुआ पथिक मानि समाजक लोक हुनका 'भाय' कहै छैन। अपनो 'भाय' कहैक यएह आधार अछि। ओना, जीवनक कठिन समस्या समाधानक ओहन सूत्र सुधीर भाय सुतिआइये देलैन जइसँ कौलेज-जीवन टपैमे आसान सेहो भेबे कएल।

हाइ-स्कूल तक माने मैट्रिक तक खेलाइते-धुपाइते थर्ड डिवीजनसँ टपि गेलौं। मुदा जखन कौलेजमे गेलौं तखन कौलेजक नीक रिजल्टक भान भेल। ऐठाम किए ने कहि दी जे नीक रिजल्ट केना होइए, से भान नहि भेल। भान ई भेल जे नीक रिजल्ट भेने नोकरीमे आसान होइए। ऐठाम हम ई नहि कहए चाहै छी जे आजुक शिक्षा नोकरीन्मुख भऽ गेल अछि श्रमान्मुख वा जीवनोन्मुख नहि अछि। ओना, नोकरीन्मुखीकेँ सेहो जीवनोन्मुखी कहले जा सकैए मुदा ओ स्वावलम्बी जीवनक सीमासँ फराक अछि। स्वावलम्बी जीवन ओ भेल जेकरा वैदिक सूत्र-

मंसा, वाचा, कर्मणा कहल गेल अछि, जइसँ स्वावलम्बी जीवन प्राप्त होइए।

जखन हाइ स्कूल टपि, माने मैट्रिक पास केलाक पछाइत कौलेजमे नाओं लिखेलौं आ पढ़ाइक नीक बाट पकैड़ नीक फलक आशामे, माने नीक रिजल्टक आशामे दुनियाँक चक्कर लगबए लगलौं तखन सुधीर भायकेँ दुनियाँक बीचमे असगरे ठाढ़ देखलयैन।

सुधीर भायकेँ असगर ठाढ़ देखि अपना मनमे आशाक हिलोर उमड़ल। माने ई जे एकसँ अधिक लोककेँ एकठाम रहने मन अपन बात बजैले धकमकाइते अछि जे एहेन बात बाजब तँ लोक बोकियाएत, मुदा असगरमे से बात नहि होइए। बोकियबैयोबला विचारक रूप बदैल नीक-बेजाए-क सीमामे आबि जाइए। जइसँ विचारे-विमर्शटा नहि, नीक-बेजाएकेँ बेरबैत चूक-अचूकक सुझाव सेहो भेटते अछि। जइसँ अनुपयोगी जीवन कहियौ कि अनुपयोगी वस्तु, दुनू उपयोगी बनिते अछि। जखने जीवन वा वस्तु उपयोगी बनैए तखने ओकर मूल्य बनै छइ। मूल्य बननहि ने कोनो वस्तुए आकि जीवने मूल्यवान होइए। जे लिलसा सभ जीवनो आ वस्तुओकेँ अछिए। देखिते छी जे माटि केना लोहा बनि सुन्दर-सँ-सुन्दर इमारतमे सजि चमकैए। तखन मनुक्ख तँ सहजे मनुक्खे भेला।

❑ साभार: जिनगीसँ प्रेम, जगदीश प्रसाद मण्डल, 14 जनवरी 2022

“जखन लहेरियासराय अस्पताल बनल आ अंग्रेजी दवाइक माध्यमसँ इलाज शुरू भेल तखन गाममे एहेन वातावरण बनि गेल जे अंग्रेजी दवाइ गाइक खून आ सुगरक चर्बीसँ बनैए। जेकर असर भेलै जे हिन्दुओ आ मुसलमानो अंग्रेजी इलाजसँ बिमुख हुअ लगला। मिथिलांचलक ई इलाका जाति आ धर्मसँ ओइ रूपैँ बँटि गेल अछि जे कोनो नीक काज बिनु संघर्षे सम्भव नै अछि।”

अखन धरि मिथिलाक गाममे रोगक इलाज जड़ी-बुटीसँ लऽ कऽ झार-फूक धरि होइत। ने एलोपैथिक ढंगसँ इलाज केनिहार आ ने लोक बुझैत। एक तँ नव ढंगक इलाज दोसर नव लोक केनिहार। तँए कठिन। डॉक्टर नीलमणि तँ बच्चा रहैथ तँए मिथिला समाजक सम्बन्धमे किछु ने बुझैथ। मुदा पण्डित शंकर तँ मिथिलाक समाजकेँ नस-नस जनैथ।

आठ बजेक भिनसुरका समय। पण्डित शंकर आ डॉक्टर नीलमणि चाह पीब गप-सप्प करै छला। डॉक्टर नीलमणि पण्डित शंकरकेँ पुछलखिन-

“दादा, ऐठाम रोगक इलाज कोन रूपैँ कएल जाइ छइ?”

डॉक्टर नीलमणिक प्रश्न सुनि कनी काल गुम्म भऽ पण्डित शंकर कहलखिन- “ऐठाम, मिथिलांचलमे रोगक इलाज करैक अनेको पद्धैत चलि रहल अछि। ओना, मुख्य रूपसँ लोक जड़ी-बुट्टीक उपयोग कऽ रोगक इलाज करैए, जे बहुत पहिनेसँ चलि आबि रहल अछि। इलाजो बिसवासू अछि। आयुर्वेद नाओंसँ ऐ इलाजकेँ जानल जाइए। पैघ-पैघ ज्ञानी पुरुख सभ ऐ इलाजकेँ खोजि-खोजि समृद्ध आ विकसित केलैन। दोसर तरहक अछि झार-फूक, जे मंत्रक माध्यमसँ चलैए। तेसर तरहक अछि भगताइ, जे देवस्थानमे खास बेकती-द्वारा देवी-देवताक नाओंपर

होइत। ऐ तरहेँ आरो केतेको रस्तासँ रोगक इलाज ऐ इलाकामे चलैत आबि रहल अछि।"

पण्डित शंकरक बात सुनि नीलमणि पुछलखिन- "की एलोपैथक चलैन नै अछि?"

"अखन धरि नै अछि। मुदा बिनु एलोपैथी इलाजसँ आइक समयमे रोगक इलाज असम्भव भऽ गेल अछि। किएक तँ बहुतो एहेन रोग अछि जेकर सटीक निदान ने होमियोपैथमे अछि आ ने आयुर्वेद आकि यूनानी इत्यादिमे ऐठाम अछि।"

पण्डित शंकरक बात सुनि मुड़ी डोलबैत डॉक्टर नीलमणि पुछलखिन-

"जखन ऐठामक लोक एलोपैथ जनितो ने अछि तखन इलाज केना कराएत?"

पण्डित शंकर बजला- "अइले वैचारिक आ बेवहारिक संघर्ष करए पड़त। हमरा ओहिना मोन अछि जे जखन लहेरियासराय अस्पताल बनल आ अंग्रेजी दवाइक माध्यमसँ इलाज शुरू भेल तखन गाममे एहेन वातावरण बनि गेल जे अंग्रेजी दवाइ गाइक खून आ सुगरक चर्बीसँ बनैए। जेकर असर भेलै जे हिन्दुओ आ मुसलमानो अंग्रेजी इलाजसँ बिमुख हुअ लगला। मिथिलांचलक ई इलाका जाति आ धर्मसँ ओइ रूपेँ बँटि गेल अछि जे कोनो नीक काज बिनु संघर्षे सम्भव नै अछि।"

डॉक्टर नीलमणि- "तखन की करब?"

पण्डित शंकर- "हँ उपाय अछि। हम अहाँकेँ रस्ता बता दइ छी। अहाँ बंगाली छी जइसँ जाति आ घर्म दुनू झँपाएल अछि। ऐठाम मोटा-मोटी हिन्दूमे तीन वर्ण अछि। पहिल अगुआएल जाति, जेना सोति, ब्राह्मण, राजपुत, भूमिहार इत्यादि। दोसर पनिचल्ला जाति- जेना यादव, धानूक, कियोट, अमात, बरइ, कोइर इत्यादि आ तेसर अछि हरिजन। जेकरा समाजमे अछोप जाति कहल जाइ छै, जेकर पानि उच्च जातिक लोक नै पीबै छैथ। ने पानि पीबै छैथ आ ने छुअल अन्न खाइ छैथ।"

❑ **साभार: उत्थान-पतन, जगदीश प्रसाद मण्डल, 2006**

“बौआ, बैशाख-जेठक रौद होउ आकि पूस-माघक जाड़, ने रौदकेँ रौद बुझै छेलौं आ ने जाड़केँ जाड़। परिवारक जहिया जे काज रहै छल, तेकरा पाछू पड़ि करैत एलौं, तँए ने परिवार चलैत आबि रहल अखनो जीवित अछि, नहि तँ कहिया ने मरि गेल रहैत।”

“दादी, अहींसँ एकटा गप्पक काज अछि।”

गप्पक काज भेल वैचारिक। काज तँ दुनियाँमे बहुत अछि, मुदा गप्पोक काजक तँ अपन महत्व अछिए। जहिना सभसँ हल्लुक गप्पक काज अछि तहिना सभसँ भारियो तँ अछिए। आन काज जकाँ नहि ने अछि जे कनी-मनी भारियो रहल आ कनी-मनी हल्लुको रहल। ई तँ सोल्होअना हल्लुकसँ भारी बनैए आ भारीसँ हल्लुक।

चाह पीलाक पछाइत जहिना सभक मन शान्त होइ छैन तहिना हिरणी दादीक मन सेहो शान्त रहबे करैन। बजली-

“बौआ, आब हम कोन जोकरक रहलौं जे तोहर काज सम्हारि देबह.!”

हिरणी दादीक विचार कोनो भाँजेपर ने चढ़ल जे दादी बिनु कहनौं की बुझि गेली। कम कि बेसी सभ मनुक्ख आगमी होइते छैथ। कियो बेसी रहला तँ दुनियाँकेँ बेसी देखलैन आ कियो कम रहला तँ कम देखलैन। भँजियबैत बजलौं-

“दादी, अहाँकेँ तँ हम जहिना सभ दिन मानलौं तहिना अखनो मानै छी, तखन अहाँ किए एना बजलौं.?”

बजैक क्रममे बाजि गेलौं, मुदा अपने आगमी मन विचार देलक जे भऽ सकैए जे भोरुका तामसक जलन नीक जकाँ नहि मेटाएल होइन। गप-सप्पकेँ महत्वहीन बुझि हिरणी दादी बजली- “बौआ, दिनक पहिल पहर, भोरक समय छी, काज करए जाएब। कोन काजे एलह हेन?”

अपन कोनो काज रहैत तखन ने से कहितिऐन, मुदा से तँ छल नहि। मन धकमकाए लगल जे की कहिऐन.! मुदा मनकेँ सक्कत करैत बजलौं-

"दादी, अहाँ बुढ़ भेलौं। आब सभसँ प्रेम-करुण भावसँ मिलि-जुलिकऽ रहब जीवन ले बेसी नीक हएत किने।"

हिरणी दादी बजली- "से की, बौआ?"

बजलौं- "दादी, जखन जाइ छेलौं टहलैले तखन रस्तेपर सँ सुनलौं, अहाँ गरैज-गरैज कऽ किछु केकरो कहै छेलिऐ। तँए जिज्ञासा भेल जे रातिमे ने ते किछु भेलैन अछि?"

हिरणी दादीक मनमे ठहकलैन। जहिना कोनो प्रश्नक उत्तर सभ विद्यार्थी अतीतमे तकै छैथ तहिना हिरणी दादी सेहो अप्पन जीवनक प्रश्नकेँ ताकिकऽ निकालैत बजली- "बौआ, बेस कहलह जे बुढ़ भेलौं। अपना तँ नहि बुझि पड़ैए जे बुढ़ भेलौं मुदा उमेर दिस जखन तकै छी तखन अस्सी-बिरासी बर्खक तँ भइये गेलौं।"

बजैत-बजैत दादी ठमैक गेली। उम्र मोन पड़ने थकमका गेली आकि अपना उमेरक गाममे एकोटा नहि देखने थकमकेली से तँ ओ जानैथ मुदा बजली-

"बौआ, पुतोहुपर बजै छेलौं हेन। हमहूँ ने एक दिन पुतोहु बनि अही गाम-समाजमे आएल रही।"

बजलौं- "हँ से तँ जहिना सभ अबैए तहिना अहूँ ने आएले रहल हएब।"

हिरणी दादीक मनमे जेना जुआनीक शक्ति जगलैन तहिना बजली-

"बौआ, बैशाख-जेठक रौद होउ आकि पूस-माघक जाड़, ने रौदकेँ रौद बुझै छेलौं आ ने जाड़केँ जाड़। परिवारक जहिया जे काज रहै छल, तेकरा पाछू पड़ि करैत एलौं, तँए ने परिवार चलैत आबि रहल अखनो जीवित अछि, नहि तँ कहिया ने मरि गेल रहैत।"

❑ **साभार: अलोपित, जगदीश प्रसाद मण्डल, 18 नवम्बर 2022**

“जोगिन्दर बौआ, की कहबह.! मनमे बहुत लीलसा छल जे समाजक मुँह नीक बनै, मुदा जेकरे मुँह बनबैले मुँहुआएल जाइए वएह अजेगर साँप जकाँ अपन आँखिक आकर्षणसँ तेना ने ढप-दे नीककेँ गिर जाइए जे पृथ्वीए निपत्ता भऽ जाइए।”

शिकारी औत, जाल बिछौत, दाना छीटत, लोभसँ ओइमे नहि पड़ब। ..यएह छी दुनियाँक खेल जे लोभसँ ओइमे पड़ब नहि मुदा पड़िकऽ फँसि गेल सभ, आ शिकारी जाल समेटिकऽ बाजारमे लेलक बेचि।

उनमुनाएले मने डेगा-डेगी रामलाल कक्काक घर लग पहुँच गेलौं। रामलाल काका पड़ोसिया छैथ। अखनो तँ अपना ऐठाम जीवित संस्कार अछिए जे कियो दरबज्जापर पाहुन (अनठिया) देखि लगमे पहुँच अप्पन समाजक रीति-बेवहारक पालन करिते छैथ। माने भेल जे दुनू पड़ोसीक बीच जँ कोनो मतान्तरो रहल तैयो आन समाजक नजैरमे हम एक समाज छी, नहि कि बेकती। ओहन तँ समाजे ने बेवहार बनौत। ओना, आइक परिवेश एहेन बनि गेल अछि जे सभ जनिते छी, पितो-पुत्रक बीचक सम्बन्धक की स्थिति अछि। एक कहैए तूँ हम्मर बाप नहि, दोसर कहै छैथ तूँ हमर बेटा नहि। जे सम्बन्ध कटने नइ कटाएत से कटि जाइए शब्दसँ..!

कनी फरिक्केसँ दरबज्जा दिस हुलकी मारि तकलौं तँ बुझि पड़ल जे रामलालो काका देखलैन आ अपनो नजैर हुनकापर पड़ल। अप्पन मन उनमुनाएले रहए जइसँ हजारोटा विचार मनमे उठिये रहल छल, तँए बकार बन्ने रहए। मुदा रामलालो काका देखिकऽ किछु बजला नहि। भरिसक मूर्ति जकाँ, माने पाथरक मूर्ति हुअ आकि माटिक मूर्ति, जहिना रूप-रंगसँ पारखी परेखि लइ छैथ जे ब्राह्माण्डक रूप भेल ‘ब्रह्ममय देह’, अण्ड माने देह। भरिसक तहिना ओ हमरो देखि

कऽ परेखि लेलैन आकि की, से तँ ओ जानैथ, मुदा मन अप्पन उड़ले छल, देखल रस्ता पैरकेँ छेलैहे, बिनु आदेशेक रामलाल काका ऐठाम पहुँचा देलक। जाबे अपना मुहसँ निकलए-निकलए जे 'गोड़ लगै छी काका', तइसँ पहिने रामलाल काका हँसि देलैन। हुनकर हँसीमे अप्पन विचार तर पड़ि गेल। की करितौं, लगमे जा कऽ बैसैत बजलौं- "काका, अहाँक देह सन जँ हमरो देह भऽ जाइत.!"

हँसैत रामलाल काका बजला- "हमरे सन किए जे हमरासँ चाकर-चौरस, सिलपट लोहा जकाँ नमगर-छड़गर देह तँ छहे, तखन?"

रामलाल कक्काक विचार कोनो भाँजेपर ने चढ़ल जे देहीक देह कहलैन आकि लेहिक देह कहलैन। किए तँ मन मानबक तीन दिशा अछिए। एकटा अछि दिनू-दिनू, दोसर अछि लिनू-दिनू आ तेसर अछि लिनू-लिनू। माने, एक भेल-दुनियाँकेँ देलिऐ-देबै, दोसर भेल- देबो केलिऐ आ मूड़क-मूड़ वा सुदिक संग मूड़ लेबो केलिऐ आ तेसर भेल- मूड़ो आ सूदो लेबे केलिऐ आ देलिऐ किछु ने। कर्जखौक जकाँ कर्जा लऽ कऽ खा-पचा लेलिऐ। बैसल-बैसल चिन्तक जकाँ मन हेरा गेल। मरल देह जकाँ चेतनहीन बैसल देह देखि रामलाल काका बजला-

"जोगिन्दर, नीन आबि रहल छह?"

एक तँ जखन मनुक्खक मन सोझ रहै छैन तखनो ओ टेँढ़ियाएल बात बजै छैथ आ जखन मन टेँढ़ियाएल रहतैन तखन केहेन बोल हेतैन। अधनिनामे जहिना छगाएल मन बजैए तहिना बजलौं-

"काका, नीन कहाँ अबैए। कनी झपसीमे झपकी आबि गेल छल, तँए अहाँकेँ बुझि पड़ल।"

रामलाल काका बजला- "भाँग-ताँग ने ते पीने छह?"

भाँग-ताँगक नाओं सुनिते मनमे ठहैक गेल जे रामलाल काका पुरना पन्ना उनटा रहला अछि। बजलौं- "काका, आब लोक हवाइ जहाजपर उड़ि जँ ताड़ीए-दारू आकि भाँगे-गाँजा पीअत, तखन चरस-कोकिण केकरा ले अछि। ई तँ ओकर पीछड़पन ने भेल, जैठाम वातावरणे मदसँ मदमस्त रहैए तैठाम भाँग-गाँजा तँ वौराहा फकीर आ कोयलाखानक करियाएल श्रमिकेक हिस्सामे ने रहल।"

अपन विचार अन्तो ने भेल छल कि बिच्चेमे रामलाल काका दू-तीन बेर

हफुएला, माने नीन अबैसँ पूर्व हाफी जेना होइए। मुदा बजला किछु ने। जहिना भुजंग गरुरकेँ अप्पन भुजंगप्रयात सुनबए लगलैन आ आँखिक पल खसा गरुरजी महराज सुनए लगला मुदा अप्पन जानक जोखिम देखि भुजंग फुसलबैत-फुसलबैत गरुरकेँ नीना देलकैन आ अपने अपन रास्ता पकैड़ ससरैत-ससरैत ससैर गेल। मुदा तेना रामलाल काकाकेँ नइ भेलैन। माने, भकुआएल नजरिये नहि, गम्भीर नजरिये रामलाल काका हमर बात सुनलैन। सुनि सुनिकऽ मन ओहिना मोहलैन जेना दूधसँ मक्खन बनैए। घृतवत होइत रामलाल काका बजला- “जोगिन्दर बौआ, की कहबह.! मनमे बहुत लीलसा छल जे समाजक मुँह नीक बनै, मुदा जेकरे मुँह बनबैले मुँहुआएल जाइए वएह अजेगर साँप जकाँ अपन आँखिक आकर्षणसँ तेना ने ढप-दे नीककेँ गिर जाइए जे पृथ्वीए निपत्ता भऽ जाइए।”

रामलाल कक्काक विचार कोनो भाँजेपर ने चढ़ल। किए तँ जहिना रामायण पढ़ला पछाइत कियो कहै छैथ- राम ‘राजकुमार’ भेला, तँ कियो कहै छैथ- राम ‘भगवान’ भेला आ कियो हुनका ‘जमाए’ बना गरियबै छैन, तँ कियो रावण वंशक संग लंकाकेँ जरौनिहार-मेटौनिहार सेहो कहै छैन। जहिना तिब्बतमे राजकुमार- ‘चेन पो’केँ धनक गति-विधिक भाँज नइ लगलैन, परशुरामकेँ राजपूत वंशक भाँज नहि लगलैन, माने भेल दुनू दुनूकेँ मेटबैले बेर-बेर प्रयास केलाह, तहिना रामलाल कक्काक विचार सुनि अपनो मनमे भेल। गेरुली मारि बजलौं- “तखन की हेतइ काका?”

हँसैत रामलाल काका बजला- “राम-रामक लूटि भइये रहल अछि, तोहूँ लूटि लाए। यएह भेल नब बनक नब फल।”

❑ **साभार: नब बनक नब फल, जगदीश प्रसाद मण्डल, 30 नवम्बर 2022**

Notes

....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....